

गोस्वामी तुलसीदास

विरचित

# रामचरितमानस



## बालकाण्ड

श्रीगणेशाय नमः

## श्रीरामचरितमानस प्रथम सोपान

## बालकाण्ड

श्लोक

वर्णानामर्थसंधानां रसानां छन्दसामपि ।  
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।  
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।  
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।  
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कबीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।  
सर्वश्रेयस्करिणीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा  
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।  
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां  
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्  
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।  
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा  
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

## सोरठा

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन ।  
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥

मूक होइ बाचाल पंगु चढइ गिरिबर गहन ।  
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।  
करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ ३ ॥

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।  
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥

बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।  
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥ ५ ॥

बंदउ गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥  
अमिय मूरिमय चूरन चारु । समन सकल भव रुज परिवारु ॥ १ ॥  
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥  
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किँ तिलक गुन गन बस करनी ॥२ ॥  
श्रीगुर पद नख मनि गन जोती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥  
दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग उर आवइ जासू ॥ ३ ॥  
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥  
सूझहिं राम चरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥४॥

## दोहरा

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।  
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ॥  
 तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनउँ राम चरित भव मोचन ॥ १ ॥  
 बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ॥  
 सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥ २ ॥  
 साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥  
 जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥ ३ ॥  
 मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ॥  
 राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥ ४ ॥  
 बिधि निषेधमय कलि मल हरनी । करम कथा रबिनंदनि बरनी ॥  
 हरि हर कथा बिराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥ ५ ॥  
 बटु बिस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ॥  
 सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥ ६ ॥  
 अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥ ७ ॥

### दोहरा

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।  
 लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥ २ ॥  
 मज्जन फल पेखिअ ततकाला । काक होहिं पिक बकठ मराला ॥  
 सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥ १ ॥  
 बालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी ॥  
 जलचर थलचर नभचर नाना । जे जइ चेतन जीव जहाना ॥ २ ॥  
 मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥  
 सो जानब सतसंग प्रभाऊ । लोकहुँ बेद न आन उपाऊ ॥ ३ ॥  
 बिनु सतसंग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥  
 सतसंगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥ ४ ॥  
 सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परस कुधात सुहाई ॥  
 बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥ ५ ॥

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी । कहत साधु महिमा सकुचानी ॥  
सो मो सन कहि जात न कैसें । साक बनिक मनि गुन गन जैसें ॥ ६ ॥

दोहरा

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।  
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥ ३(क) ॥

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।  
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ॥ ३(ख) ॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ । जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ ॥  
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें । उजरें हरष बिषाद बसेरें ॥ १ ॥  
हरि हर जस राकेस राहु से । पर अकाज भट सहसबाहु से ॥  
जे पर दोष लखहिं सहसाखी । पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ॥ २ ॥  
तेज कृसानु रोष महिषेसा । अघ अवगुन धन धनी धनेसा ॥  
उदय केत सम हित सबही के । कुंभकरन सम सोवत नीके ॥ ३ ॥  
पर अकाजु लागि तनु परिहरहीं । जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ॥  
बंदउँ खल जस शेष सरोषा । सहस बदन बरनइ पर दोषा ॥ ४ ॥  
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना । पर अघ सुनइ सहस दस काना ॥  
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥ ५ ॥  
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा । सहस नयन पर दोष निहारा ॥ ६ ॥

दोहरा

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।  
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ॥ ४ ॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा । तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥  
बायस पलिअहिं अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥ १ ॥

बंदउँ संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥  
 बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥ २ ॥  
 उपजहिं एक संग जग माहीं । जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥  
 सुधा सुरा सम साधू असाधू । जनक एक जग जलधि अगाधू ॥ ३ ॥  
 भल अनभल निज निज करतूती । लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥  
 सुधा सुधाकर सुरसरि साधू । गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू ॥ ४ ॥  
 गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥ ५ ॥

## दोहरा

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।  
 सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥ ५ ॥

खल अघ अगुन साधू गुन गाहा । उभय अपार उदधि अवगाहा ॥  
 तेहि तें कछु गुन दोष बखाने । संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ॥ १ ॥  
 भलेउ पोच सब बिधि उपजाए । गनि गुन दोष बेद बिलगाए ॥  
 कहहिं बेद इतिहास पुराना । बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना ॥ २ ॥  
 दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥  
 दानव देव ऊँच अरु नीचू । अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥ ३ ॥  
 माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा ॥  
 कासी मग सुरसरि क्रमनासा । मरु मारव महिदेव गवासा ॥ ४ ॥  
 सरग नरक अनुराग बिरागा । निगमागम गुन दोष बिभागा ॥ ५ ॥

## दोहरा

जइ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।  
 संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥ ६ ॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥  
 काल सुभाउ करम बरिआई । भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई ॥ १ ॥

सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ॥  
 खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥ २ ॥  
 लखि सुबेष जग बंचक जेऊ । बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ ॥  
 उधरहिं अंत न होइ निबाहू । कालनेमि जिमि रावन राहू ॥ ३ ॥  
 किएहुँ कुबेष साधु सनमानू । जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥  
 हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ॥ ४ ॥  
 गगन चढइ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संग्गा ॥  
 साधु असाधु सदन सुक सारीं । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ॥ ५ ॥  
 धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥  
 सोइ जल अनल अनिल संघाता । होइ जलद जग जीवन दाता ॥ ६ ॥

## दोहरा

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।  
 होहि कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥ ७(क) ॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।  
 ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥ ७(ख) ॥

जइ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।  
 बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥ ७(ग) ॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब ।  
 बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ॥ ७(घ) ॥

आकर चारि लाख चौरासी । जाति जीव जल थल नभ बासी ॥  
 सीय राममय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ १ ॥  
 जानि कृपाकर किंकर मोहू । सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू ॥  
 निज बुधि बल भरोस मोहि नाही । तातें बिनय करउँ सब पाही ॥ २ ॥  
 करन चहउँ रघुपति गुन गाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥  
 सूझ न एकउ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥ ३ ॥

मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी । चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी ॥  
 छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई । सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥ ४ ॥  
 जौ बालक कह तोतरि बाता । सुनिहिं मुदित मन पितु अरु माता ॥  
 हँसिहहि कूर कुटिल कुबिचारी । जे पर दूषन भूषनधारी ॥ ५ ॥  
 निज कवित केहि लाग न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ॥  
 जे पर भनिति सुनत हरषाही । ते बर पुरुष बहुत जग नाही ॥ ६ ॥  
 जग बहु नर सर सरि सम भाई । जे निज बाढि बढहिं जल पाई ॥  
 सज्जन सकृत सिंधु सम कोई । देखि पूर बिधु बाढइ जोई ॥ ७ ॥

### दोहरा

भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास ।  
 पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करहहिं उपहास ॥ ८ ॥

खल परिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥  
 हंसहि बक दादुर चातकही । हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥ १ ॥  
 कबित रसिक न राम पद नेहू । तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥  
 भाषा भनिति भोरि मति मोरी । हँसिबे जोग हँसैं नहिं खोरी ॥ २ ॥  
 प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी । तिन्हहि कथा सुनि लागहि फीकी ॥  
 हरि हर पद रति मति न कुतरकी । तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुवर की ॥३॥  
 राम भगति भूषित जियँ जानी । सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥  
 कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू । सकल कला सब बिद्या हीनू ॥ ४ ॥  
 आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥  
 भाव भेद रस भेद अपारा । कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥ ५ ॥  
 कबित बिबेक एक नहिं मोरें । सत्य कहँ लिखि कागद कोरे ॥ ६ ॥

### दोहरा

भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक ।  
 सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिवेक ॥ ९ ॥



एहि महुँ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥  
 मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥ १ ॥  
 भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ । राम नाम बिनु सोह न सोऊ ॥  
 बिधुबदनी सब भाँति सँवारी । सोन न बसन बिना बर नारी ॥ २ ॥  
 सब गुन रहित कुकबि कृत बानी । राम नाम जस अंकित जानी ॥  
 सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही । मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥ ३ ॥  
 जदपि कबित रस एकठ नाही । राम प्रताप प्रकट एहि माहीं ॥  
 सोइ भरोस मोरें मन आवा । केहिं न सुसंग बडप्पनु पावा ॥ ४ ॥  
 धूमठ तजइ सहज करुआई । अगरु प्रसंग सुगंध बसाई ॥  
 भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । राम कथा जग मंगल करनी ॥ ५ ॥

## छंद

मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ॥  
 गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥  
 प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ॥  
 भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

## दोहरा

प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग ।  
 दारु बिचारु कि करइ कोठ बंदिअ मलय प्रसंग ॥ १०(क) ॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।  
 गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १०(ख) ॥

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ॥  
 नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥ १ ॥  
 तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ॥  
 भगति हेतु बिधि भवन बिहाई । सुमिरत सारद आवति धाई ॥ २ ॥

राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ । सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ ॥  
 कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी । गावहिं हरि जस कलि मल हारी ॥ ३ ॥  
 कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ॥  
 हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ॥ ४ ॥  
 जौं बरषइ बर बारि बिचारू । होहिं कबित मुकुतामनि चारू ॥ ५ ॥

### दोहरा

जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग ।  
 पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥ ११ ॥

जे जनमे कलिकाल कराला । करतब बायस बेष मराला ॥  
 चलत कुपंथ बेद मग छाँडे । कपट कलेवर कलि मल भाँडे ॥ १ ॥  
 बंचक भगत कहाइ राम के । किंकर कंचन कोह काम के ॥  
 तिन्ह महुँ प्रथम रेख जग मोरी । धींग धरमध्वज धंधक धोरी ॥ २ ॥  
 जौं अपने अवगुन सब कहऊँ । बाढइ कथा पार नहिं लहऊँ ॥  
 ताते में अति अल्प बखाने । थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥ ३ ॥  
 समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी । कोठ न कथा सुनि देइहि खोरी ॥  
 एतेहु पर करिहहिं जे असंका । मोहि ते अधिक ते जइ मति रंका ॥ ४ ॥  
 कबि न होऊँ नहिं चतुर कहावऊँ । मति अनुरूप राम गुन गावऊँ ॥  
 कहँ रघुपति के चरित अपारा । कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥ ५ ॥  
 जेहिं मारुत गिरि मेरु उडाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥  
 समुझत अमित राम प्रभुताई । करत कथा मन अति कदराई ॥ ६ ॥

### दोहरा

सारद सेस महेस बिधि आगम निगम पुरान ।  
 नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान ॥ १२ ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । तदपि कहें बिनु रहा न कोई ॥  
 तहाँ बेद अस कारन राखा । भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥ १ ॥

एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानंद पर धामा ॥  
 ब्यापक बिस्वरूप भगवाना । तेहिं धरि देह चरित कृत नाना ॥ २ ॥  
 सो केवल भगतन हित लागी । परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥  
 जेहि जन पर ममता अति छोहू । जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥३ ॥  
 गई बहोर गरीब नेवाजू । सरल सबल साहिब रघुराजू ॥  
 बुध बरनहिं हरि जस अस जानी । करहि पुनीत सुफल निज बानी ॥४ ॥  
 तेहिं बल में रघुपति गुन गाथा । कहिहँ नाइ राम पद माथा ॥  
 मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई । तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई ॥५ ॥

### दोहरा

अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं ।  
 चढि पिपीलिकठ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं ॥ १३ ॥

एहि प्रकार बल मनहि देखाई । करिहँ रघुपति कथा सुहाई ॥  
 ब्यास आदि कबि पुंगव नाना । जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥ १ ॥  
 चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे । पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥  
 कलि के कबिन्ह करउँ परनामा । जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥ २ ॥  
 जे प्राकृत कबि परम सयाने । भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने ॥  
 भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें । प्रनवउँ सबहिं कपट सब त्यागें ॥ ३ ॥  
 होहु प्रसन्न देहु बरदानू । साधु समाज भनिति सनमानू ॥  
 जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । सो श्रम बादि बाल कबि करहीं ॥ ४ ॥  
 कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥  
 राम सुकीरति भनिति भदेसा । असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥ ५ ॥  
 तुम्हरी कृपा सुलभ सोठ मोरे । सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥ ६ ॥

### दोहरा

सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ।  
 सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥ १४(क) ॥

सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर ।  
करहु कृपा हरि जस कहँ पुनि पुनि करँ निहोर ॥ १४(ख) ॥

कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ।  
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल ॥ १४(ग) ॥

### सोरठा

बंदँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ ।  
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित ॥ १४(घ) ॥

बंदँ चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस ।  
जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु ॥ १४(ङ) ॥

बंदँ बिधि पद रेनु भव सागर जेहि कीन्ह जहँ ।  
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी ॥ १४(च) ॥

### दोहरा

बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहँ कर जोरि ।  
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥ १४(छ) ॥

पुनि बंदँ सारद सुरसरिता । जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥  
मज्जन पान पाप हर एका । कहत सुनत एक हर अबिबेका ॥ १ ॥  
गुर पितु मातु महेस भवानी । प्रनवँ दीनबंधु दिन दानी ॥  
सेवक स्वामि सखा सिय पी के । हित निरुपधि सब बिधि तुलसीके ॥२॥  
कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा । साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा ॥  
अनमिल आखर अरथ न जापू । प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू ॥ ३ ॥  
सो उमेस मोहि पर अनुकूला । करिहिं कथा मुद मंगल मूला ॥  
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ । बरनँ रामचरित चित चाऊ ॥ ४ ॥  
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती । ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती ॥  
जे एहि कथहि सनेह समेता । कहिहिं सुनिहिं समुझि सचेता ॥ ५ ॥

होइहहिं राम चरन अनुरागी । कलि मल रहित सुमंगल भागी ॥ ६ ॥

### दोहरा

सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाठ ।  
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥ १५ ॥

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ॥  
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥ १ ॥  
सिय निंदक अघ ओघ नसाए । लोक बिसोक बनाइ बसाए ॥  
बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । कीरति जासु सकल जग माची ॥ २ ॥  
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू । बिस्व सुखद खल कमल तुसारू ॥  
दसरथ राउ सहित सब रानी । सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥ ३ ॥  
करउँ प्रनाम करम मन बानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥  
जिन्हहि बिरचि बड़ भयउ बिधाता । महिमा अवधि राम पितु माता ॥४ ॥

### सोरठा

बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।  
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ॥ १६ ॥

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू । जाहि राम पद गूढ सनेहू ॥  
जोग भोग महुँ राखेउ गोई । राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥ १ ॥  
प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना । जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ॥  
राम चरन पंकज मन जासू । लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥ २ ॥  
बंदउँ लछिमन पद जलजाता । सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥  
रघुपति कीरति बिमल पताका । दंड समान भयउ जस जाका ॥ ३ ॥  
शेष सहस्रसीस जग कारन । जो अवतरेउ भूमि भय टारन ॥  
सदा सो सानुकूल रह मो पर । कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥ ४ ॥  
रिपुसूदन पद कमल नमामी । सूर सुसील भरत अनुगामी ॥  
महावीर बिनवउँ हनुमाना । राम जासु जस आप बखाना ॥ ५ ॥

## सोरठा

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानधन ।  
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ १७ ॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा । अंगदादि जे कीस समाजा ॥  
बंदउँ सब के चरन सुहाए । अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥ १ ॥  
रघुपति चरन उपासक जेते । खग मृग सुर नर असुर समेते ॥  
बंदउँ पद सरोज सब केरे । जे बिनु काम राम के चेरे ॥ २ ॥  
सुक सनकादि भगत मुनि नारद । जे मुनिबर बिग्यान बिसारद ॥  
प्रनवउँ सबहिं धरनि धरि सीसा । करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥ ३ ॥  
जनकसुता जग जननि जानकी । अतिसय प्रिय करुना निधान की ॥  
ताके जुग पद कमल मनावउँ । जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ ॥ ४ ॥  
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक । चरन कमल बंदउँ सब लायक ॥  
राजिवनयन धरें धनु सायक । भगत बिपति भंजन सुख दायक ॥ ५ ॥

## दोहरा

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।  
बदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ १८ ॥

बंदउँ नाम राम रघुवर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥  
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो । अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥ १ ॥  
महामंत्र जोड़ जपत महेसू । कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥  
महिमा जासु जान गनराठ । प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥ २ ॥  
जान आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥  
सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेई पिय संग भवानी ॥ ३ ॥  
हरषे हेतु हेरि हर ही को । किय भूषन तिय भूषन ती को ॥  
नाम प्रभाऊ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥ ४ ॥

## दोहरा

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ॥  
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥ १९ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥  
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥ १ ॥  
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके । राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥  
बरनत बरन प्रीति बिलगाती । ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥ २ ॥  
नर नारायन सरिस सुभ्राता । जग पालक बिसेषि जन त्राता ॥  
भगति सुतिय कल करन बिभूषन । जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन ॥३॥  
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥  
जन मन मंजु कंज मधुकर से । जीह जसोमति हरि हलधर से ॥ ४ ॥

### दोहरा

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।  
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥ २० ॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥  
नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साथी ॥ १ ॥  
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेद समुझिहहिं साथू ॥  
देखिअहिं रूप नाम आधीना । रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥ २ ॥  
रूप बिसेष नाम बिनु जानें । करतल गत न परहिं पहिचानें ॥  
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें । आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥ ३ ॥  
नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परति बखानी ॥  
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥ ४ ॥

### दोहरा

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार ।  
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥ २१ ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥  
 ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा ॥ १ ॥  
 जाना चहहिं गूढ गति जेऊ । नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥  
 साधक नाम जपहिं लय लाएँ । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥ २ ॥  
 जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥  
 राम भगत जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥ ३ ॥  
 चहू चतुर कहूँ नाम अधारा । ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥  
 चहूँ जुग चहूँ श्रुति ना प्रभाऊ । कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥ ४ ॥

### दोहरा

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।  
 नाम सुप्रेम पियूष हृद तिन्हहूँ किए मन मीन ॥ २२ ॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥  
 मोरें मत बड़ नामु दुहू तें । किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥ १ ॥  
 प्रोढि सुजन जनि जानहिं जन की । कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥  
 एकु दारुगत देखिअ एकू । पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥ २ ॥  
 उभय अगम जुग सुगम नाम तें । कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥  
 ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी । सत चेतन धन आनंद रासी ॥ ३ ॥  
 अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी । सकल जीव जग दीन दुखारी ॥  
 नाम निरूपन नाम जतन तें । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥ ४ ॥

### दोहरा

निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार ।  
 कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥ २३ ॥

राम भगत हित नर तनु धारी । सहि संकट किए साधु सुखारी ॥  
 नामु सप्रेम जपत अनयासा । भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥ १ ॥



राम एक तापस तिय तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥  
 रिषि हित राम सुकेतुसुता की । सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी ॥ २ ॥  
 सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ॥  
 भंजेठ राम आपु भव चापू । भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥ ३ ॥  
 दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन । जन मन अमित नाम किए पावन ॥ ।  
 निसिचर निकर दले रघुनंदन । नामु सकल कलि कलुष निकंदन ॥ ४ ॥

### दोहरा

सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।  
 नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥ २४ ॥

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ । राखे सरन जान सबु कोऊ ॥  
 नाम गरीब अनेक नेवाजे । लोक बेद बर बिरिद बिराजे ॥ १ ॥  
 राम भालु कपि कटकु बटोरा । सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ॥  
 नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं । करहु बिचारु सुजन मन माहीं ॥ २ ॥  
 राम सकुल रन रावनु मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥  
 राजा रामु अवध रजधानी । गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥ ३ ॥  
 सेवक सुमिरत नामु सप्रीती । बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती ॥  
 फिरत सनेहँ मगन सुख अपनेँ । नाम प्रसाद सोच नहिँ सपनेँ ॥ ४ ॥

### दोहरा

ब्रह्म राम तेँ नामु बड़ बर दायक बर दानि ।  
 रामचरित सत कोटि महुँ लिय महेस जियँ जानि ॥ २५ ॥

### मासपारायण, पहला विश्राम

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी ॥  
 सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥ १ ॥  
 नारद जानेठ नाम प्रतापू । जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥  
 नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥ २ ॥

ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ । पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥  
 सुमिरि पवनसुत पावन नाम् । अपने बस करि राखे राम् ॥ ३ ॥  
 अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ । भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥  
 कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई । रामु न सकहिं नाम गुन गाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।  
 जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥ २६ ॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका । भए नाम जपि जीव बिसोका ॥  
 बेद पुरान संत मत एहू । सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥ १ ॥  
 ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें । द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥  
 कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिधि जन जन मीना ॥ २ ॥  
 नाम कामतरु काल कराला । सुमिरत समन सकल जग जाला ॥  
 राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥ ३ ॥  
 नहिं कलि करम न भगति बिबेकू । राम नाम अवलंबन एकू ॥  
 कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥ ४ ॥

## दोहरा

राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।  
 जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥ २७ ॥

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥  
 सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ॥ १ ॥  
 मोरि सुधारिहि सो सब भाँती । जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥  
 राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो । निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥ २ ॥  
 लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती । बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥  
 गनी गरीब ग्रामनर नागर । पंडित मूढ मलीन उजागर ॥ ३ ॥

सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी । नृपहि सराहत सब नर नारी ॥  
 साधु सुजान सुसील नृपाला । ईस अंस भव परम कृपाला ॥ ४ ॥  
 सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी । भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥  
 यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥ ५ ॥  
 रीझत राम सनेह निसोतें । को जग मंद मलिनमति मोतें ॥ ६ ॥

## दोहरा

सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु ।  
 उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ॥ २८(क) ॥

हौहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।  
 साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥ २८(ख) ॥

अति बडि मोरि ढिठाई खोरी । सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी ॥  
 समुझि सहम मोहि अपडर अपनैं । सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनैं ॥१॥  
 सुनि अवलोकि सुचित चख चाही । भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥  
 कहत नसाइ होइ हियँ नीकी । रीझत राम जानि जन जी की ॥ २ ॥  
 रहति न प्रभु चित चूक किए की । करत सुरति सय बार हिए की ॥  
 जेहिं अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली । फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली ॥३॥  
 सोइ करतूति बिभीषन केरी । सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी ॥  
 ते भरतहि भेंटत सनमाने । राजसभाँ रघुबीर बखाने ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ॥  
 तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान ॥ २९(क) ॥

राम निकाई रावरी है सबही को नीक ।  
 जाँ यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥ २९(ख) ॥

एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ ।

बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ ॥ २९(ग) ॥

जागबलिक जो कथा सुहाई । भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई ॥  
 कहिहउँ सोइ संबाद बखानी । सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी ॥ १ ॥  
 संभु कीन्ह यह चरित सुहावा । बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा ॥  
 सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा । राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥ २ ॥  
 तेहि सन जागबलिक पुनि पावा । तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥  
 ते श्रोता बकता समसीला । सर्वदरसी जानहिं हरिलीला ॥ ३ ॥  
 जानहिं तीनि काल निज ग्याना । करतल गत आमलक समाना ॥  
 औरउ जे हरिभगत सुजाना । कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना ॥ ४ ॥

### दोहरा

मै पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत ।  
 समुझी नहि तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ॥ ३०(क) ॥

श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ ।  
 किमि समुझौं मै जीव जइ कलि मल ग्रसित बिमूढ ॥ ३०(ख)

तदपि कही गुर बारहिं बारा । समुझि परी कछु मति अनुसार ॥  
 भाषाबद्ध करबि मैं सोई । मोरें मन प्रबोध जेहिं होई ॥ १ ॥  
 जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें । तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें ॥  
 निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥ २ ॥  
 बुध बिश्राम सकल जन रंजनि । रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ॥  
 रामकथा कलि पंनग भरनी । पुनि बिबेक पावक कहूँ अरनी ॥ ३ ॥  
 रामकथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥  
 सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि । भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥ ४ ॥  
 असुर सेन सम नरक निकंदिनि । साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि ॥  
 संत समाज पयोधि रमा सी । बिस्व भार भर अचल छमा सी ॥ ५ ॥

जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी । जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥  
 रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥ ६ ॥  
 सिवप्रय मेकल सैल सुता सी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥  
 सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । रघुबर भगति प्रेम परमिति सी ॥ ७ ॥

## दोहरा

राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।  
 तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥ ३१ ॥

राम चरित चिंतामनि चारु । संत सुमति तिय सुभग सिंगारु ॥  
 जग मंगल गुन ग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥ १ ॥  
 सदगुर ग्यान बिराग जोग के । बिबुध बैद भव भीम रोग के ॥  
 जननि जनक सिय राम प्रेम के । बीज सकल ब्रत धरम नेम के ॥ २ ॥  
 समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥  
 सचिव सुभट भूपति बिचार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥ ३ ॥  
 काम कोह कलिमल करिगन के । केहरि सावक जन मन बन के ॥  
 अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद घन दारिद दवारि के ॥ ४ ॥  
 मंत्र महामनि बिषय ब्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥  
 हरन मोह तम दिनकर कर से । सेवक सालि पाल जलधर से ॥ ५ ॥  
 अभिमत दानि देवतरु बर से । सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥  
 सुकबि सरद नभ मन उडगन से । रामभगत जन जीवन धन से ॥ ६ ॥  
 सकल सुकृत फल भूरि भोग से । जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥  
 सेवक मन मानस मराल से । पावक गंग तरंग माल से ॥ ७ ॥

## दोहरा

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।  
 दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड ॥ ३२(क) ॥

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ।

सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु ॥ ३२(ख) ॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी । जेहि बिधि संकर कहा बखानी ॥  
 सो सब हेतु कहब मैं गाई । कथाप्रबंध बिचित्र बनाई ॥ १ ॥  
 जेहि यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आचरजु करैं सुनि सोई ॥  
 कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥२ ॥  
 रामकथा कै मिति जग नाही । असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥  
 नाना भाँति राम अवतारा । रामायन सत कोटि अपारा ॥ ३ ॥  
 कल्पभेद हरिचरित सुहाए । भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥  
 करिअ न संसय अस उर आनी । सुनिअ कथा सारद रति मानी ॥ ४ ॥

### दोहरा

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार ।  
 सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह के बिमल बिचार ॥ ३३ ॥

एहि बिधि सब संसय करि दूरी । सिर धरि गुर पद पंकज धूरी ॥  
 पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी । करत कथा जेहिं लाग न खोरी ॥ १ ॥  
 सादर सिवहि नाइ अब माथा । बरनउँ बिसद राम गुन गाथा ॥  
 संबत सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरि पद धरि सीसा ॥ २ ॥  
 नौमी भौम बार मधु मासा । अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥  
 जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं । तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं ॥३ ॥  
 असुर नाग खग नर मुनि देवा । आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥  
 जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं राम कल कीरति गाना ॥ ४ ॥

### दोहरा

मज्जहि सज्जन बृंद बहु पावन सरजू नीर ।  
 जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर ॥ ३४ ॥

दरस परस मज्जन अरु पाना । हरइ पाप कह बेद पुराना ॥  
 नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहि न सकइ सारद बिमलमति ॥ १ ॥

राम धामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त बिदित अति पावनि ॥  
 चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजे तनु नहि संसारा ॥ २ ॥  
 सब बिधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी ॥  
 बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा । सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥ ३ ॥  
 रामचरितमानस एहि नामा । सुनत श्रवन पाइअ विश्रामा ॥  
 मन करि विषय अनल बन जरई । होइ सुखी जौ एहिं सर परई ॥ ४ ॥  
 रामचरितमानस मुनि भावन । बिरचेउ संभु सुहावन पावन ॥  
 त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन । कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥५ ॥  
 रचि महेस निज मानस राखा । पाइ सुसमठ सिवा सन भाषा ॥  
 तातें रामचरितमानस बर । धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर ॥ ६ ॥  
 कहँ कथा सोइ सुखद सुहाई । सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥ ७ ॥

## दोहरा

जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु ।  
 अब सोइ कहँ प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु ॥ ३५ ॥

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी । रामचरितमानस कबि तुलसी ॥  
 करइ मनोहर मति अनुहारी । सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥ १ ॥  
 सुमति भूमि थल हृदय अगाधू । बेद पुरान उदधि घन साधू ॥  
 बरषहिं राम सुजस बर बारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥ २ ॥  
 लीला सगुन जो कहहिं बखानी । सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ॥  
 प्रेम भगति जो बरनि न जाई । सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥ ३ ॥  
 सो जल सुकृत सालि हित होई । राम भगत जन जीवन सोई ॥  
 मेधा महि गत सो जल पावन । सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन ॥४ ॥  
 भरेउ सुमानस सुथल थिराना । सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥ ५ ॥

## दोहरा

सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि ।  
 तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥ ३६ ॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना । ग्यान नयन निरखत मन माना ॥  
 रघुपति महिमा अगुन अबाधा । बरनब सोइ बर बारि अगाधा ॥ १ ॥  
 राम सीय जस सलिल सुधासम । उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥  
 पुरइनि सघन चारु चौपाई । जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई ॥ २ ॥  
 छंद सोरठा सुंदर दोहा । सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥  
 अरथ अनूप सुमाव सुभासा । सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥ ३ ॥  
 सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान बिराग बिचार मराला ॥  
 धुनि अवरेब कबित गुन जाती । मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥ ४ ॥  
 अरथ धरम कामादिक चारी । कहब ग्यान बिग्यान बिचारी ॥  
 नव रस जप तप जोग बिरागा । ते सब जलचर चारु तड़ागा ॥ ५ ॥  
 सुकृती साधु नाम गुन गाना । ते बिचित्र जल बिहग समाना ॥  
 संतसभा चहुँ दिसि अवर्राई । श्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥ ६ ॥  
 भगति निरूपन बिबिध बिधाना । छमा दया दम लता बिताना ॥  
 सम जम नियम फूल फल ग्याना । हरि पत रति रस बेद बखाना ॥७ ॥  
 औरउ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहुबरन बिहंगा ॥ ८ ॥

### दोहरा

पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु ।  
 माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ ३७ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे । तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥  
 सदा सुनहिं सादर नर नारी । तेइ सुरबर मानस अधिकारी ॥ १ ॥  
 अति खल जे बिषई बग कागा । एहिं सर निकट न जाहिं अभागा ॥  
 संबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न बिषय कथा रस नाना ॥ २ ॥  
 तेहि कारन आवत हियँ हारे । कामी काक बलाक बिचारे ॥  
 आवत एहिं सर अति कठिनाई । राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥ ३ ॥  
 कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला ॥  
 गृह कारज नाना जंजाला । ते अति दुर्गम सैल बिसाला ॥ ४ ॥



बन बहु बिषम मोह मद माना । नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥ ५ ॥

### दोहरा

जे श्रद्धा संबल रहित नहि संतन्ह कर साथ ।  
तिन्ह कहूँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ ॥ ३८ ॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई । जातहिं नींद जुडाई होई ॥  
जड़ता जाइ बिषम उर लागा । गएहुँ न मज्जन पाव अभागा ॥ १ ॥  
करि न जाइ सर मज्जन पाना । फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥  
जौं बहोरि कोठ पूछन आवा । सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥ २ ॥  
सकल बिघ्न ब्यापहि नहिं तेही । राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही ॥  
सोइ सादर सर मज्जनु करई । महा घोर त्रयताप न जरई ॥ ३ ॥  
ते नर यह सर तजहिं न काऊ । जिन्ह के राम चरन भल भाऊ ॥  
जो नहाइ चह एहिं सर भाई । सो सतसंग करउ मन लाई ॥ ४ ॥  
अस मानस मानस चख चाही । भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही ॥  
भयउ हृदयँ आनंद उछाहू । उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू ॥ ५ ॥  
चली सुभग कबिता सरिता सो । राम बिमल जस जल भरिता सो ॥  
सरजू नाम सुमंगल मूला । लोक बेद मत मंजुल कूला ॥ ६ ॥  
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि । कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि ॥ ७ ॥

### दोहरा

श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल ।  
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगति सुरसरितहि जाई । मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥  
सानुज राम समर जसु पावन । मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥ १ ॥  
जुग बिच भगति देवधुनि धारा । सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥  
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी । राम सरूप सिंधु समुहानी ॥ २ ॥

मानस मूल मिली सुरसरिही । सुनत सुजन मन पावन करिही ॥  
 बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरि तीर तीर बन बागा ॥ ३ ॥  
 उमा महेस बिबाह बराती । ते जलचर अगनित बहुभाँती ॥  
 रघुबर जनम अनंद बधाई । भवँर तरंग मनोहरताई ॥ ४ ॥

## दोहरा

बालचरित चहु बंधु के बनज बिपुल बहुरंग ।  
 नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारिबिहंग ॥ ४० ॥

सीय स्वयंबर कथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥  
 नदी नाव पटु प्रस्न अनेका । केवट कुसल उतर सबिबेका ॥ १ ॥  
 सुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिक समाज सोह सरि सोई ॥  
 घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥ २ ॥  
 सानुज राम बिबाह उछाहू । सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥  
 कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं । ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥ ३ ॥  
 राम तिलक हित मंगल साजा । परब जोग जनु जुरे समाजा ॥  
 काई कुमति केकई केरी । परी जासु फल बिपति घनेरी ॥ ४ ॥

## दोहरा

समन अमित उतपात सब भरतचरित जपजाग ।  
 कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग ॥ ४१ ॥

कीरति सरित छहँ रितु रूरी । समय सुहावनि पावनि भूरी ॥  
 हिम हिमसैलसुता सिव व्याहू । सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥ १ ॥  
 बरनब राम बिबाह समाजू । सो मुद मंगलमय रितुराजू ॥  
 ग्रीषम दुसह राम बनगवन् । पंथकथा खर आतप पवन् ॥ २ ॥  
 बरषा घोर निसाचर रारी । सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥  
 राम राज सुख बिनय बड़ाई । बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥ ३ ॥

सती सिरोमनि सिय गुनगाथा । सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥  
भरत सुभाउ सुसीतलताई । सदा एकरस बरनि न जाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास ।  
भायप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुबास ॥ ४२ ॥

आरति बिनय दीनता मोरी । लघुता ललित सुबारि न थोरी ॥  
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी । आस पिआस मनोमल हारी ॥ १ ॥  
राम सुप्रेमहि पोषत पानी । हरत सकल कलि कलुष गलानौ ॥  
भव श्रम सोषक तोषक तोषा । समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥ २ ॥  
काम कोह मद मोह नसावन । बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन ॥  
सादर मज्जन पान किए तैं । मिटहिं पाप परिताप हिए तैं ॥ ३ ॥  
जिन्ह एहि बारि न मानस धोए । ते कायर कलिकाल बिगोए ॥  
तृषित निरखि रबि कर भव बारी । फिरिहहि मृग जिमि जीव दुखारी ॥४॥

## दोहरा

मति अनुहारि सुबारि गुन गनि मन अन्हवाइ ।  
सुमिरि भवानी संकरहि कह कबि कथा सुहाइ ॥ ४३(क) ॥

अब रघुपति पद पंकरुह हियँ धरि पाइ प्रसाद ।  
कहँ जुगल मुनिबर्ज कर मिलन सुभग संबाद ॥ ४३(ख) ॥

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा । तिन्हहि राम पद अति अनुरागा ॥  
तापस सम दम दया निधाना । परमारथ पथ परम सुजाना ॥ १ ॥  
माघ मकरगत रबि जब होई । तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥  
देव दनुज किंनर नर श्रेणी । सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी ॥ २ ॥  
पूजहि माधव पद जलजाता । परसि अखय बटु हरषहिं गाता ॥  
भरद्वाज आश्रम अति पावन । परम रम्य मुनिबर मन भावन ॥ ३ ॥

तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा । जाहिं जे मज्जन तीरथराजा ॥  
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । कहहिं परसपर हरि गुन गाहा ॥ ४ ॥

दोहरा

ब्रह्म निरूपम धरम बिधि बरनहिं तत्त्व बिभाग ।  
कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग ॥ ४४ ॥

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं । पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं ॥  
प्रति संबत अति होइ अनंदा । मकर मज्जि गवनहिं मुनिबुंदा ॥ १ ॥  
एक बार भरि मकर नहाए । सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए ॥  
जगबालिक मुनि परम बिबेकी । भरव्दाज राखे पद टेकी ॥ २ ॥  
सादर चरन सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे ॥  
करि पूजा मुनि सुजस बखानी । बोले अति पुनीत मृदु बानी ॥ ३ ॥  
नाथ एक संसठ बड़ मोरें । करगत बेदतत्व सबु तोरें ॥  
कहत सो मोहि लागत भय लाजा । जौ न कहँ बड़ होइ अकाजा ॥ ४ ॥

दोहरा

संत कहहि असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव ।  
होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन किँँ दुराव ॥ ४५ ॥

अस बिचारि प्रगटँ निज मोहू । हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥  
रास नाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद गावा ॥ १ ॥  
संतत जपत संभु अबिनासी । सिव भगवान ग्यान गुन रासी ॥  
आकर चारि जीव जग अहहीं । कासीं मरत परम पद लहहीं ॥ २ ॥  
सोपि राम महिमा मुनिराया । सिव उपदेसु करत करि दाया ॥  
रामु कवन प्रभु पूछँ तोही । कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही ॥ ३ ॥  
एक राम अवधेस कुमारा । तिन्ह कर चरित बिदित संसारा ॥  
नारि बिरहँ दुखु लहेठ अपारा । भयहु रोषु रन रावनु मारा ॥ ४ ॥

दोहरा

प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ।  
सत्यधाम सर्वग्य तुम्ह कहहु बिबेकु बिचारि ॥ ४६ ॥

जैसे मिटै मोर भ्रम भारी । कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी ॥  
जागबलिक बोले मुसुकाई । तुम्हहि बिदित रघुपति प्रभुताई ॥ १ ॥  
राममगत तुम्ह मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारी में जानी ॥  
चाहहु सुनै राम गुन गूढा । कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढा ॥ २ ॥  
तात सुनहु सादर मनु लाई । कहउँ राम कै कथा सुहाई ॥  
महामोहु महिषेसु बिसाला । रामकथा कालिका कराला ॥ ३ ॥  
रामकथा ससि किरन समाना । संत चकोर करहिं जेहि पाना ॥  
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी । महादेव तब कहा बखानी ॥ ४ ॥

#### दोहरा

कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद ।  
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद ॥ ४७ ॥

एक बार त्रेता जुग माहीं । संभु गए कुंभज रिषि पाहीं ॥  
संग सती जगजननि भवानी । पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी ॥ १ ॥  
रामकथा मुनीबर्ज बखानी । सुनी महेस परम सुखु मानी ॥  
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई । कही संभु अधिकारी पाई ॥ २ ॥  
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा । कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥  
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी । चले भवन सँग दच्छकुमारी ॥ ३ ॥  
तेहि अवसर भंजन महिभारा । हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा ॥  
पिता बचन तजि राजु उदासी । दंडक बन बिचरत अबिनासी ॥ ४ ॥

#### दोहरा

हृदयँ बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होइ ।  
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ ॥ ४८(क) ॥

#### सोरठा

संकर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सोइ ॥  
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥ ४८(ख) ॥

रावन मरन मनुज कर जाचा । प्रभु बिधि बचनु कीन्ह चह साचा ॥  
जौं नहिं जाऊँ रहइ पछितावा । करत बिचारु न बनत बनावा ॥ १ ॥  
एहि बिधि भए सोचबस ईसा । तेहि समय जाइ दससीसा ॥  
लीन्ह नीच मारीचहि संगी । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥ २ ॥  
करि छलु मूढ हरी बैदेही । प्रभु प्रभाउ तस बिदित न तेही ॥  
मृग बधि बन्धु सहित हरि आए । आश्रमु देखि नयन जल छाए ॥ ३ ॥  
बिरह बिकल नर इव रघुराई । खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई ॥  
कबहूँ जोग बियोग न जाकें । देखा प्रगट बिरह दुख ताकें ॥ ४ ॥

### दोहरा

अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान ।  
जे मतिमंद बिमोह बस हृदयँ धरहिं कछु आन ॥ ४९ ॥

संभु समय तेहि रामहि देखा । उपजा हियँ अति हरपु बिसेषा ॥  
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी । कुसमय जानिन कीन्हि चिन्हारी ॥ १ ॥  
जय सच्चिदानंद जग पावन । अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥  
चले जात सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥ २ ॥  
सतीं सो दसा संभु कै देखी । उर उपजा संदेहु बिसेषी ॥  
संकरु जगतबंधु जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥ ३ ॥  
तिन्ह नृपसुतहि नह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधमा ॥  
भए मगन छबि तासु बिलोकी । अजहूँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥ ४ ॥

### दोहरा

ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।  
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद ॥ ५० ॥

बिष्णु जो सुर हित नरतनु धारी । सोउ सर्वग्य जथा त्रिपुरारी ॥  
 खोजइ सो कि अग्य इव नारी । ग्यानधाम श्रीपति असुरारी ॥ १ ॥  
 संभुगिरा पुनि मृषा न होई । सिव सर्वग्य जान सबु कोई ॥  
 अस संसय मन भयउ अपारा । होई न हृदयँ प्रबोध प्रचारा ॥ २ ॥  
 जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । हर अंतरजामी सब जानी ॥  
 सुनहि सती तव नारि सुभाऊ । संसय अस न धरिअ उर काऊ ॥ ३ ॥  
 जासु कथा कुभंज रिषि गाई । भगति जासु में मुनिहि सुनाई ॥  
 सोउ मम इष्टदेव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥ ४ ॥

## छंद

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ।  
 कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥  
 सोइ रामु व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।  
 अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनि ॥

## सोरठा

लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिवँ बार बहु ।  
 बोले बिहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियँ ॥ ५१ ॥

जाँ तुम्हरें मन अति संदेहू । तौ किन जाइ परीछा लेहू ॥  
 तब लागि बैठ अहँ बटछाहिं । जब लागि तुम्ह ऐहहु मोहि पाही ॥ १ ॥  
 जैसें जाइ मोह भ्रम भारी । करेहु सो जतनु बिबेक बिचारी ॥  
 चलीं सती सिव आयसु पाई । करहिं बिचारु करों का भाई ॥ २ ॥  
 इहाँ संभु अस मन अनुमाना । दच्छसुता कहँ नहिं कल्याना ॥  
 मोरेहु कहें न संसय जाहीं । बिधी बिपरीत भलाई नाहीं ॥ ३ ॥  
 होइहि सोइ जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥  
 अस कहि लगे जपन हरिनामा । गई सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥ ४ ॥

## दोहरा

पुनि पुनि हृदयँ विचारु करि धरि सीता कर रूप ।  
आगें होइ चलि पंथ तेहि जेहिं आवत नरभूप ॥ ५२ ॥

लछिमन दीख उमाकृत बेषा चकित भए भ्रम हृदयँ बिसेषा ॥  
कहि न सकत कछु अति गंभीरा । प्रभु प्रभाउ जानत मतिधीरा ॥ १ ॥  
सती कपटु जानेउ सुरस्वामी । सबदरसी सब अंतरजामी ॥  
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना । सोइ सरबग्य रामु भगवाना ॥ २ ॥  
सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ । देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ॥  
निज माया बलु हृदयँ बखानी । बोले बिहसि रामु मृदु बानी ॥ ३ ॥  
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू । पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥  
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू । बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥ ४ ॥

#### दोहरा

राम बचन मृदु गूढ सुनि उपजा अति संकोचु ।  
सती सभित महेस पहिं चलीं हृदयँ बड़ सोचु ॥ ५३ ॥

मैं संकर कर कहा न माना । निज अग्यानु राम पर आना ॥  
जाइ उतरु अब देहँ काहा । उर उपजा अति दारुन दाहा ॥ १ ॥  
जाना राम सतीं दुखु पावा । निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा ॥  
सतीं दीख कौतुकु मग जाता । आगें रामु सहित श्री भाता ॥ २ ॥  
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥  
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना । सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ॥ ३ ॥  
देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका । अमित प्रभाउ एक तैं एका ॥  
बंदत चरन करत प्रभु सेवा । बिबिध बेष देखे सब देवा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप ।  
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ॥ ५४ ॥



देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥  
 जीव चराचर जो संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ॥ १ ॥  
 पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा । राम रूप दूसर नहिं देखा ॥  
 अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न बेष घनेरे ॥ २ ॥  
 सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता । देखि सती अति भई सभीता ॥  
 हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं । नयन मूदि बैठीं मग माहीं ॥ ३ ॥  
 बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी ॥  
 पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा । चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥ ४ ॥

### दोहरा

गई समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ।  
 लीन्ही परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात ॥ ५५ ॥

### मासपारायण, दूसरा विश्राम

सतीं समुझि रघुबीर प्रभाऊ । भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥  
 कछु न परीछा लीन्हि गोसाई । कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई ॥ १ ॥  
 जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई । मोरें मन प्रतीति अति सोई ॥  
 तब संकर देखेउ धरि ध्याना । सतीं जो कीन्ह चरित सब जाना ॥ २ ॥  
 बहुरि राममायहि सिरु नावा । प्रेरि सतिहि जेहिं झूठ कहावा ॥  
 हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदयँ बिचारत संभु सुजाना ॥ ३ ॥  
 सतीं कीन्ह सीता कर बेषा । सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा ॥  
 जौं अब करउँ सती सन प्रीती । मिटइ भगति पथु होइ अनीती ॥ ४ ॥

### दोहरा

परम पुनीत न जाइ तजि किँ प्रेम बड़ पापु ।  
 प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु ॥ ५६ ॥

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा । सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा ॥  
 एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं । सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं ॥ १ ॥

अस बिचारि संकरु मतिधीरा । चले भवन सुमिरत रघुबीरा ॥  
 चलत गगन भै गिरा सुहाई । जय महेस भलि भगति दृढाई ॥ २ ॥  
 अस पन तुम्ह बिनु करइ को आना । रामभगत समरथ भगवाना ॥  
 सुनि नभगिरा सती उर सोचा । पूछा सिवहि समेत सकोचा ॥ ३ ॥  
 कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥  
 जदपि सती पूछा बहु भाँती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥ ४ ॥

## दोहरा

सती हृदय अनुमान किय सबु जानेउ सर्बग्य ।  
 कीन्ह कपटु में संभु सन नारि सहज जइ अग्य ॥ ५७ ॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहि बरनी ॥  
 कृपासिंधु सिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥ १ ॥  
 संकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी ॥  
 निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । तपइ अवाँ इव उर अधिकाई ॥२ ॥  
 सतिहि ससोच जानि बृषकेतू । कहीं कथा सुंदर सुख हेतू ॥  
 बरनत पंथ बिबिध इतिहासा । बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥ ३ ॥  
 तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन । बैठे बट तर करि कमलासन ॥  
 संकर सहज सरूप सम्हारा । लागि समाधि अखंड अपारा ॥ ४ ॥

## दोहरा

सती बसहि कैलास तब अधिक सोचु मन माहिं ।  
 मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं ॥ ५८ ॥

नित नव सोचु सती उर भारा । कब जैहँ दुख सागर पारा ॥  
 मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनिपति बचनु मृषा करि जाना ॥ १ ॥  
 सो फलु मोहि बिधाताँ दीन्हा । जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा ॥  
 अब बिधि अस बूझिअ नहि तोही । संकर बिमुख जिआवसि मोही ॥ २ ॥

कहि न जाई कछु हृदय गलानी । मन महुँ रामाहि सुमिर सयानी ॥  
 जौ प्रभु दीनदयालु कहावा । आरती हरन बेद जसु गावा ॥ ३ ॥  
 तौ में बिनय करउँ कर जोरी । छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥  
 जौं मोरे सिव चरन सनेहू । मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू ॥ ४ ॥

## दोहरा

तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु करउ सो बेगि उपाइ ।  
 होइ मरनु जेही बिनहिं श्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ ॥ ५९क ॥

## सोरठा

जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि ।  
 बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ॥ ५९ख ॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी । अकथनीय दारुन दुखु भारी ॥  
 बीतें संबत सहस सतासी । तजी समाधि संभु अबिनासी ॥ १ ॥  
 राम नाम सिव सुमिरन लागे । जानेउ सतीं जगतपति जागे ॥  
 जाइ संभु पद बंदनु कीन्ही । सनमुख संकर आसनु दीन्हा ॥ २ ॥  
 लगे कहन हरिकथा रसाला । दच्छ प्रजेस भए तेहि काला ॥  
 देखा बिधि बिचारि सब लायक । दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥ ३ ॥  
 बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । अति अभिमानु हृदयँ तब आवा ॥  
 नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

दच्छ लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग ।  
 नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥ ६० ॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा । बधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥  
 बिष्नु बिरंचि महेसु बिहाई । चले सकल सुर जान बनाई ॥ १ ॥  
 सतीं बिलोके ब्योम बिमाना । जात चले सुंदर बिधि नाना ॥  
 सुर सुंदरी करहिं कल गाना । सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना ॥ २ ॥

पूछेउ तब सिवँ कहेउ बखानी । पिता जग्य सुनि कछु हरषानी ॥  
 जौं महेसु मोहि आयसु देहीं । कुछ दिन जाइ रहौं मिस एहीं ॥ ३ ॥  
 पति परित्याग हृदय दुखु भारी । कहइ न निज अपराध बिचारी ॥  
 बोली सती मनोहर बानी । भय संकोच प्रेम रस सानी ॥ ४ ॥

## दोहरा

पिता भवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु होइ ।  
 तौ मै जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ ॥ ६१ ॥

कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा । यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥  
 दच्छ सकल निज सुता बोलाई । हमरें बयर तुम्हउ बिसराई ॥ १ ॥  
 ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना । तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना ॥  
 जौं बिनु बोलेँ जाहु भवानी । रहइ न सीलु सनेहु न कानी ॥ २ ॥  
 जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा । जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा ॥  
 तदपि बिरोध मान जहँ कोई । तहाँ गएँ कल्यानु न होई ॥ ३ ॥  
 भाँति अनेक संभु समुझावा । भावी बस न ग्यानु उर आवा ॥  
 कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाएँ । नहिं भलि बात हमारे भाएँ ॥ ४ ॥

## दोहरा

कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि ।  
 दिए मुख्य गन संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥ ६२ ॥

पिता भवन जब गई भवानी । दच्छ त्रास काहुँ न सनमानी ॥  
 सादर भलेहिं मिली एक माता । भगिनीं मिलीं बहुत मुसुकाता ॥ १ ॥  
 दच्छ न कछु पूछी कुसलाता । सतिहि बिलोकि जरे सब गाता ॥  
 सतीं जाइ देखेउ तब जागा । कतहुँ न दीख संभु कर भागा ॥ २ ॥  
 तब चित चढेउ जो संकर कहेऊ । प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ ॥  
 पाछिल दुखु न हृदयँ अस ब्यापा । जस यह भयउ महा परितापा ॥ ३ ॥

जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जाति अवमाना ॥  
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा।बहु बिधि जननीं कीन्ह प्रबोधा ॥४॥

दोहरा

सिव अपमानु न जाइ सहि हृदयँ न होइ प्रबोध ।  
सकल सभहि हठि हटकि तब बोलीं बचन सक्रोध ॥ ६३ ॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी जिन्ह संकर निंदा ॥  
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ । भली भाँति पछिताब पिताहूँ ॥ १ ॥  
संत संभु श्रीपति अपबादा । सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा ॥  
काटिअ तासु जीभ जो बसाई । श्रवन मूदि न त चलिअ पराई ॥ २ ॥  
जगदातमा महेसु पुरारी । जगत जनक सब के हितकारी ॥  
पिता मंदमति निंदत तेही । दच्छ सुक्र संभव यह देही ॥ ३ ॥  
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू । उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू ॥  
अस कहि जोग अग्नि तनु जारा । भयउ सकल मख हाहाकारा ॥ ४ ॥

दोहरा

सती मरनु सुनि संभु गन लगे करन मख खीस ।  
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस ॥ ६४ ॥

समाचार सब संकर पाए । बीरभद्रु करि कोप पठाए ॥  
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा । सकल सुरन्ह बिधिवत फलु दीन्हा ॥१॥  
भे जगबिदित दच्छ गति सोई । जसि कछु संभु बिमुख कै होई ॥  
यह इतिहास सकल जग जानी । ताते में संछेप बखानी ॥ २ ॥  
सतीं मरत हरि सन बरु मागा । जनम जनम सिव पद अनुरागा ॥  
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई । जनमीं पारबती तनु पाई ॥ ३ ॥  
जब तें उमा सैल गृह जाई । सकल सिद्धि संपति तहँ छाई ॥  
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे । उचित बास हिम भूधर दीन्हे ॥ ४ ॥

दोहरा

सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ।  
प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति ॥ ६५ ॥

सरिता सब पुनित जलु बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥  
सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥ १ ॥  
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ । जिमि जनु रामभगति के पाएँ ॥  
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू ॥ २ ॥  
नारद समाचार सब पाए । कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए ॥  
सैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारि बर आसनु दीन्हा ॥ ३ ॥  
नारि सहित मुनि पद सिरु नावा । चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा ॥  
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना । सुता बोलि मेली मुनि चरना ॥ ४ ॥

#### दोहरा

त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि ॥  
कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदयँ बिचारि ॥ ६६ ॥

कह मुनि बिहसि गूढ मृदु बानी । सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ॥  
सुंदर सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥ १ ॥  
सब लच्छन संपन्न कुमारी । होइहि संतत पियहि पिआरी ॥  
सदा अचल एहि कर अहिवाता । एहि तें जसु पैहहिं पितु माता ॥ २ ॥  
होइहि पूज्य सकल जग माहीं । एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥  
एहि कर नामु सुमिरि संसारा । त्रिय चढहहिं पतिव्रत असिधारा ॥ ३ ॥  
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी ॥  
अगुन अमान मातु पितु हीना । उदासीन सब संसय छीना ॥ ४ ॥

#### दोहरा

जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष ॥  
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख ॥ ६७ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी । दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥  
 नारदहुँ यह भेदु न जाना । दसा एक समुझब बिलगाना ॥ १ ॥  
 सकल सखीं गिरिजा गिरि मैना । पुलक सरीर भरे जल नैना ॥  
 होइ न मृषा देवरिषि भाषा । उमा सो बचनु हृदयँ धरि राखा ॥ २ ॥  
 उपजेउ सिव पद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन भा संदेहू ॥  
 जानि कुअवसरु प्रीति दुराई । सखी उछँग बैठी पुनि जाई ॥ ३ ॥  
 झूठि न होइ देवरिषि बानी । सोचहि दंपति सखीं सयानी ॥  
 उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥ ४ ॥

## दोहरा

कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।  
 देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥ ६८ ॥

तदपि एक में कहउँ उपाई । होइ करै जों दैउ सहाई ॥  
 जस बरु में बरनेउँ तुम्ह पाहीं । मिलहि उमहि तस संसय नाहीं ॥ १ ॥  
 जे जे बर के दोष बखाने । ते सब सिव पहि में अनुमाने ॥  
 जों बिबाहु संकर सन होई । दोषउ गुन सम कह सबु कोई ॥ २ ॥  
 जों अहि सेज सयन हरि करहीं । बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं ॥  
 भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं ॥ ३ ॥  
 सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥  
 समरथ कहँ नहिं दोषु गोसाई । रबि पावक सुरसरि की नाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

जों अस हिसिषा करहिं नर जडि बिबेक अभिमान ।  
 परहिं कल्प भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान ॥ ६९ ॥

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना । कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना ॥  
 सुरसरि मिलें सो पावन जैसें । ईस अनीसहि अंतरु तैसें ॥ १ ॥

संभु सहज समरथ भगवाना । एहि बिबाहँ सब बिधि कल्याना ॥  
 दुराराध्य पै अहहिं महेसू । आसुतोष पुनि किएँ कलेसू ॥ २ ॥  
 जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥  
 जद्यपि बर अनेक जग माहीं । एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ॥ ३ ॥  
 बर दायक प्रनतारति भंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥  
 इच्छित फल बिनु सिव अवराधे । लहिअ न कोटि जोग जप साथे ॥४ ॥

## दोहरा

अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।  
 होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ॥ ७० ॥

कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ॥  
 पतिहि एकांत पाइ कह मैना । नाथ न मैं समुझे मुनि बैना ॥ १ ॥  
 जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा । करिअ बिबाहु सुता अनुरुपा ॥  
 न त कन्या बरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥ २ ॥  
 जौं न मिलहि बरु गिरिजहि जोगू । गिरि जइ सहज कहिहि सबु लोगू ॥  
 सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू । जेहिं न बहोरि होइ उर दाहू ॥ ३ ॥  
 अस कहि परि चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह गिरीसा ॥  
 बरु पावक प्रगटै ससि माहीं । नारद बचनु अन्यथा नाहीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान ।  
 पारबतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान ॥ ७१ ॥

अब जौ तुम्हहि सुता पर नेहू । तौ अस जाइ सिखावन देहू ॥  
 करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेसू । आन उपायँ न मिटहि कलेसू ॥ १ ॥  
 नारद बचन सगर्भ सहेतू । सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू ॥  
 अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका । सबहि भाँति संकरु अकलंका ॥ २ ॥



सुनि पति बचन हरषि मन माहीं । गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥  
 उमहि बिलोकि नयन भरे बारी । सहित सनेह गोद बैठारी ॥ ३ ॥  
 बारहिं बार लेति उर लाई । गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥  
 जगत मातु सर्वग्य भवानी । मातु सुखद बोलीं मृदु बानी ॥ ४ ॥

## दोहरा

सुनहि मातु में दीख अस सपन सुनावउँ तोहि ।  
 सुंदर गौर सुबिप्रबर अस उपदेसेउ मोहि ॥ ७२ ॥

करहि जाइ तपु सैलकुमारी । नारद कहा सो सत्य बिचारी ॥  
 मातु पितहि पुनि यह मत भावा । तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥ १ ॥  
 तपबल रचइ प्रपंच बिधाता । तपबल बिष्नु सकल जग त्राता ॥  
 तपबल संभु करहिं संघारा । तपबल सेषु धरइ महिभारा ॥ २ ॥  
 तप अधार सब सृष्टि भवानी । करहि जाइ तपु अस जियँ जानी ॥  
 सुनत बचन बिसमित महतारी । सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥ ३ ॥  
 मातु पितुहि बहुबिधि समुझाई । चलीं उमा तप हित हरषाई ॥  
 प्रिय परिवार पिता अरु माता । भए बिकल मुख आव न बाता ॥ ४ ॥

## दोहरा

बेदसिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ ॥  
 पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥

उर धरि उमा प्रानपति चरना । जाइ बिपिन लागीं तपु करना ॥  
 अति सुकुमार न तनु तप जोगू । पति पद सुमिरि तजेउ सबु भोगू ॥१ ॥  
 नित नव चरन उपज अनुरागा । बिसरी देह तपहिं मनु लागा ॥  
 संबत सहस मूल फल खाए । सागु खाइ सत बरष गवाँए ॥ २ ॥  
 कछु दिन भोजनु बारि बतासा । किए कठिन कछु दिन उपबासा ॥  
 बेल पाती महि परइ सुखाई । तीनि सहस संबत सोई खाई ॥ ३ ॥

पुनि परिहरे सुखानेउ परना । उमहि नाम तब भयउ अपरना ॥  
देखि उमहि तप खीन सरीरा । ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा ॥ ४ ॥

दोहरा

भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिजाकुमारि ।  
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥

अस तपु काहुँ न कीन्ह भवानी । भउ अनेक धीर मुनि ग्यानी ॥  
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी । सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥ १ ॥  
आवै पिता बोलावन जबहीं । हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं ॥  
मिलहिं तुम्हहि जब सप्त रिषीसा । जानेहु तब प्रमान बागीसा ॥ २ ॥  
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी । पुलक गात गिरिजा हरषानी ॥  
उमा चरित सुंदर में गावा । सुनहु संभु कर चरित सुहावा ॥ ३ ॥  
जब तें सती जाइ तनु त्यागा । तब सैं सिव मन भयउ बिरागा ॥  
जपहिं सदा रघुनायक नामा । जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा ॥ ४ ॥

दोहरा

चिदानन्द सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम ।  
बिचरहिं महि धरि हृदयँ हरि सकल लोक अभिराम ॥ ७५ ॥

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना । कतहुँ राम गुन करहिं बखाना ॥  
जदपि अकाम तदपि भगवाना । भगत बिरह दुख दुखित सुजाना ॥ १ ॥  
एहि बिधि गयउ कालु बहु बीती । नित नै होइ राम पद प्रीती ॥  
नैमु प्रेमु संकर कर देखा । अबिचल हृदयँ भगति कै रेखा ॥ २ ॥  
प्रगटै रामु कृतग्य कृपाला । रूप सील निधि तेज बिसाला ॥  
बहु प्रकार संकरहि सराहा । तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा ॥ ३ ॥  
बहुबिधि राम सिवहि समुझावा । पारबती कर जन्मु सुनावा ॥  
अति पुनीत गिरिजा कै करनी । बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ॥ ४ ॥

दोहरा

अब बिनती मम सुनेहु सिव जौं मो पर निज नेहु ।  
जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मार्गें देहु ॥ ७६ ॥

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं । नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं ॥  
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरमु यह नाथ हमारा ॥ १ ॥  
मातु पिता गुर प्रभु कै बानी । बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ॥  
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ॥ २ ॥  
प्रभु तोषेउ सुनि संकर बचना । भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना ॥  
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ । अब उर राखेहु जो हम कहेऊ ॥ ३ ॥  
अंतरधान भए अस भाषी । संकर सोइ मूरति उर राखी ॥  
तबहिं ससरिषि सिव पहिं आए । बोले प्रभु अति बचन सुहाए ॥ ४ ॥

#### दोहरा

पारबती पहिं जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु ।  
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ ७७ ॥

रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । मूरतिमंत तपस्या जैसी ॥  
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी । करहु कवन कारन तपु भारी ॥ १ ॥  
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू । हम सन सत्य मरमु किन कहहू ॥  
कहत बचत मनु अति सकुचाई । हँसिहहु सुनि हमारि जइताई ॥ २ ॥  
मनु हठ परा न सुनइ सिखावा । चहत बारि पर भीति उठावा ॥  
नारद कहा सत्य सोइ जाना । बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना ॥ ३ ॥  
देखहु मुनि अबिबेकु हमारा । चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

सुनत बचन बिहसे रिषय गिरिसंभव तब देह ।  
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु गेह ॥ ७८ ॥

दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई ॥  
चित्रकेतु कर घरु उन घाला । कनककसिपु कर पुनि अस हाला ॥ १ ॥

नारद सिख जे सुनहिं नर नारी । अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी ॥  
 मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । आपु सरिस सबही चह कीन्हा ॥ २ ॥  
 तेहि कैं बचन मानि बिस्वासा । तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥  
 निर्गुन निलज कुबेष कपाली । अकुल अगेह दिगंबर ब्याली ॥ ३ ॥  
 कहहु कवन सुखु अस बरु पाएँ । भल भूलिहु ठग के बौराएँ ॥  
 पंच कहैं सिवँ सती बिबाही । पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ॥ ४ ॥

## दोहरा

अब सुख सोवत सोचु नहि भीख मागि भव खाहिं ।  
 सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥ ७९ ॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा । हम तुम्ह कहूँ बरु नीक बिचारा ॥  
 अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला । गावहिं बेद जासु जस लीला ॥ १ ॥  
 दूषन रहित सकल गुन रासी । श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ॥  
 अस बरु तुम्हहि मिलाउब आनी । सुनत बिहसि कह बचन भवानी ॥२ ॥  
 सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा । हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥  
 कनकउ पुनि पषान तैं होई । जारेहुँ सहजु न परिहर सोई ॥ ३ ॥  
 नारद बचन न मैं परिहरऊँ । बसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ॥  
 गुर कैं बचन प्रतीति न जेही । सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ॥ ४ ॥

## दोहरा

महादेव अवगुन भवन बिष्नु सकल गुन धाम ।  
 जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥ ८० ॥

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । सुनतिऊँ सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥  
 अब मैं जन्मु संभु हित हारा । को गुन दूषन करै बिचारा ॥ १ ॥  
 जौं तुम्हरे हठ हृदयँ बिसेषी । रहि न जाइ बिनु किएँ बरेषी ॥  
 तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाही । बर कन्या अनेक जग माहीं ॥ २ ॥

जन्म कोटि लागि रगर हमारी । बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी ॥  
 तजउँ न नारद कर उपदेसू । आपु कहहि सत बार महेसू ॥ ३ ॥  
 मैं पा परउँ कहइ जगदंबा । तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा ॥  
 देखि प्रेमु बोले मुनि ग्यानी । जय जय जगदंबिके भवानी ॥ ४ ॥

### दोहरा

तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु ।  
 नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गातु ॥ ८१ ॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए । करि बिनती गिरजहिं गृह ल्याए ॥  
 बहुरि सप्तारिषि सिव पहिं जाई । कथा उमा कै सकल सुनाई ॥ १ ॥  
 भए मगन सिव सुनत सनेहा । हरषि सप्तारिषि गवने गेहा ॥  
 मनु थिर करि तब संभु सुजाना । लगे करन रघुनायक ध्याना ॥ २ ॥  
 तारकु असुर भयउ तेहि काला । भुज प्रताप बल तेज बिसाला ॥  
 तेहि सब लोक लोकपति जीते । भए देव सुख संपति रीते ॥ ३ ॥  
 अजर अमर सो जीति न जाई । हारे सुर करि बिबिध लराई ॥  
 तब बिरंचि सन जाइ पुकारे । देखे बिधि सब देव दुखारे ॥ ४ ॥

### दोहरा

सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ ।  
 संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतइ रन सोइ ॥ ८२ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई । होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥  
 सतीं जो तजी दच्छ मख देहा । जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥ १ ॥  
 तेहिं तपु कीन्ह संभु पति लागी । सिव समाधि बैठे सबु त्यागी ॥  
 जदपि अहइ असमंजस भारी । तदपि बात एक सुनहु हमारी ॥ २ ॥  
 पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं । करै छोभु संकर मन माहीं ॥  
 तब हम जाइ सिवहि सिर नाई । करवाउब बिबाहु बरिआई ॥ ३ ॥

एहि बिधि भलेहि देवहित होई । मर अति नीक कहइ सबु कोई ॥  
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू । प्रगटेउ बिषमबान झषकेतू ॥ ४ ॥

## दोहरा

सुरन्ह कहीं निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार ।  
संभु बिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहेउ अस मार ॥ ८३ ॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा । श्रुति कह परम धरम उपकारा ॥  
पर हित लागि तजइ जो देही । संतत संत प्रसंसहिं तेही ॥ १ ॥  
अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई । सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥  
चलत मार अस हृदयँ बिचारा । सिव बिरोध ध्रुव मरनु हमारा ॥ २ ॥  
तब आपन प्रभाउ बिस्तारा । निज बस कीन्ह सकल संसारा ॥  
कोपेउ जबहि बारिचरकेतू । छन महुँ मिटे सकल श्रुति सेतू ॥ ३ ॥  
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना । धीरज धरम ग्यान बिग्याना ॥  
सदाचार जप जोग बिरागा । सभय बिबेक कटकु सब भागा ॥ ४ ॥

## छंद

भागेउ बिबेक सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे ।  
सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महुँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥  
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा ।  
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा ॥

## दोहरा

जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम ।  
ते निज निज मरजाद तजि भए सकल बस काम ॥ ८४ ॥

सब के हृदयँ मदन अभिलाषा । लता निहारि नवहिं तरु साखा ॥  
नदीं उमगि अंबुधि कहुँ धाई । संगम करहिं तलाव तलाई ॥ १ ॥  
जहुँ असि दसा जइन्ह कै बरनी । को कहि सकइ सचेतन करनी ॥  
पसु पच्छी नभ जल थलचारी । भए कामबस समय बिसारी ॥ २ ॥

मदन अंध ब्याकुल सब लोका । निसि दिनु नहिं अवलोकहिं कोका ॥  
 देव दनुज नर किंनर ब्याला । प्रेत पिसाच भूत बेताला ॥ ३ ॥  
 इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी । सदा काम के चरे जानी ॥  
 सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी । तेपि कामबस भए बियोगी ॥ ४ ॥

छंद

भए कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै ।  
 देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥  
 अबला बिलोकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं ।  
 दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥

सोरठा

धरी न काहूँ धिर सबके मन मनसिज हरे ।  
 जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महुँ ॥ ८५ ॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जौ लागि कामु संभु पहिं गयऊ ॥  
 सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू । भयउ जथाथिति सबु संसारू ॥ १ ॥  
 भए तुरत सब जीव सुखारे । जिमि मद उतरि गएँ मतवारे ॥  
 रुद्रहि देखि मदन भय माना । दुराधरष दुर्गम भगवाना ॥ २ ॥  
 फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । मरनु ठानि मन रचेसि उपाई ॥  
 प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा । कुसुमित नव तरु राजि बिराजा ॥ ३ ॥  
 बन उपबन बापिका तड़ागा । परम सुभग सब दिसा बिभागा ॥  
 जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा । देखि मुएहुँ मन मनसिज जागा ॥ ४ ॥

छंद

जागइ मनोभव मुएहुँ मन बन सुभगता न परै कही ।  
 सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥  
 बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ।  
 कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा ॥

## दोहरा

सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत ।  
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदयनिकेत ॥ ८६ ॥

देखि रसाल बिटप बर साखा । तेहि पर चढेउ मदनु मन माखा ॥  
सुमन चाप निज सर संधाने । अति रिस ताकि श्रवन लागि ताने ॥ १ ॥  
छाड़े बिषम बिसिख उर लागे । छुटि समाधि संभु तब जागे ॥  
भयउ ईस मन छोभु बिसेषी । नयन उघारि सकल दिसि देखी ॥ २ ॥  
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका । भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका ॥  
तब सिवँ तीसर नयन उघारा । चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥ ३ ॥  
हाहाकार भयउ जग भारी । डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥  
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी । भए अकंटक साधक जोगी ॥ ४ ॥

## छंद

जोगि अकंटक भए पति गति सुनत रति मुरुछित भई ।  
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं गई ।  
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सन्मुख रही ।  
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही ॥

## दोहरा

अब तैं रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु ।  
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु ॥ ८७ ॥

जब जदुबंस कृष्ण अवतारा । होइहि हरन महा महिभारा ॥  
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा । बचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥ १ ॥  
रति गवनी सुनि संकर बानी । कथा अपर अब कहउँ बखानी ॥  
देवन्ह समाचार सब पाए । ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए ॥ २ ॥  
सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता । गए जहाँ सिव कृपानिकेता ॥  
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा । भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा ॥ ३ ॥



बोले कृपासिंधु बृषकेतू । कहहु अमर आए केहि हेतू ॥  
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी । तदपि भगति बस बिनवउँ स्वामी ॥४॥

दोहरा

सकल सुरन्ह के हृदयँ अस संकर परम उछाहु ।  
निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु ॥ ८८ ॥

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन । सोइ कछु करहु मदन मद मोचन ।  
कामु जारि रति कहँ बरु दीन्हा । कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥ १ ॥  
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ । नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥  
पारबतीं तपु कीन्ह अपारा । करहु तासु अब अंगीकारा ॥ २ ॥  
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी । ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी ॥  
तब देवन्ह दुंदुभीं बजाई । बरषि सुमन जय जय सुर साई ॥ ३ ॥  
अवसरु जानि सप्तरिषि आए । तुरतहिं बिधि गिरिभवन पठाए ॥  
प्रथम गए जहँ रही भवानी । बोले मधुर बचन छल सानी ॥ ४ ॥

दोहरा

कहा हमार न सुनेहु तब नारद के उपदेस ।  
अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ कामु महेस ॥ ८९ ॥

**मासपारायण तीसरा विश्राम**

सुनि बोलीं मुसकाइ भवानी । उचित कहेहु मुनिबर बिग्यानी ॥  
तुम्हरेँ जान कामु अब जारा । अब लागि संभु रहे सबिकारा ॥ १ ॥  
हमरेँ जान सदा सिव जोगी । अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥  
जौं मैं सिव सेये अस जानी । प्रीति समेत कर्म मन बानी ॥ २ ॥  
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा । करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा ॥  
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा । सोइ अति बड़ अबिबेकु तुम्हारा ॥ ३ ॥  
तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ॥  
गएँ समीप सो अवसि नसाई । असि मन्मथ महेस की नाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास ॥  
चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥ ९० ॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा । मदन दहन सुनि अति दुखु पावा ॥  
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना । सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना ॥ १ ॥  
हृदयँ बिचारि संभु प्रभुताई । सादर मुनिबर लिए बोलाई ॥  
सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई । बेगि बेदबिधि लगन धराई ॥ २ ॥  
पत्री ससरिषिन्ह सोइ दीन्ही । गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही ॥  
जाइ बिधिहि दीन्हि सो पाती । बाचत प्रीति न हृदयँ समाती ॥ ३ ॥  
लगन बाचि अज सबहि सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥  
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥ ४ ॥

## दोहरा

लगे सँवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान ।  
होहि सगुन मंगल सुभद करहिं अपछरा गान ॥ ९१ ॥

सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा ॥  
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला । तन बिभूति पट केहरि छाला ॥ १ ॥  
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीनि उपबीत भुजंगा ॥  
गरल कंठ उर नर सिर माला । असिव बेष सिवधाम कृपाला ॥ २ ॥  
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा । चले बसहँ चढि बाजहिं बाजा ॥  
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं । बर लायक दुलहिनि जग नाहीं ॥ ३ ॥  
बिष्नु बिरंचि आदि सुरब्राता । चढि चढि बाहन चले बराता ॥  
सुर समाज सब भाँति अनूपा । नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥ ४ ॥

## दोहरा

बिष्नु कहा अस बिहसि तब बोलि सकल दिसिराज ।  
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥ ९२ ॥

बर अनुहारि बरात न भाई । हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥  
 बिष्नु बचन सुनि सुर मुसकाने । निज निज सेन सहित बिलगाने ॥ १ ॥  
 मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं । हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं ॥  
 अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे । भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥ २ ॥  
 सिव अनुसासन सुनि सब आए । प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ॥  
 नाना बाहन नाना बेषा । बिहसे सिव समाज निज देखा ॥ ३ ॥  
 कोठ मुखहीन बिपुल मुख काहू । बिनु पद कर कोठ बहु पद बाहू ॥  
 बिपुल नयन कोठ नयन बिहीना । रिष्टपुष्ट कोठ अति तनखीना ॥ ४ ॥

छंद

तन खीन कोठ अति पीन पावन कोठ अपावन गति धरें ।  
 भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें ॥  
 खर स्वान सुअर सृकाल मुख गन बेष अगनित को गनै ।  
 बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै ॥

सोरठा

नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।  
 देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि ॥ ९३ ॥

जस दूलहु तसि बनी बराता । कौतुक बिबिध होहिं मग जाता ॥  
 इहाँ हिमाचल रचेठ बिताना । अति बिचित्र नहिं जाइ बखाना ॥ १ ॥  
 सैल सकल जहँ लगी जग माहीं । लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं ॥  
 बन सागर सब नदीं तलावा । हिमगिरि सब कहुँ नेवत पठावा ॥ २ ॥  
 कामरूप सुंदर तन धारी । सहित समाज सहित बर नारी ॥  
 गए सकल तुहिनाचल गेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥ ३ ॥  
 प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराए । जथाजोगु तहँ तहँ सब छाए ॥  
 पुर सोभा अवलोकि सुहाई । लागइ लघु बिरंचि निपुनाई ॥ ४ ॥

छंद

लघु लाग बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही ।  
 बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही ॥  
 मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं ॥  
 बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं ॥

## दोहरा

जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु बरनि कि जाइ ।  
 रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ ॥ ९४ ॥

नगर निकट बरात सुनि आई । पुर खरभरु सोभा अधिकाई ॥  
 करि बनाव सजि बाहन नाना । चले लेन सादर अगवाना ॥ १ ॥  
 हियँ हरषे सुर सेन निहारी । हरिहि देखि अति भए सुखारी ॥  
 सिव समाज जब देखन लागे । बिडरि चले बाहन सब भागे ॥ २ ॥  
 धरि धीरजु तहँ रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने ॥  
 गएँ भवन पूछहिं पितु माता । कहहिं बचन भय कंपित गाता ॥ ३ ॥  
 कहिअ काह कहि जाइ न बाता । जम कर धार किधौं बरिआता ॥  
 बरु बौराह बसहँ असवारा । ब्याल कपाल बिभूषन छारा ॥ ४ ॥

## छंद

तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा ।  
 सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा ॥  
 जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही ।  
 देखिहि सो उमा बिबाहु घर घर बात असि लरिकन्ह कही ॥

## दोहरा

समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं ।  
 बाल बुझाए बिबिध बिधि निडर होहु डरु नाहिं ॥ ९५ ॥

लै अगवान बरातहि आए । दिए सबहि जनवास सुहाए ॥  
 मैनाँ सुभ आरती सँवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी ॥ १ ॥

कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चली हरहि हरषानी ॥  
 बिकट बेष रुद्रहि जब देखा । अबलन्ह उर भय भयउ बिसेषा ॥ २ ॥  
 भागि भवन पैठीं अति त्रासा । गए महेसु जहाँ जनवासा ॥  
 मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी । लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी ॥ ३ ॥  
 अधिक सनेहँ गोद बैठारी । स्याम सरोज नयन भरे बारी ॥  
 जेहिं बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा । तेहिं जइ बरु बाउर कस कीन्हा ॥४॥

छंद

कस कीन्ह बरु बौराह बिधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता दई ।  
 जो फलु चहिअ सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई ॥  
 तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जराँ जलनिधि महुँ परौं ॥  
 घरु जाउ अपजसु होउ जग जीवत बिबाहु न हौं करौं ॥

दोहरा

भई बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि ।  
 करि बिलापु रोदति बदति सुता सनेहु सँभारि ॥ ९६ ॥

नारद कर में काह बिगारा । भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा ॥  
 अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा । बौरै बरहि लागि तपु कीन्हा ॥ १ ॥  
 साचेहुँ उन्ह के मोह न माया । उदासीन धनु धामु न जाया ॥  
 पर घर घालक लाज न भीरा । बाझँ कि जान प्रसव कै पीरा ॥ २ ॥  
 जननिहि बिकल बिलोकि भवानी । बोली जुत बिबेक मृदु बानी ॥  
 अस बिचारि सोचहि मति माता । सो न टरइ जो रचइ बिधाता ॥ ३ ॥  
 करम लिखा जौ बाउर नाहू । तौ कत दोसु लगाइअ काहू ॥  
 तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका । मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥४॥

छंद

जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं ।  
 दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं ॥

सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं ॥  
 बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं ॥

## दोहरा

तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत ।  
 समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥ ९७ ॥

तब नारद सबहि समुझावा । पूरुब कथाप्रसंगु सुनावा ॥  
 मयना सत्य सुनहु मम बानी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥ १ ॥  
 अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि । सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥  
 जग संभव पालन लय कारिनि । निज इच्छा लीला बपु धारिनि ॥ २ ॥  
 जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई । नामु सती सुंदर तनु पाई ॥  
 तहँहुँ सती संकरहि बिबाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥ ३ ॥  
 एक बार आवत सिव संगी । देखेउ रघुकुल कमल पतंगी ॥  
 भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा । भ्रम बस बेषु सीय कर लीन्हा ॥ ४ ॥

## छंद

सिय बेषु सती जो कीन्हा तेहि अपराध संकर परिहरीं ।  
 हर बिरहँ जाइ बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं ॥  
 अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया ।  
 अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया ॥

## दोहरा

सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद ।  
 छन महुँ ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद ॥ ९८ ॥

तब मयना हिमवंतु अनंदे । पुनि पुनि पारबती पद बंदे ॥  
 नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने । नगर लोग सब अति हरषाने ॥ १ ॥  
 लगे होन पुर मंगलगाना । सजे सबहि हाटक घट नाना ॥  
 भाँति अनेक भई जेवराना । सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा ॥ २ ॥

सो जेवनार कि जाइ बखानी । बसहिं भवन जेहिं मातु भवानी ॥  
 सादर बोले सकल बराती । बिष्नु बिरंचि देव सब जाती ॥ ३ ॥  
 बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा । लागे परुसन निपुन सुआरा ॥  
 नारिबुंद सुर जेवँत जानी । लगीं देन गारीं मृदु बानी ॥ ४ ॥

छंद

गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि बिंग्य बचन सुनावहीं ।  
 भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु बिनोदु सुनि सचु पावहीं ॥  
 जेवँत जो बढ्यो अनंदु सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो ।  
 अचवाँइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥

दोहरा

बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ लगन सुनाई आइ ।  
 समय बिलोकि बिबाह कर पठए देव बोलाइ ॥ ९९ ॥

बोली सकल सुर सादर लीन्हे । सबहि जथोचित आसन दीन्हे ॥  
 बेदी बेद बिधान सँवारी । सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥ १ ॥  
 सिंघासनु अति दिब्य सुहावा । जाइ न बरनि बिरंचि बनावा ॥  
 बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु नाई । हृदयँ सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥ २ ॥  
 बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई । करि सिंगारु सखीं लै आई ॥  
 देखत रूपु सकल सुर मोहे । बरनै छबि अस जग कबि को है ॥ ३ ॥  
 जगदंबिका जानि भव भामा । सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ॥  
 सुंदरता मरजाद भवानी । जाइ न कोटिहूँ बदन बखानी ॥ ४ ॥

छंद

कोटिहूँ बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा ।  
 सकुचहिं कहत श्रुति शेष सारद मंदमति तुलसी कहा ॥  
 छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ ॥  
 अवलोकि सकहिं न सकुच पति पद कमल मनु मधुकरु तहाँ ॥

## दोहरा

मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेठ संभु भवानि ।  
कोठ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियँ जानि ॥ १०० ॥

जसि बिबाह कै बिधि श्रुति गाई । महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥  
गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भवहि समरपीं जानि भवानी ॥ १ ॥  
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा । हियँ हरषे तब सकल सुरेसा ॥  
बेद मंत्र मुनिबर उच्चरहीं । जय जय जय संकर सुर करहीं ॥ २ ॥  
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना । सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना ॥  
हर गिरिजा कर भयठ बिबाहू । सकल भुवन भरि रहा उछाहू ॥ ३ ॥  
दासीं दास तुरग रथ नागा । धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा ॥  
अन्न कनकभाजन भरि जाना । दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥ ४ ॥

## छंद

दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कद्यो ।  
का देउँ पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रह्यो ॥  
सिवँ कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहिं कियो ।  
पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ प्रेम परिपूरन हियो ॥

## दोहरा

नाथ उमा मन प्राण सम गृहकिंकरी करेहु ।  
छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बरु देहु ॥ १०१ ॥

बहु बिधि संभु सास समुझाई । गवनी भवन चरन सिरु नाई ॥  
जननीं उमा बोलि तब लीन्ही । लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥१ ॥  
करेहु सदा संकर पद पूजा । नारिधरमु पति देउ न दूजा ॥  
बचन कहत भरे लोचन बारी । बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥ २ ॥  
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥  
भै अति प्रेम बिकल महतारी । धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी ॥ ३ ॥



पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना । परम प्रेम कछु जाइ न बरना ॥  
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी । जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥ ४ ॥

छंद

जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहूँ दर्ई ।  
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखीं तै सिव पहिं गई ॥  
जाचक सकल संतोषि संकरु उमा सहित भवन चले ।  
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले ॥

दोहरा

चले संग हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु ।  
बिबिध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्ह बृषकेतु ॥ १०२ ॥

तुरत भवन आए गिरिराई । सकल सैल सर लिए बोलाई ॥  
आदर दान बिनय बहुमाना । सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना ॥ १ ॥  
जबहिं संभु कैलासहिं आए । सुर सब निज निज लोक सिधाए ॥  
जगत मातु पितु संभु भवानी । तेही सिंगारु न कहउँ बखानी ॥ २ ॥  
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा । गनन्ह समेत बसहिं कैलासा ॥  
हर गिरिजा बिहार नित नयऊ । एहि बिधि बिपुल काल चलि गयऊ ॥३॥  
तब जनमेठ षटबदन कुमारा । तारकु असुर समर जेहिं मारा ॥  
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । षन्मुख जन्मु सकल जग जाना ॥ ४ ॥

छंद

जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा ।  
तेहि हेतु मैं बृषकेतु सुत कर चरित संछेपहिं कहा ॥  
यह उमा संगु बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं ।  
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्वदा सुखु पावहीं ॥

दोहरा

चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु ।  
 बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु ॥ १०३ ॥

संभु चरित सुनि सरस सुहावा । भरद्वाज मुनि अति सुख पावा ॥  
 बहु लालसा कथा पर बाढी । नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढी ॥ १ ॥  
 प्रेम बिबस मुख आव न बानी । दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी ॥  
 अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा । तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥ २ ॥  
 सिव पद कमल जिन्हहि रति नाही । रामहि ते सपनेहुँ न सोहाही ॥  
 बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू । राम भगत कर लच्छन एहू ॥ ३ ॥  
 सिव सम को रघुपति ब्रतधारी । बिनु अघ तजी सती असि नारी ॥  
 पनु करि रघुपति भगति देखाई । को सिव सम रामहि प्रिय भाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रथमहिं मै कहि सिव चरित बूझा मरमु तुम्हार ।  
 सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार ॥ १०४ ॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला । कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला ॥  
 सुनु मुनि आजु समागम तोरें । कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें ॥ १ ॥  
 राम चरित अति अमित मुनिसा । कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा ॥  
 तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥ २ ॥  
 सारद दारुनारि सम स्वामी । रामु सूत्रधर अंतरजामी ॥  
 जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी । कबि उर अजिर नचावहिं बानी ॥ ३ ॥  
 प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा । बरनउँ बिसद तासु गुन गाथा ॥  
 परम रम्य गिरिबरु कैलासू । सदा जहाँ सिव उमा निवासू ॥ ४ ॥

## दोहरा

सिद्ध तपोधन जोगिजन सूर किंनर मुनिबृंद ।  
 बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिब सुखकंद ॥ १०५ ॥

हरि हर बिमुख धर्म रति नाही । ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं ॥  
 तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला । नित नूतन सुंदर सब काला ॥ १ ॥  
 त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया । सिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया ॥  
 एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरु बिलोकि उर अति सुखु भयऊ ॥ २ ॥  
 निज कर डासि नागरिपु छाला । बैठै सहजहिं संभु कृपाला ॥  
 कुंद इंद्रु दर गौर सरीरा । भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥ ३ ॥  
 तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नख दुति भगत हृदय तम हरना ॥  
 भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी । आननु सरद चंद छबि हारी ॥ ४ ॥

## दोहरा

जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल ।  
 नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालबिधु भाल ॥ १०६ ॥

बैठे सोह कामरिपु कैसें । धरें सरीरु सांतरसु जैसें ॥  
 पारबती भल अवसरु जानी । गई संभु पहिं मातु भवानी ॥ १ ॥  
 जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा । बाम भाग आसनु हर दीन्हा ॥  
 बैठीं सिव समीप हरषाई । पूरुब जन्म कथा चित आई ॥ २ ॥  
 पति हियँ हेतु अधिक अनुमानी । बिहसि उमा बोलीं प्रिय बानी ॥  
 कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥ ३ ॥  
 बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी ॥  
 चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रभु समरथ सर्वग्य सिव सकल कला गुन धाम ॥  
 जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥ १०७ ॥

जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी । जानिअ सत्य मोहि निज दासी ॥  
 तौं प्रभु हरहु मोर अग्याना । कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना ॥ १ ॥

जासु भवनु सुरतरु तर होई । सहि कि दरिद्र जनित दुखु सोई ॥  
 ससिभूषन अस हृदयँ बिचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥ २ ॥  
 प्रभु जे मुनि परमारथबादी । कहहिं राम कहूँ ब्रह्म अनादी ॥  
 सेस सारदा बेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुन गाना ॥ ३ ॥  
 तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । सादर जपहु अन्नंग आराती ॥  
 रामु सो अवध नृपति सुत सोई । की अज अगुन अलखगति कोई ॥ ४ ॥

## दोहरा

जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति भोरि ।  
 देख चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥ १०८ ॥

जौं अनीह व्यापक बिभु कोऊ । कबहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ॥  
 अग्य जानि रिस उर जनि धरहू । जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू ॥१ ॥  
 मै बन दीखि राम प्रभुताई । अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई ॥  
 तदपि मलिन मन बोधु न आवा । सो फलु भली भाँति हम पावा ॥ २ ॥  
 अजहूँ कछु संसठ मन मोरे । करहु कृपा बिनवउँ कर जोरें ॥  
 प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा । नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥३ ॥  
 तब कर अस बिमोह अब नाहीं । रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥  
 कहहु पुनीत राम गुन गाथा । भुजगराज भूषन सुरनाथा ॥ ४ ॥

## दोहरा

बंदउ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि ।  
 बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥ १०९ ॥

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी । दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ॥  
 गूढउ तत्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥ १ ॥  
 अति आरति पूछउँ सुरराया । रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥  
 प्रथम सो कारन कहहु बिचारी । निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी ॥ २ ॥

पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥  
 कहहु जथा जानकी बिबाहीं । राज तजा सो दूषन काहीं ॥ ३ ॥  
 बन बसि कीन्हे चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥  
 राज बैठि कीन्हों बहु लीला । सकल कहहु संकर सुखलीला ॥ ४ ॥

## दोहरा

बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम ।  
 प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम ॥ ११० ॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी । जेहिं बिग्यान मगन मुनि ग्यानी ॥  
 भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । पुनि सब बरनहु सहित बिभागा ॥ १ ॥  
 औरउ राम रहस्य अनेका । कहहु नाथ अति बिमल बिबेका ॥  
 जो प्रभु में पूछा नहि होई । सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥ २ ॥  
 तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना । आन जीव पाँवर का जाना ॥  
 प्रस्न उमा कै सहज सुहाई । छल बिहीन सुनि सिव मन भाई ॥ ३ ॥  
 हर हियँ रामचरित सब आए । प्रेम पुलक लोचन जल छाए ॥  
 श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । परमानंद अमित सुख पावा ॥ ४ ॥

## दोहरा

मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहेर कीन्ह ।  
 रघुपति चरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह ॥ १११ ॥

झूठे सत्य जाहि बिनु जानें । जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें ॥  
 जेहि जानें जग जाइ हेराई । जागें जथा सपन भ्रम जाई ॥ १ ॥  
 बंदउँ बालरूप सोई रामू । सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥  
 मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी ॥ २ ॥  
 करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी । हरषि सुधा सम गिरा उचारी ॥  
 धन्य धन्य गिरिराजकुमारी । तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥ ३ ॥

पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । सकल लोक जग पावनि गंगा ॥  
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी । कीन्हहु प्रस्न जगत हित लागी ॥ ४ ॥

दोहरा

रामकृपा तैं पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं ।  
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं ॥ ११२ ॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई । कहत सुनत सब कर हित होई ॥  
जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना । श्रवन रंध्र अहिभवन समाना ॥ १ ॥  
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा । लोचन मोरपंख कर लेखा ॥  
ते सिर कटु तुंबरि समतूला । जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥ २ ॥  
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी । जीवत सव समान तेइ प्राणी ॥  
जो नहिं करइ राम गुन गाना । जीह सो दादुर जीह समाना ॥ ३ ॥  
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥  
गिरिजा सुनुहु राम कै लीला । सुर हित दनुज बिमोहनसीला ॥ ४ ॥

दोहरा

रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि ।  
सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥ ११३ ॥

रामकथा सुंदर कर तारी । संसय बिहग उडावनिहारी ॥  
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥ १ ॥  
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥  
जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना ॥ २ ॥  
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी । कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी ॥  
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई । सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥ ३ ॥  
एक बात नहि मोहि सोहानी । जदपि मोह बस कहेहु भवानी ॥  
तुम जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना ॥४ ॥

दोहरा

कहहि सुनहि अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच ।  
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच ॥ ११४ ॥

अग्य अकोबिद अंध अभागी । काई बिषय मुकर मन लागी ॥  
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी । सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी ॥ १ ॥  
कहहिं ते बेद असंमत बानी । जिन्ह केँ सूझ लाभु नहिं हानी ॥  
मुकर मलिन अरु नयन बिहीना । राम रूप देखहिं किमि दीना ॥ २ ॥  
जिन्ह केँ अगुन न सगुन बिबेका । जल्पहिं कल्पित बचन अनेका ॥  
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं । तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं ॥ ३ ॥  
बातुल भूत बिबस मतवारे । ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे ॥  
जिन्ह कृत महामोह मद पाना । तिन् कर कहा करिअ नहिं काना ॥ ४ ॥

#### सोरठा

अस निज हृदयँ बिचारि तजु संसय भजु राम पद ।  
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम ॥ ११५ ॥

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥  
अगुन अरुप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥ १ ॥  
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसैं । जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसैं ॥  
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा ॥ २ ॥  
राम सच्चिदानंद दिनेसा । नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥  
सहज प्रकासरुप भगवाना । नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना ॥ ३ ॥  
हरष बिषाद ग्यान अग्याना । जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥  
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना । परमानन्द परेस पुराना ॥ ४ ॥

#### दोहरा

पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ ॥  
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ ॥ ११६ ॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड प्रानी ॥  
 जथा गगन घन पटल निहारी । झाँपेठ मानु कहहिं कुबिचारी ॥ १ ॥  
 चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ । प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ ॥  
 उमा राम बिषइक अस मोहा । नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥ २ ॥  
 बिषय करन सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ॥  
 सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ ३ ॥  
 जगत प्रकास्य प्रकासक रामू । मायाधीस ग्यान गुन धामू ॥  
 जासु सत्यता तें जड माया । भास सत्य इव मोह सहाया ॥ ४ ॥

### दोहरा

रजत सीप महुँ मास जिमि जथा भानु कर बारि ।  
 जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि ॥ ११७ ॥

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई । जदपि असत्य देत दुख अहई ॥  
 जौं सपनें सिर काटै कोई । बिनु जागें न दूरि दुख होई ॥ १ ॥  
 जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई । गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई ॥  
 आदि अंत कोउ जासु न पावा । मति अनुमानि निगम अस गावा ॥ २ ॥  
 बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । कर बिनु करम करइ बिधि नाना ॥  
 आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़ जोगी ॥ ३ ॥  
 तनु बिनु परस नयन बिनु देखा । ग्रहइ घान बिनु बास असेषा ॥  
 असि सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥ ४ ॥

### दोहरा

जेहि इमि गावहि बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ॥  
 सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥ ११८ ॥

कासीं मरत जंतु अवलोकी । जासु नाम बल करउँ बिसोकी ॥  
 सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुबर सब उर अंतरजामी ॥ १ ॥



बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं । जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥  
 सादर सुमिरन जे नर करहीं । भव बारिधि गोपद इव तरहीं ॥ २ ॥  
 राम सो परमात्मा भवानी । तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ॥  
 अस संसय आनत उर माहीं । ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं ॥ ३ ॥  
 सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना । मिटि गै सब कुतरक कै रचना ॥  
 भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । दारुन असंभावना बीती ॥ ४ ॥

## दोहरा

पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि ।  
 बोली गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि ॥ ११९ ॥

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ॥  
 तुम्ह कृपाल सबु संसठ हरेऊ । राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ ॥ १ ॥  
 नाथ कृपाँ अब गयउ बिषादा । सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा ॥  
 अब मोहि आपनि किंकरि जानी । जदपि सहज जड नारि अयानी ॥ २ ॥  
 प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू । जौं मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥  
 राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी । सर्व रहित सब उर पुर बासी ॥ ३ ॥  
 नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू । मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ॥  
 उमा बचन सुनि परम बिनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥ ४ ॥

## दोहरा

हिँयँ हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान  
 बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान ॥ १२०(क) ॥

नवान्हपारायन, पहला विश्राम

मासपारायण, चौथा विश्राम

## सोरठा

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल ।  
 कहा भुसुंङि बखानि सुना बिहग नायक गरुड ॥ १२०(ख) ॥

सो संबाद उदार जेहि बिधि भा आगें कहब ।  
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ ॥ १२०(ग) ॥

हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित ।  
में निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु ॥ १२०(घ) ॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए । बिपुल बिसद निगमागम गाए ॥  
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥ १ ॥  
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । मत हमार अस सुनहि सयानी ॥  
तदपि संत मुनि बेद पुराना । जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना ॥ २ ॥  
तस में सुमुखि सुनावउँ तोही । समुझि परइ जस कारन मोही ॥  
जब जब होइ धरम कै हानी । बाढहिं असुर अधम अभिमानी ॥ ३ ॥  
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ॥  
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा ॥ ४ ॥

### दोहरा

असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु ।  
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु ॥ १२१ ॥

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं । कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं ॥  
राम जनम के हेतु अनेका । परम बिचित्र एक तें एका ॥ १ ॥  
जनम एक दुइ कहउँ बखानी । सावधान सुनु सुमति भवानी ॥  
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । जय अरु बिजय जान सब कोऊ ॥ २ ॥  
बिप्र श्राप तें दूनउ भाई । तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥  
कनककसिपु अरु हाटक लोचन । जगत बिदित सुरपति मद मोचन ॥३ ॥  
बिजई समर बीर बिख्याता । धरि बराह बपु एक निपाता ॥  
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा । जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा ॥ ४ ॥

### दोहरा

भए निसाचर जाइ तेइ महाबीर बलवान ।  
कुंभकरन रावण सुभट सुर बिजई जग जान ॥ १२२ ॥

मुकुत न भए हते भगवाना । तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना ॥  
एक बार तिन्ह के हित लागी । धरेउ सरीर भगत अनुरागी ॥ १ ॥  
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता । दसरथ कौसल्या बिख्याता ॥  
एक कल्प एहि बिधि अवतारा । चरित्र पवित्र किए संसारा ॥ २ ॥  
एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे ॥  
संभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरइ न मारा ॥ ३ ॥  
परम सती असुराधिप नारी । तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी ॥ ४ ॥

### दोहरा

छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह ॥  
जब तेहि जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह ॥ १२३ ॥

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना । कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥  
तहाँ जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद दयऊ ॥ १ ॥  
एक जनम कर कारन एहा । जेहि लागि राम धरी नरदेहा ॥  
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी ॥ २ ॥  
नारद श्राप दीन्ह एक बारा । कल्प एक तेहि लागि अवतारा ॥  
गिरिजा चकित भई सुनि बानी । नारद बिष्नुभगत पुनि ग्यानि ॥ ३ ॥  
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ॥  
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । मुनि मन मोह आचरज भारी ॥ ४ ॥

### दोहरा

बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ न कोइ ।  
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ ॥ १२४(क) ॥

### सोरठा

कहँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।  
भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥ १२४(ख) ॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि । बह समीप सुरसरी सुहावनि ॥  
आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवरिषि मन अति भावा ॥ १ ॥  
निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा । भयउ रमापति पद अनुरागा ॥  
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी । सहज बिमल मन लागि समाधी ॥ २ ॥  
मुनि गति देखि सुरेस डेराना । कामहि बोलि कीन्ह समाणा ॥  
सहित सहाय जाहु मम हेतू । चकेउ हरषि हियँ जलचरकेतू ॥ ३ ॥  
सुनासीर मन महँ असि त्रासा । चहत देवरिषि मम पुर बासा ॥  
जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ॥ ४ ॥

#### दोहरा

सुख हाइ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज ।  
छीनि लेइ जनि जान जइ तिमि सुरपतिहि न लाज ॥ १२५ ॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ । निज मायाँ बसंत निरमयऊ ॥  
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा । कूजहिं कोकिल गुंजहि भृंगा ॥ १ ॥  
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी । काम कृसानु बढावनिहारी ॥  
रंभादिक सुरनारि नबीना । सकल असमसर कला प्रबीना ॥ २ ॥  
करहिं गान बहु तान तरंगा । बहुबिधि क्रीडहि पानि पतंगा ॥  
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ॥ ३ ॥  
काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी । निज भयँ डरेउ मनोभव पापी ॥  
सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासु । बड रखवार रमापति जासू ॥ ४ ॥

#### दोहरा

सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन ।  
गहेसि जाइ मुनि चरन तब कहि सुठि आरत बैन ॥ १२६ ॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा । कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥

नाइ चरन सिरु आयसु पाई । गयउ मदन तब सहित सहाई ॥ १ ॥  
 मुनि सुसीलता आपनि करनी । सुरपति सभाँ जाइ सब बरनी ॥  
 सुनि सब केँ मन अचरजु आवा । मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥२ ॥  
 तब नारद गवने सिव पाहीं । जिता काम अहमिति मन माहीं ॥  
 मार चरित संकरहिं सुनाए । अतिप्रिय जानि महेस सिखाए ॥ ३ ॥  
 बार बार बिनवउँ मुनि तोहीं । जिमि यह कथा सुनायहु मोहीं ॥  
 तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ । चलेहुँ प्रसंग दुराण्डु तबहूँ ॥ ४ ॥

### दोहरा

संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सोहान ।  
 भारद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥ १२७ ॥

राम कीन्ह चाहिं सोइ होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥  
 संभु बचन मुनि मन नहिं भाए । तब बिरंचि के लोक सिधाए ॥ १ ॥  
 एक बार करतल बर बीना । गावत हरि गुन गान प्रबीना ॥  
 छीरसिंधु गवने मुनिनाथा । जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥ २ ॥  
 हरषि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन रिषिहि समेता ॥  
 बोले बिहसि चराचर राया । बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ॥ ३ ॥  
 काम चरित नारद सब भाषे । जद्यपि प्रथम बरजि सिवँ राखे ॥  
 अति प्रचंड रघुपति केँ माया । जेहि न मोह अस को जग जाया ॥ ४ ॥

### दोहरा

रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान ।  
 तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं मोह मार मद मान ॥ १२८ ॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताकेँ । ग्यान बिराग हृदय नहिं जाके ॥  
 ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा । तुम्हहि कि करइ मनोभव पीरा ॥ १ ॥  
 नारद कहेउ सहित अभिमाना । कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥  
 करुनानिधि मन दीख बिचारी । उर अंकुरेउ गरब तरु भारी ॥ २ ॥

बेगि सो मै डारिहँ उखारी । पन हमार सेवक हितकारी ॥  
 मुनि कर हित मम कौतुक होई । अवसि उपाय करबि मै सोई ॥ ३ ॥  
 तब नारद हरि पद सिर नाई । चले हृदयँ अहमिति अधिकाई ॥  
 श्रीपति निज माया तब प्रेरी । सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥ ४ ॥

## दोहरा

बिरचेउ मग महुँ नगर तेहि सत जोजन बिस्तार ।  
 श्रीनिवासपुर तँ अधिक रचना बिबिध प्रकार ॥ १२९ ॥

बसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥  
 तेहिं पुर बसइ सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सेन समाजा ॥ १ ॥  
 सत सुरेस सम बिभव बिलासा । रूप तेज बल नीति निवासा ॥  
 बिस्वमोहनी तासु कुमारी । श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी ॥ २ ॥  
 सोइ हरिमाया सब गुन खानी । सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥  
 करइ स्वयंबर सो नृपबाला । आए तहँ अगनित महिपाला ॥ ३ ॥  
 मुनि कौतुकी नगर तेहिं गयऊ । पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥  
 सुनि सब चरित भूपगृहँ आए । करि पूजा नृप मुनि बैठाए ॥ ४ ॥

## दोहरा

आनि देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि ।  
 कहहु नाथ गुन दोष सब एहि के हृदयँ बिचारि ॥ १३० ॥

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी । बड़ी बार लागि रहे निहारी ॥  
 लच्छन तासु बिलोकि भुलाने । हृदयँ हरष नहिं प्रगट बखाने ॥ १ ॥  
 जो एहि बरइ अमर सोइ होई । समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥  
 सेवहिं सकल चराचर ताही । बरइ सीलनिधि कन्या जाही ॥ २ ॥  
 लच्छन सब बिचारि उर राखे । कछुक बनाइ भूप सन भाषे ॥  
 सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ॥ ३ ॥  
 करौं जाइ सोइ जतन बिचारी । जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ॥

जप तप कछु न होइ तेहि काला । हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला ॥४॥

### दोहरा

एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल ।  
जो बिलोकि रीझै कुअँरि तब मेलै जयमाल ॥ १३१ ॥

हरि सन मागौं सुंदरताई । होइहि जात गहरु अति भाई ॥  
मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥ १ ॥  
बहुबिधि बिनय कीन्हि तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥  
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुडाने । होइहि काजु हिउँ हरषाने ॥ २ ॥  
अति आरति कहि कथा सुनाई । करहु कृपा करि होहु सहाई ॥  
आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भाँति नहिं पावौं ओही ॥ ३ ॥  
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा । करहु सो बेगि दास में तोरा ॥  
निज माया बल देखि बिसाला । हियँ हँसि बोले दीनदयाला ॥ ४ ॥

### दोहरा

जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।  
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार ॥ १३२ ॥

कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी । बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥  
एहि बिधि हित तुम्हार में ठयऊ । कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥ १ ॥  
माया बिबस भए मुनि मूढा । समुझी नहिं हरि गिरा निगूढा ॥  
गवने तुरत तहाँ रिषिराई । जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई ॥ २ ॥  
निज निज आसन बैठे राजा । बहु बनाव करि सहित समाजा ॥  
मुनि मन हरष रूप अति मोरें । मोहि तजि आनहि बारिहि न भोरें ॥३॥  
मुनि हित कारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥  
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा । नारद जानि सबहिं सिर नावा ॥ ४ ॥

### दोहरा

रहे तहाँ दुइ रुद्र गन ते जानहिं सब भेउ ।  
बिप्रबेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥ १३३ ॥

जेंहि समाज बैंठे मुनि जाई । हृदयँ रूप अहमिति अधिकाई ॥  
तहँ बैठ महेस गन दोऊ । बिप्रबेष गति लखइ न कोऊ ॥ १ ॥  
करहिं कूटि नारदहि सुनाई । नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई ॥  
रीझहि राजकुअँरि छबि देखी । इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी ॥ २ ॥  
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ । हँसहि संभु गन अति सचु पाएँ ॥  
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी । समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी ॥३ ॥  
काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा । सो सरूप नृपकन्याँ देखा ॥  
मर्कट बदन भयंकर देही । देखत हृदयँ क्रोध भा तेही ॥ ४ ॥

### दोहरा

सखीँ संग लै कुअँरि तब चलि जनु राजमराल ।  
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल ॥ १३४ ॥

जेहि दिसि बैंठे नारद फूली । सो दिसि देहि न बिलोकी भूली ॥  
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं । देखि दसा हर गन मुसकाहीं ॥ १ ॥  
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला । कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला ॥  
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा । नृपसमाज सब भयउ निरासा ॥ २ ॥  
मुनि अति बिकल माँहँ मति नाठी । मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी ॥  
तब हर गन बोले मुसुकाई । निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई ॥ ३ ॥  
अस कहि दोउ भागे भयँ भारी । बदन दीख मुनि बारि निहारी ॥  
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढा । तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढा ॥ ४ ॥

### दोहरा

होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ ।  
हँसेहु हमहि सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥ १३५ ॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा । तदपि हृदयँ संतोष न आवा ॥



फरकत अधर कोप मन माहीं । सपदी चले कमलापति पाहीं ॥ १ ॥  
 देहउँ श्राप कि मरिहउँ जाई । जगत मोर उपहास कराई ॥  
 बीचहिं पंथ मिले दनुजारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥ २ ॥  
 बोले मधुर बचन सुरसाई । मुनि कहँ चले बिकल की नाई ॥  
 सुनत बचन उपजा अति क्रोधा । माया बस न रहा मन बोधा ॥ ३ ॥  
 पर संपदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरें इरिषा कपट बिसेषी ॥  
 मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु । सुरन्ह प्रेरी बिष पान करायहु ॥ ४ ॥

## दोहरा

असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु ।  
 स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु ॥ १३६ ॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावइ मनहि करहु तुम्ह सोई ॥  
 भलेहि मंद मंदेहि भल करहू । बिसमय हरष न हियँ कछु धरहू ॥ १ ॥  
 डहकि डहकि परिचेहु सब काहू । अति असंक मन सदा उछाहू ॥  
 करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा । अब लागि तुम्हहि न काहूँ साधा ॥ २ ॥  
 भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥  
 बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ॥ ३ ॥  
 कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥  
 मम अपकार कीन्ही तुम्ह भारी । नारी बिरहँ तुम्ह होब दुखारी ॥ ४ ॥

## दोहरा

श्राप सीस धरी हरषि हियँ प्रभु बहु बिनती कीन्हि ।  
 निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि ॥ १३७ ॥

जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥  
 तब मुनि अति सभीत हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥ १ ॥  
 मृषा होउ मम श्राप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ॥  
 में दुर्बचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे ॥ २ ॥

जपहु जाइ संकर सत नामा । होइहि हृदयँ तुरंत बिश्रामा ॥  
 कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें । असि परतीति तजहु जनि भोरें ॥ ३ ॥  
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥  
 अस उर धरि महि बिचरहु जाई । अब न तुम्हहि माया निअराई ॥ ४ ॥

## दोहरा

बहुबिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भए अंतरधान ॥  
 सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥ १३८ ॥

हर गन मुनिहि जात पथ देखी । बिगतमोह मन हरष बिसेषी ॥  
 अति सभीत नारद पहिं आए । गहि पद आरत बचन सुनाए ॥ १ ॥  
 हर गन हम न बिप्र मुनिराया । बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥  
 श्राप अनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीनदयाला ॥ २ ॥  
 निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । बैभव बिपुल तेज बल होऊ ॥  
 भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ।धरिहहिं बिष्णु मनुज तनु तहिआ॥३॥  
 समर मरन हरि हाथ तुम्हारा । होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ॥  
 चले जुगल मुनि पद सिर नाई । भए निसाचर कालहि पाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

एक कल्प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।  
 सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुबि भार ॥ १३९ ॥

एहि बिधि जनम करम हरि केरे । सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥  
 कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं । चारु चरित नानाबिधि करहीं ॥ १ ॥  
 तब तब कथा मुनीसन्ह गाई । परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥  
 बिबिध प्रसंग अनूप बखाने । करहिं न सुनि आचरजु सयाने ॥ २ ॥  
 हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता ॥  
 रामचंद्र के चरित सुहाए । कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए ॥ ३ ॥  
 यह प्रसंग में कहा भवानी । हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी ॥

प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी ॥ सेवत सुलभ सकल दुख हारी ॥ ४ ॥

सोरठा

सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ॥  
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥ १४० ॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी । कहउँ बिचित्र कथा बिस्तारी ॥  
जेहि कारन अज अगुन अरूपा । ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा ॥ १ ॥  
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा । बंधु समेत धरें मुनिबेषा ॥  
जासु चरित अवलोकि भवानी । सती सरीर रहिहु बौरानी ॥ २ ॥  
अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी । तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥  
लीला कीन्हि जो तेहिं अवतारा । सो सब कहिहउँ मति अनुसार ॥ ३ ॥  
भरद्वाज सुनि संकर बानी । सकुचि सप्रेम उमा मुसकानी ॥  
लगे बहुरि बरने बृषकेतू । सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥ ४ ॥

दोहरा

सो में तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन लाई ॥  
राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ ॥ १४१ ॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा । जिन्ह तें भै नरसृष्टि अनूपा ॥  
दंपति धरम आचरन नीका । अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका ॥ १ ॥  
नृप उत्तानपाद सुत तासू । ध्रुव हरि भगत भयउ सुत जासू ॥  
लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही । बेद पुरान प्रसंसहि जाही ॥ २ ॥  
देवहूति पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी ॥  
आदिदेव प्रभु दीनदयाला । जठर धरेउ जेहिं कपिल कृपाला ॥ ३ ॥  
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना । तत्व बिचार निपुन भगवाना ॥  
तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला । प्रभु आयसु सब बिधि प्रतिपाला ॥ ४ ॥

सोरठा

होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन ।  
हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति बिनु ॥ १४२ ॥

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा । नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥  
तीरथ बर नैमिष बिख्याता । अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥ १ ॥  
बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा । तहँ हियँ हरषि चलेउ मनु राजा ॥  
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा । ग्यान भगति जनु धरँ सरीरा ॥ २ ॥  
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा । हरषि नहाने निरमल नीरा ॥  
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी । धरम धुरंधर नृपरिषि जानी ॥ ३ ॥  
जहँ जँह तीरथ रहे सुहाए । मुनिन्ह सकल सादर करवाए ॥  
कृस सरीर मुनिपट परिधाना । सत समाज नित सुनहिं पुराना ॥ ४ ॥

#### दोहरा

द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।  
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥ १४३ ॥

करहिं अहार साक फल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥  
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । बारि अधार मूल फल त्यागे ॥ १ ॥  
उर अभिलाष निरंतर होई । देखा नयन परम प्रभु सोई ॥  
अगुन अखंड अनंत अनादी । जेहि चिंतहिं परमारथबादी ॥ २ ॥  
नेति नेति जेहि बेद निरूपा । निजानंद निरूपाधि अनूपा ॥  
संभु बिरंचि बिष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंस तँ नाना ॥ ३ ॥  
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई । भगत हेतु लीलातनु गहई ॥  
जौं यह बचन सत्य श्रुति भाषा । तौं हमार पूजहिं अभिलाषा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

एहि बिधि बीतें बरष षट सहस बारि आहार ।  
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥ १४४ ॥

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥

बिधि हरि तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहु बारा ॥ १ ॥  
 मागहु बर बहु भाँति लोभाए । परम धीर नहिं चलहिं चलाए ॥  
 अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा । तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ॥ २ ॥  
 प्रभु सर्बग्य दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥  
 मागु मागु बरु भै नभ बानी । परम गभीर कृपामृत सानी ॥ ३ ॥  
 मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । श्रबन रंध्र होइ उर जब आई ॥  
 हृष्टपुष्ट तन भए सुहाए । मानहुँ अबहिं भवन ते आए ॥ ४ ॥

## दोहरा

श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात ।  
 बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदयँ समात ॥ १४५ ॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु । बिधि हरि हर बंदित पद रेनु ॥  
 सेवत सुलभ सकल सुख दायक । प्रनतपाल सचराचर नायक ॥ १ ॥  
 जौं अनाथ हित हम पर नेहू । तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू ॥  
 जो सरूप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥ २ ॥  
 जो भुसुंङि मन मानस हंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥  
 देखहिं हम सो रूप भरि लोचन । कृपा करहु प्रनतारति मोचन ॥ ३ ॥  
 दंपति बचन परम प्रिय लागे । मुदुल बिनीत प्रेम रस पागे ॥  
 भगत बछल प्रभु कृपानिधाना । बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥ ४ ॥

## दोहरा

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम ।  
 लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥ १४६ ॥

सरद मयंक बदन छबि सींवा । चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा ॥  
 अधर अरुन रद सुंदर नासा । बिधु कर निकर बिनिंदक हासा ॥ १ ॥  
 नव अबुंज अंबक छबि नीकी । चितवनि ललित भावँती जी की ॥  
 भुकुटि मनोज चाप छबि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥ २ ॥

कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥  
 उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला । पदिक हार भूषण मनिजाला ॥ ३ ॥  
 केहरि कंधर चारु जनेउ । बाहु बिभूषण सुंदर तेऊ ॥  
 करि कर सरि सुभग भुजदंडा । कटि निषंग कर सर कोदंडा ॥ ४ ॥

## दोहरा

तडित विनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि ॥  
 नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँर छबि छीनि ॥ १४७ ॥

पद राजीव बरनि नहि जाहीं । मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं ॥  
 बाम भाग सोभति अनुकूला । आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला ॥ १ ॥  
 जासु अंस उपजहिं गुनखानी । अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥  
 भृकुटि बिलास जासु जग होई । राम बाम दिसि सीता सोई ॥ २ ॥  
 छबिसमुद्र हरि रूप बिलोकी । एकटक रहे नयन पट रोकी ॥  
 चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा ॥ ३ ॥  
 हरष बिबस तन दसा भुलानी । परे दंड इव गहि पद पानी ॥  
 सिर परसे प्रभु निज कर कंजा । तुरत उठाए करुनापुंजा ॥ ४ ॥

## दोहरा

बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।  
 मागहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि ॥ १४८ ॥

सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी । धरि धीरजु बोली मृदु बानी ॥  
 नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूरे सब काम हमारे ॥ १ ॥  
 एक लालसा बडि उर माही । सुगम अगम कहि जात सो नाहीं ॥  
 तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं । अगम लाग मोहि निज कृपनाईं ॥ २ ॥  
 जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई । बहु संपति मागत सकुचाई ॥  
 तासु प्रभा जान नहिं सोई । तथा हृदयँ मम संसय होई ॥ ३ ॥  
 सो तुम्ह जानहु अंतरजामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥

सकुच बिहाइ मागु नृप मोहि । मोरें नहिं अदेय कछु तोही ॥ ४ ॥

दोहरा

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहँ सतिभाउ ॥  
चाहँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ॥ १४९ ॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥  
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई । नृप तव तनय होब मैं आई ॥ १ ॥  
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें । देबि मागु बरु जो रुचि तोरे ॥  
जो बरु नाथ चतुर नृप मागा । सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा ॥२ ॥  
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई । जदपि भगत हित तुम्हहि सोहाई ॥  
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥ ३ ॥  
अस समुझत मन संसय होई । कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥  
जे निज भगत नाथ तव अहहीं । जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ॥ ४ ॥

दोहरा

सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु ॥  
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु ॥ १५० ॥

सुनु मृदु गूढ रुचिर बर रचना । कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥  
जो कछु रुचि तुम्हेर मन माहीं । मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं ॥ १ ॥  
मातु बिबेक अलोकिक तोरें । कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें ॥  
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । अवर एक बिनति प्रभु मोरी ॥ २ ॥  
सुत बिषइक तव पद रति होऊ । मोहि बड़ मूढ कहै किन कोऊ ॥  
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना।मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना ॥  
अस बरु मागि चरन गहि रहेऊ । एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥  
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी । बसहु जाइ सुरपति रजधानी ॥ ४ ॥

सोरठा

तहँ करि भोग बिसाल तात गउँ कछु काल पुनि ।  
होइहहु अवध भुआल तब में होब तुम्हार सुत ॥ १५१ ॥

इच्छामय नरबेष सँवारें । होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे ॥  
अंसन्ह सहित देह धरि ताता । करिहउँ चरित भगत सुखदाता ॥ १ ॥  
जे सुनि सादर नर बड़भागी । भव तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥  
आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया । सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥ २ ॥  
पुरउब में अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥  
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । अंतरधान भए भगवाना ॥ ३ ॥  
दंपति उर धरि भगत कृपाला । तेहिं आश्रम निवसे कछु काला ॥  
समय पाइ तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु ।  
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु ॥ १५२ ॥

#### मासपारायण पाँचवाँ विश्राम

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥  
बिस्व बिदित एक कैकय देसू । सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू ॥ १ ॥  
धरम धुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप सील बलवाना ॥  
तेहि कें भए जुगल सुत बीरा । सब गुन धाम महा रनधीरा ॥ २ ॥  
राज धनी जो जेठ सुत आही । नाम प्रतापभानु अस ताही ॥  
अपर सुतहि अरिर्मर्दन नामा । भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥ ३ ॥  
भाइहि भाइहि परम समीती । सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥  
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

जब प्रतापरबि भयउ नृप फिरी दोहाई देस ।  
प्रजा पाल अति बेदबिधि कतहुँ नहीं अघ लेस ॥ १५३ ॥



नृप हितकारक सचिव सयाना । नाम धरमरुचि सुक्र समाना ॥  
 सचिव सयान बंधु बलबीरा । आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥ १ ॥  
 सेन संग चतुरंग अपारा । अमित सुभट सब समर जुझारा ॥  
 सेन बिलोकि राठ हरषाना । अरु बाजे गहगहे निसाना ॥ २ ॥  
 बिजय हेतु कटकई बनाई । सुदिन साधि नृप चलेठ बजाई ॥  
 जँह तहँ परीं अनेक लराई । जीते सकल भूप बरिआई ॥ ३ ॥  
 सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे । लै लै दंड छाडि नृप दीन्हें ॥  
 सकल अवनि मंडल तेहि काला । एक प्रतापभानु महिपाला ॥ ४ ॥

### दोहरा

स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेसु ।  
 अरथ धरम कामादि सुख सेवइ समयँ नरेसु ॥ १५४ ॥

भूप प्रतापभानु बल पाई । कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥  
 सब दुख बरजित प्रजा सुखारी । धरमसील सुंदर नर नारी ॥ १ ॥  
 सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती । नृप हित हेतु सिखव नित नीती ॥  
 गुर सुर संत पितर महिदेवा । करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥ २ ॥  
 भूप धरम जे बेद बखाने । सकल करइ सादर सुख माने ॥  
 दिन प्रति देह बिबिध बिधि दाना । सुनहु सास्त्र बर बेद पुराना ॥ ३ ॥  
 नाना बापीं कूप तड़ागा । सुमन बाटिका सुंदर बागा ॥  
 बिप्रभवन सुरभवन सुहाए । सब तीरथन्ह बिचित्र बनाए ॥ ४ ॥

### दोहरा

जँह लागि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग ।  
 बार सहस्त्र सहस्त्र नृप किए सहित अनुराग ॥ १५५ ॥

हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना । भूप बिबेकी परम सुजाना ॥  
 करइ जे धरम करम मन बानी । बासुदेव अर्पित नृप ग्यानी ॥ १ ॥  
 चढि बर बाजि बार एक राजा । मृगया कर सब साजि समाजा ॥

बिंध्याचल गभीर बन गयऊ । मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥ २ ॥  
 फिरत बिपिन नृप दीख बराहू । जनु बन दुरेठ ससिहि ग्रसि राहू ॥  
 बड़ बिधु नहि समात मुख माहीं । मनहुँ क्रोधबस उगिलत नाहीं ॥ ३ ॥  
 कोल कराल दसन छबि गाई । तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥  
 घुरुघुरात हय आरौ पाएँ । चकित बिलोकत कान उठाएँ ॥ ४ ॥

## दोहरा

नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु ।  
 चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु ॥ १५६ ॥

आवत देखि अधिक रव बाजी । चलेउ बराह मरुत गति भाजी ॥  
 तुरत कीन्ह नृप सर संधाना । महि मिलि गयउ बिलोकत बाना ॥ १ ॥  
 तकि तकि तीर महीस चलावा । करि छल सुअर सरीर बचावा ॥  
 प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । रिस बस भूप चलेउ संग लागा ॥ २ ॥  
 गयउ दूरि घन गहन बराहू । जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू ॥  
 अति अकेल बन बिपुल कलेसू । तदपि न मृग मग तजइ नरेसू ॥ ३ ॥  
 कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठ गिरिगुहाँ गभीरा ॥  
 अगम देखि नृप अति पछिताई । फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत ।  
 खोजत ब्याकुल सरित सर जल बिनु भयउ अचेत ॥ १५७ ॥

फिरत बिपिन आश्रम एक देखा । तहँ बस नृपति कपट मुनिबेषा ॥  
 जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई ॥ १ ॥  
 समय प्रतापभानु कर जानी । आपन अति असमय अनुमानी ॥  
 गयउ न गृह मन बहुत गलानी । मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥ २ ॥  
 रिस उर मारि रंक जिमि राजा । बिपिन बसइ तापस केँ साजा ॥  
 तासु समीप गवन नृप कीन्हा । यह प्रतापरबि तेहि तब चीन्हा ॥ ३ ॥

राउ तृषित नहि सो पहिचाना । देखि सुबेष महामुनि जाना ॥  
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा । परम चतुर न कहेउ निज नामा ॥ ४ ॥

## दोहा

भूपति तृषित बिलोकि तेहिं सरबरु दीन्ह देखाइ ।  
मज्जन पान समेत ह्य कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ १५८ ॥

गै श्रम सकल सुखी नृप भयऊ । निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥  
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी । पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी ॥ १ ॥  
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें । सुंदर जुबा जीव परहेलें ॥  
चक्रबर्ति के लच्छन तोरें । देखत दया लागि अति मोरें ॥ २ ॥  
नाम प्रतापभानु अवनीसा । तासु सचिव में सुनहु मुनीसा ॥  
फिरत अहेरें परेउँ भुलाई । बडे भाग देखेउँ पद आई ॥ ३ ॥  
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा । जानत हौं कछु भल होनिहारा ॥  
कह मुनि तात भयउ अँधियारा । जोजन सतरि नगरु तुम्हारा ॥ ४ ॥

## दोहरा

निसा घोर गम्भीर बन पंथ न सुनहु सुजान ।  
बसहु आजु अस जानि तुम्ह जाएहु होत बिहान ॥ १५९(क) ॥

तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहाइ ।  
आपुनु आवइ ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जाइ ॥ १५९(ख) ॥

भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा । बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥  
नृप बहु भाति प्रसंसेउ ताही । चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥ १ ॥  
पुनि बोले मृदु गिरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करेउँ ढिठाई ॥  
मोहि मुनिस सुत सेवक जानी । नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥ २ ॥  
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना । भूप सुहृद सो कपट सयाना ॥  
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा । छल बल कीन्ह चहइ निज काजा ॥ ३ ॥  
समुझि राजसुख दुखित अराती । अवाँ अनल इव सुलगइ छाती ॥

सरल बचन नृप के सुनि काना । बयर सँभारि हृदयँ हरषाना ॥ ४ ॥

### दोहरा

कपट बोरि बानी मृदुल बोलेठ जुगुति समेत ।  
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेति ॥ १६० ॥

कह नृप जे बिग्यान निधाना । तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना ॥  
सदा रहहि अपनपौ दुराँ । सब बिधि कुसल कुबेष बनाँ ॥ १ ॥  
तेहि तें कहहि संत श्रुति टेरें । परम अकिंचन प्रिय हरि केरें ॥  
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा । होत बिरंचि सिवहि संदेहा ॥ २ ॥  
जोसि सोसि तव चरन नमामी । मो पर कृपा करिअ अब स्वामी ॥  
सहज प्रीति भूपति कै देखी । आपु बिषय बिस्वास बिसेषी ॥ ३ ॥  
सब प्रकार राजहि अपनाई । बोलेठ अधिक सनेह जनाई ॥  
सुनु सतिभाउ कहँ महिपाला । इहाँ बसत बीते बहु काला ॥ ४ ॥

### दोहरा

अब लगि मोहि न मिलेठ कोठ में न जनावउँ काहु ।  
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ॥ १६१(क) ॥

### सोरठा

तुलसी देखि सुबेषु भूलहिं मूढ न चतुर नर ।  
सुंदर केकिहि पेखु बचन सुधा सम असन अहि ॥ १६१(ख)

तातें गुपुत रहँ जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥  
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाँ । कहहु कवनि सिधि लोक रिझाँ ॥ १ ॥  
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ॥  
अब जौं तात दुरावउँ तोही । दारुन दोष घटइ अति मोही ॥ २ ॥  
जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा । तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ॥  
देखा स्वबस कर्म मन बानी । तब बोला तापस बगध्यानी ॥ ३ ॥  
नाम हमार एकतनु भाई । सुनि नृप बोले पुनि सिरु नाई ॥

कहहु नाम कर अरथ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी ॥ ४ ॥

### दोहरा

आदिसृष्टि उपजी जबहिं तब उत्पति भै मोरि ।  
नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥ १६२ ॥

जनि आचरुज करहु मन माहीं । सुत तप तैं दुर्लभ कछु नाहीं ॥  
तपबल तैं जग सृजइ बिधाता । तपबल बिष्नु भए परित्राता ॥ १ ॥  
तपबल संभु करहिं संघारा । तप तैं अगम न कछु संसारा ॥  
भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा । कथा पुरातन कहै सो लागा ॥ २ ॥  
करम धरम इतिहास अनेका । करइ निरूपन बिरति बिबेका ॥  
उदभव पालन प्रलय कहानी । कहेसि अमित आचरज बखानी ॥ ३ ॥  
सुनि महिप तापस बस भयऊ । आपन नाम कहत तब लयऊ ॥  
कह तापस नृप जानउँ तोही । कीन्हैहु कपट लाग भल मोही ॥ ४ ॥

### सोरठा

सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ।  
मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता बिचारि तव ॥ १६३ ॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा । सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥  
गुर प्रसाद सब जानिअ राजा । कहिअ न आपन जानि अकाजा ॥ १ ॥  
देखि तात तव सहज सुधाई । प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई ॥  
उपजि परि ममता मन मोरें । कहउँ कथा निज पूछे तोरें ॥ २ ॥  
अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं । मागु जो भूप भाव मन माहीं ॥  
सुनि सुबचन भूपति हरषाना । गहि पद बिनय कीन्हि बिधि नाना ॥ ३ ॥  
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । चारि पदारथ करतल मोरें ॥  
प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी । मागि अगम बर होउँ असोकी ॥ ४ ॥

### दोहरा

जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ ।  
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत होउ ॥ १६४ ॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥  
कालउ तुअ पद नाइहि सीसा । एक बिप्रकुल छाड़ि महीसा ॥ १ ॥  
तपबल बिप्र सदा बरिआरा । तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा ॥  
जौं बिप्रन्ह सब करहु नरेसा । तौ तुअ बस बिधि बिष्नु महेसा ॥ २ ॥  
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई । सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई ॥  
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला । तोर नास नहि कवनेहुँ काला ॥ ३ ॥  
हरषेठ राउ बचन सुनि तासू । नाथ न होइ मोर अब नासू ॥  
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मो कहूँ सर्ब काल कल्याना ॥ ४ ॥

#### दोहरा

एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि ।  
मिलब हमार भुलाब निज कहहु त हमहि न खोरि ॥ १६५ ॥

तार्ते मै तोहि बरजउँ राजा । कहें कथा तव परम अकाजा ॥  
छठें श्रवन यह परत कहानी । नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥ १ ॥  
यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा । नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥  
आन उपायँ निधन तव नाहीं । जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥ २ ॥  
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा । द्विज गुर कोप कहहु को राखा ॥  
राखइ गुर जौं कोप बिधाता । गुर बिरोध नहिं कोउ जग त्राता ॥ ३ ॥  
जौं न चलब हम कहे तुम्हारें । होउ नास नहिं सोच हमारें ॥  
एकहिं डर डरपत मन मोरा । प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

होहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ ।  
तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखउँ कोउँ ॥ १६६ ॥

सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं । कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥

अहइ एक अति सुगम उपाई । तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥ १ ॥  
 मम आधीन जुगुति नृप सोई । मोर जाब तव नगर न होई ॥  
 आजु लगेँ अरु जब तेँ भयऊँ । काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥ २ ॥  
 जौं न जाऊँ तव होइ अकाजू । बना आइ असमंजस आजू ॥  
 सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी । नाथ निगम असि नीति बखानी ॥ ३ ॥  
 बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं । गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं ॥  
 जलधि अगाध मौलि बह फेनू । संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥ ४ ॥

## दोहरा

अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल ।  
 मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल ॥ १६७ ॥

जानि नृपहि आपन आधीना । बोला तापस कपट प्रबीना ॥  
 सत्य कहऊँ भूपति सुनु तोही । जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही ॥ १ ॥  
 अवसि काज में करिहऊँ तोरा । मन तन बचन भगत तेँ मोरा ॥  
 जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ । फलइ तबहिं जब करिअ दुराऊ ॥ २ ॥  
 जौं नरेस में करौं रसोई । तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई ॥  
 अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई । सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥ ३ ॥  
 पुनि तिन्ह के गृह जेवँइ जोऊ । तव बस होइ भूप सुनु सोऊ ॥  
 जाइ उपाय रचहु नृप एहू । संबत भरि संकलप करेहू ॥ ४ ॥

## दोहरा

नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार ।  
 में तुम्हरे संकलप लागि दिनहिं करिब जेवनार ॥ १६८ ॥

एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरें । होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें ॥  
 करिहहिं बिप्र होम मख सेवा । तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा ॥ १ ॥  
 और एक तोहि कहऊँ लखाऊ । में एहि बेष न आठब काऊ ॥  
 तुम्हरे उपरोहित कहूँ राया । हरि आनब में करि निज माया ॥ २ ॥

तपबल तेहि करि आपु समाना । रखिहँ इहाँ बरष परवाना ॥  
 में धरि तासु बेषु सुनु राजा । सब बिधि तोर सँवारब काजा ॥ ३ ॥  
 गै निसि बहुत सयन अब कीजे । मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥  
 में तपबल तोहि तुरग समेता । पहुँचेहँ सोवतहि निकेता ॥ ४ ॥

## दोहरा

में आठब सोइ बेषु धरि पहिचानेहु तब मोहि ।  
 जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौं तोहि ॥ १६९ ॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी । आसन जाइ बैठ छलग्यानी ॥  
 श्रमित भूप निद्रा अति आई । सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥ १ ॥  
 कालकेतु निसिचर तहँ आवा । जेहिं सूकर होइ नृपहि भुलावा ॥  
 परम मित्र तापस नृप केरा । जानइ सो अति कपट घनेरा ॥ २ ॥  
 तेहि के सत सुत अरु दस भाई । खल अति अजय देव दुखदाई ॥  
 प्रथमहि भूप समर सब मारे । बिप्र संत सुर देखि दुखारे ॥ ३ ॥  
 तेहिं खल पाछिल बयरु सँभरा । तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ॥  
 जेहि रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भावी बस न जान कछु राऊ ॥ ४ ॥

## दोहरा

रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।  
 अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु ॥ १७० ॥

तापस नृप निज सखहि निहारी । हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥  
 मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । जातुधान बोला सुख पाई ॥ १ ॥  
 अब साधेँ रिपु सुनहु नरेसा । जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥  
 परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई । बिनु औषध बिआधि बिधि खोई ॥ २ ॥  
 कुल समेत रिपु मूल बहाई । चौथे दिवस मिलब में आई ॥  
 तापस नृपहि बहुत परितोषी । चला महाकपटी अतिरोषी ॥ ३ ॥  
 भानुप्रतापहि बाजि समेता । पहुँचाएसि छन माझ निकेता ॥



नृपहि नारि पहिं सयन कराई । हयगृहँ बाँधेसि बाजि बनाई ॥ ४ ॥

दोहरा

राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि ।  
लै राखेसि गिरि खोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥ १७१ ॥

आपु बिरचि उपरोहित रूपा । परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥  
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना । देखि भवन अति अचरजु माना ॥ १ ॥  
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी । उठेउ गवँहि जेहि जान न रानी ॥  
कानन गयउ बाजि चढि तेहीं । पुर नर नारि न जानेउ केहीं ॥ २ ॥  
गएँ जाम जुग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाज बधावा ॥  
उपरोहितहि देख जब राजा । चकित बिलोकि सुमिरि सोइ काजा ॥ ३ ॥  
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥  
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मते सब कहि समुझावा ॥ ४ ॥

दोहरा

नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत ।  
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत ॥ १७२ ॥

उपरोहित जेवनार बनाई । छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई ॥  
मायामय तेहिं कीन्ह रसोई । बिंजन बहु गनि सकइ न कोई ॥ १ ॥  
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा । तेहि महुँ बिप्र माँसु खल साँधा ॥  
भोजन कहँ सब बिप्र बोलाए । पद पखारि सादर बैठाए ॥ २ ॥  
परुसन जबहिं लाग महिपाला । भै अकासबानी तेहि काला ॥  
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू । है बडि हानि अन्न जनि खाहू ॥ ३ ॥  
भयउ रसोई भूसुर माँसू । सब द्विज उठे मानि बिस्वासू ॥  
भूप बिकल मति मोहँ भुलानी । भावी बस आव मुख बानी ॥ ४ ॥

दोहरा

बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार ।  
जाइ निसाचर होहु नृप मूढ सहित परिवार ॥ १७३ ॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई । घालै लिए सहित समुदाई ॥  
ईस्वर राखा धरम हमारा । जैहसि तैं समेत परिवारा ॥ १ ॥  
संबत मध्य नास तव होऊ । जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥  
नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा । भै बहोरि बर गिरा अकासा ॥ २ ॥  
बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा । नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥  
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी । भूप गयउ जहँ भोजन खानी ॥ ३ ॥  
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा । फिरेउ राउ मन सोच अपारा ॥  
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई । त्रसित परेउ अवनीं अकुलाई ॥ ४ ॥

#### दोहरा

भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर ।  
किएँ अन्यथा होइ नहिं बिप्रश्राप अति घोर ॥ १७४ ॥

अस कहि सब महिदेव सिधाए । समाचार पुरलोगन्ह पाए ॥  
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं । बिचरत हंस काग किय जेहीं ॥ १ ॥  
उपरोहितहि भवन पहुँचाई । असुर तापसहि खबरि जनाई ॥  
तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाए । सजि सजि सेन भूप सब धाए ॥ २ ॥  
घेरेन्हि नगर निसान बजाई । बिबिध भाँति नित होई लराई ॥  
जूझे सकल सुभट करि करनी । बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥ ३ ॥  
सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाँचा । बिप्रश्राप किमि होइ असाँचा ॥  
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई । निज पुर गवने जय जसु पाई ॥ ४ ॥

#### दोहरा

भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम ।  
धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम ॥ १७५ ॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । भयउ निसाचर सहित समाजा ॥

दस सिर ताहि बीस भुजदंडा । रावन नाम बीर बरिबंडा ॥ १ ॥  
 भूप अनुज अरिमर्दन नामा । भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥  
 सचिव जो रहा धरमरुचि जासू । भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू ॥ २ ॥  
 नाम बिभीषन जेहि जग जाना । बिष्णुभगत बिग्यान निधाना ॥  
 रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भए निसाचर घोर घनेरे ॥ ३ ॥  
 कामरूप खल जिनस अनेका । कुटिल भयंकर बिगत बिबेका ॥  
 कृपा रहित हिंसक सब पापी । बरनि न जाहिं बिस्व परितापी ॥ ४ ॥

## दोहरा

उपजे जदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप ।  
 तदपि महीसुर श्राप बस भए सकल अघरूप ॥ १७६ ॥

कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भाई । परम उग्र नहिं बरनि सो जाई ॥  
 गयउ निकट तप देखि बिधाता । मागहु बर प्रसन्न में ताता ॥ १ ॥  
 करि बिनती पद गहि दससीसा । बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥  
 हम काहू के मरहिं न मारें । बानर मनुज जाति दुइ बारें ॥ २ ॥  
 एवमस्तु तुम्ह बड तप कीन्हा । में ब्रह्माँ मिलि तेहि बर दीन्हा ॥  
 पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ । तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ ॥३ ॥  
 जौं एहिं खल नित करब अहारू । होइहि सब उजारि संसारू ॥  
 सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मागेसि नीद मास षट केरी ॥ ४ ॥

## दोहरा

गए बिभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर मागु ।  
 तेहिं मागेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु ॥ १७७ ॥

तिन्हि देइ बर ब्रह्म सिधाए । हरषित ते अपने गृह आए ॥  
 मय तनुजा मंदोदरि नामा । परम सुंदरी नारि ललामा ॥ १ ॥  
 सोइ मयँ दीन्हि रावनहि आनी । होइहि जातुधानपति जानी ॥  
 हरषित भयउ नारि भलि पाई । पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई ॥ २ ॥

गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी । बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी ॥  
 सोइ मय दानवँ बहुरि सँवारा । कनक रचित मनिभवन अपारा ॥ ३ ॥  
 भोगावति जसि अहिकुल बासा । अमरावति जसि सक्रनिवासा ॥  
 तिन्ह तें अधिक रम्य अति बंका । जग बिख्यात नाम तेहि लंका ॥ ४ ॥

## दोहरा

खाई सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आव ।  
 कनक कोट मनि खचित दृढ बरनि न जाइ बनाव ॥ १७८(क) ॥

हरिप्रेरित जेहिं कल्प जोइ जातुधानपति होइ ।  
 सूर प्रतापी अतुलबल दल समेत बस सोइ ॥ १७८(ख) ॥

रहे तहाँ निसिचर भट भारे । ते सब सुरन्ह समर संघारे ॥  
 अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे । रच्छक कोटि जच्छपति केरे ॥ १ ॥  
 दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥  
 देखि बिकट भट बडि कटकाई । जच्छ जीव लै गए पराई ॥ २ ॥  
 फिरि सब नगर दसानन देखा । गयठ सोच सुख भयठ बिसेषा ॥  
 सुंदर सहज अगम अनुमानी । कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥ ३ ॥  
 जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे । सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥  
 एक बार कुबेर पर धावा । पुष्पक जान जीति लै आवा ॥ ४ ॥

## दोहरा

कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।  
 मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पाइ ॥ १७९ ॥

सुख संपति सुत सेन सहाई । जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥  
 नित नूतन सब बाढत जाई । जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥ १ ॥  
 अतिबल कुंभकरन अस भ्राता । जेहि कहुँ नहिं प्रतिभट जग जाता ॥  
 करइ पान सोवइ षट मासा । जागत होइ तिहुँ पुर त्रासा ॥ २ ॥  
 जौं दिन प्रति अहार कर सोई । बिस्व बेगि सब चौपट होई ॥

समर धीर नहिं जाइ बखाना । तेहि सम अमित बीर बलवाना ॥ ३ ॥  
 बारिदनाद जेठ सुत तासू । भट महुँ प्रथम लीक जग जासू ॥  
 जेहि न होइ रन सनमुख कोई । सुरपुर नितहिं परावन होई ॥ ४ ॥

दोहरा

कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय ।  
 एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥ १८० ॥

कामरूप जानहिं सब माया । सपनेहुँ जिन्ह कैं धरम न दाया ॥  
 दसमुख बैठ सभाँ एक बारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥ १ ॥  
 सुत समूह जन परिजन नाती । गे को पार निसाचर जाती ॥  
 सेन बिलोकि सहज अभिमानी । बोला बचन क्रोध मद सानी ॥ २ ॥  
 सुनहु सकल रजनीचर जूथा । हमरे बैरी बिबुध बरूथा ॥  
 ते सनमुख नहिं करही लराई । देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥ ३ ॥  
 तेन्ह कर मरन एक बिधि होई । कहउँ बुझाइ सुनहु अब सोई ॥  
 द्विजभोजन मख होम सराधा ॥ सब कैं जाइ करहु तुम्ह बाधा ॥ ४ ॥

दोहरा

छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ ।  
 तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली भाँति अपनाइ ॥ १८१ ॥

मेघनाद कहूँ पुनि हँकरावा । दीन्ही सिख बलु बयरु बढावा ॥  
 जे सुर समर धीर बलवाना । जिन्ह कैं लरिबे कर अभिमाना ॥ १ ॥  
 तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी । उठि सुत पितु अनुसासन काँधी ॥  
 एहि बिधि सबही अग्या दीन्ही । आपुनु चलेठ गदा कर लीन्ही ॥ २ ॥  
 चलत दसानन डोलति अवनी । गर्जत गर्भ स्रवहिं सुर रवनी ॥  
 रावन आवत सुनेठ सकोहा । देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ॥ ३ ॥  
 दिगपालन्ह के लोक सुहाए । सूने सकल दसानन पाए ॥  
 पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी । देइ देवतन्ह गारि पचारी ॥ ४ ॥

रन मद मत्त फिरइ जग धावा । प्रतिभट खौजत कतहुँ न पावा ॥  
 रबि ससि पवन बरुन धनधारी । अगिनि काल जम सब अधिकारी ॥५ ॥  
 किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा । हठि सबही के पंथहिं लागा ॥  
 ब्रह्मसृष्टि जहँ लागि तनुधारी । दसमुख बसबर्ती नर नारी ॥ ६ ॥  
 आयसु करहिं सकल भयभीता । नवहिं आइ नित चरन बिनीता ॥ ७ ॥

### दोहरा

भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोठ न सुतंत्र ।  
 मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र ॥ १८२(क) ॥

देव जच्छ गंधर्व नर किंनर नाग कुमारि ।  
 जीति बरीं निज बाहुबल बहु सुंदर बर नारि ॥ १८२(ख) ॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ । सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ ॥  
 प्रथमहिं जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा । तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥१॥  
 देखत भीमरूप सब पापी । निसिचर निकर देव परितापी ॥  
 करहि उपद्रव असुर निकाया । नाना रूप धरहिं करि माया ॥ २ ॥  
 जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिं बेद प्रतिकूला ॥  
 जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥ ३ ॥  
 सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई । देव बिप्र गुरु मान न कोई ॥  
 नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना । सपनेहुँ सुनिअ न बेद पुराना ॥ ४ ॥

### छंद

जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवन सुनइ दससीसा ।  
 आपुनु उठि धावइ रहै न पावइ धरि सब घालइ खीसा ॥  
 अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहि काना ।  
 तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह बेद पुराना ॥

### सोरठा

बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं ।  
हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति ॥ १८३ ॥

### मासपारायण छठा विश्राम

बाढे खल बहु चोर जुआरा । जे लंपट परधन परदारा ॥  
मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ॥ १ ॥  
जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानेहु निसिचर सब प्रानी ॥  
अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी । परम सभीत धरा अकुलानी ॥ २ ॥  
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥  
सकल धर्म देखइ बिपरीता । कहि न सकइ रावन भय भीता ॥ ३ ॥  
धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी । गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी ॥  
निज संताप सुनाएसि रोई । काहू तँ कछु काज न होई ॥ ४ ॥

### छंद

सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्वा गे बिरंचि के लोका ।  
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका ॥  
ब्रह्माँ सब जाना मन अनुमाना मोर कछु न बसाई ।  
जा करि तँ दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई ॥

### सोरठा

धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु ।  
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥ १८४ ॥

बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ॥  
पुर बैकुंठ जान कह कोई । कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ॥ १ ॥  
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीति । प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ॥  
तेहि समाज गिरिजा में रहेऊँ । अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ॥ २ ॥  
हरि ब्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम तँ प्रगट होहिं में जाना ॥  
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं । कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥ ३ ॥

अग जगमय सब रहित बिरागी । प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥  
मोर बचन सब के मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥ ४ ॥

## दोहरा

सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर ।  
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥ १८५ ॥

## छंद

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।  
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिधुंसुता प्रिय कंता ॥  
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई ।  
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥  
जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा ।  
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥  
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबुंदा ।  
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥  
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।  
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥  
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा ।  
मन बच क्रम बानी छाडि सयानी सरन सकल सुर जूथा ॥  
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहूँ कोउ नहि जाना ।  
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥  
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।  
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥

## दोहरा

जानि सभय सुरभूमि सुनि बचन समेत सनेह ।  
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥ १८६ ॥



जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहि लागि धरिहँ नर बेसा ॥  
 अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहँ दिनकर बंस उदारा ॥ १ ॥  
 कस्यप अदिति महातप कीन्हा । तिन्ह कहँ में पूरब बर दीन्हा ॥  
 ते दसरथ कौसल्या रूपा । कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा ॥ २ ॥  
 तिन्ह के गृह अवतरिहँ जाई । रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ॥  
 नारद बचन सत्य सब करिहँ । परम सक्ति समेत अवतरिहँ ॥ ३ ॥  
 हरिहँ सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ॥  
 गगन ब्रह्मबानी सुनी काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुडाना ॥ ४ ॥  
 तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जियँ आवा ॥ ५ ॥

## दोहरा

निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ ।  
 बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥ १८७ ॥

गए देव सब निज निज धामा । भूमि सहित मन कहँ बिश्रामा ।  
 जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥ १ ॥  
 बनचर देह धरि छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥  
 गिरि तरु नख आयुध सब बीरा । हरि मारग चितवहिं मतिधीरा ॥ २ ॥  
 गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥  
 यह सब रुचिर चरित में भाषा । अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा ॥ ३ ॥  
 अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ । बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ ॥  
 धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । हृदयँ भगति मति सारँगपानी ॥ ४ ॥

## दोहरा

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।  
 पति अनुकूल प्रेम दृढ हरि पद कमल बिनीत ॥ १८८ ॥

एक बार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरें सुत नाही ॥  
 गुर गृह गयउ तुरत महिपाला । चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥ १ ॥

निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ । कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ ॥  
 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥ २ ॥  
 सृंगी रिषहि बसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥  
 भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हें ॥ ३ ॥  
 जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा । सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥  
 यह हबि बाँटि देहु नृप जाई । जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

तब अदृश्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ ॥  
 परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ ॥ १८९ ॥

तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाई । कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥  
 अर्ध भाग कौसल्याहि दीन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥ १ ॥  
 कैकेई कहँ नृप सो दयऊ । रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥  
 कौसल्या कैकेई हाथ धरि । दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥ २ ॥  
 एहि बिधि गर्भसहित सब नारी । भई हृदयँ हरषित सुख भारी ॥  
 जा दिन तें हरि गर्भहिं आए । सकल लोक सुख संपति छाए ॥ ३ ॥  
 मंदिर महँ सब राजहिं रानी । सोभा सील तेज की खानी ॥  
 सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ । जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥४॥

## दोहरा

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल ।  
 चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ॥ १९० ॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥  
 मध्यदिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोक बिश्रामा ॥ १ ॥  
 सीतल मंद सुरभि बह बाऊ । हरषित सुर संतन मन चाऊ ॥  
 बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा । स्वहिनँ सकल सरिताऽमृतधारा ॥ २ ॥  
 सो अवसर बिरंचि जब जाना । चले सकल सुर साजि बिमाना ॥

गगन बिमल सकुल सुर जूथा । गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा ॥ ३ ॥  
 बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी । गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ॥  
 अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा । बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा ॥ ४ ॥

दोहरा

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम ।  
 जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम ॥ १९१ ॥

छंद

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।  
 हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥  
 लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।  
 भूषण बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥  
 कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।  
 माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥  
 करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।  
 सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥  
 ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।  
 मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर पति थिर न रहै ॥  
 उपजा जब ग्याना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।  
 कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥  
 माता पुनि बोली सो मति डौली तजहु तात यह रूपा ।  
 कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥  
 सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।  
 यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

दोहरा

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।  
 निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥ १९२ ॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आई सब रानी ॥  
 हरषित जहँ तहँ धाई दासी । आनँद मगन सकल पुरबासी ॥ १ ॥  
 दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥  
 परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठत करत मति धीरा ॥ २ ॥  
 जाकर नाम सुनत सुभ होई । मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥  
 परमानंद पूरि मन राजा । कहा बोलाइ बजावहु बाजा ॥ ३ ॥  
 गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा । आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥  
 अनुपम बालक देखेन्हि जाई । रूप रासि गुन कहि न सिराई ॥ ४ ॥

### दोहरा

नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।  
 हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥ १९३ ॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा । कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥  
 सुमनबृष्टि अकास तें होई । ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥ १ ॥  
 बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाई । सहज संगार किँ उठि धाई ॥  
 कनक कलस मंगल धरि थारा । गावत पैठहि भूप दुआरा ॥ २ ॥  
 करि आरति नेवछावरि करहीं । बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ॥  
 मागध सूत बंदिगन गायक । पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥ ३ ॥  
 सर्बस दान दीन्ह सब काहू । जेहिं पावा राखा नहिं ताहू ॥  
 मृगमद चंदन कुंकुम कीचा । मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा ॥ ४ ॥

### दोहरा

गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद ।  
 हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ॥ १९४ ॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ ॥  
 वह सुख संपति समय समाजा । कहि न सकइ सारद अहिराजा ॥ १ ॥  
 अवधपुरी सोहइ एहि भाँती । प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥

देखि भानू जनु मन सकुचानी । तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥ २ ॥  
 अगर धूप बहु जनु अँधिआरी । उडइ अभीर मनहुँ अरुनारी ॥  
 मंदिर मनि समूह जनु तारा । नृप गृह कलस सो इंदु उदारा ॥ ३ ॥  
 भवन बेदधुनि अति मृदु बानी । जनु खग मूखर समयँ जनु सानी ॥  
 कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेइँ जात न जाना ॥ ४ ॥

## दोहरा

मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ ।  
 रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ॥ १९५ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना । दिन मनि चले करत गुनगाना ॥  
 देखि महोत्सव सुर मुनि नागा । चले भवन बरनत निज भागा ॥ १ ॥  
 औरउ एक कहँउ निज चोरी । सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरी ॥  
 काक भुसुंङि संग हम दोऊ । मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ॥ २ ॥  
 परमानंद प्रेमसुख फूले । बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥  
 यह सुभ चरित जान पै सोई । कृपा राम कै जापर होई ॥ ३ ॥  
 तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा । दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥  
 गज रथ तुरग हेम गो हीरा । दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा ॥ ४ ॥

## दोहरा

मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहि असीस ।  
 सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस ॥ १९६ ॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती । जात न जानिअ दिन अरु राती ॥  
 नामकरन कर अवसरु जानी । भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी ॥ १ ॥  
 करि पूजा भूपति अस भाषा । धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥  
 इन्ह के नाम अनेक अनूपा । मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥ २ ॥  
 जो आनंद सिंधु सुखरासी । सीकर तँ त्रैलोक सुपासी ॥  
 सो सुख धाम राम अस नामा । अखिल लोक दायक बिश्रामा ॥ ३ ॥

बिस्व भरन पोषन कर जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥  
जाके सुमिरन तें रिपु नासा । नाम सत्रुहन बेद प्रकासा ॥ ४ ॥

## दोहरा

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ।  
गुरु बसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥ १९७ ॥

धरे नाम गुरु हृदयँ बिचारी । बेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥  
मुनि धन जन सरबस सिव प्राणा । बाल केलि तेहिं सुख माना ॥ १ ॥  
बारेहि ते निज हित पति जानी । लछिमन राम चरन रति मानी ॥  
भरत सत्रुहन दूनठ भाई । प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥ २ ॥  
स्याम गौर सुंदर दोठ जोरी । निरखहिं छबि जननीं तून तोरी ॥  
चारिठ सील रूप गुन धामा । तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥ ३ ॥  
हृदयँ अनुग्रह इंद्रु प्रकासा । सूचत किरन मनोहर हासा ॥  
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना । मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥ ४ ॥

## दोहरा

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद ।  
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद ॥ १९८ ॥

काम कोटि छबि स्याम सरीरा । नील कंज बारिद गंभीरा ॥  
अरुन चरन पकंज नख जोती । कमल दलन्हि बैठे जनु मोती ॥ १ ॥  
रेख कुलिस धवज अंकुर सोहे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे ॥  
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा । नाभि गभीर जान जेहि देखा ॥ २ ॥  
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी । हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥  
उर मनिहार पदिक की सोभा । बिप्र चरन देखत मन लोभा ॥ ३ ॥  
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । आनन अमित मदन छबि छाई ॥  
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । नासा तिलक को बरनै पारे ॥ ४ ॥  
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥

चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥ ५ ॥  
 पीत झगुलिआ तनु पहिराई । जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥  
 रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा । सो जानइ सपनेहुँ जेहि देखा ॥ ६ ॥

## दोहरा

सुख संदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत ।  
 दंपति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत ॥ १९९ ॥

एहि बिधि राम जगत पितु माता । कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता ॥  
 जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी । तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥१ ॥  
 रघुपति बिमुख जतन कर कोरी । कवन सकइ भव बंधन छोरी ॥  
 जीव चराचर बस कै राखे । सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥ २ ॥  
 भृकुटि बिलास नचावइ ताही । अस प्रभु छाड़ि भजिअ कहु काही ॥  
 मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई । भजत कृपा करिहहिं रघुराई ॥ ३ ॥  
 एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा । सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा ॥  
 लै उछंग कबहुँक हलरावै । कबहुँ पालनै घालि झुलावै ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान ।  
 सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥ २०० ॥

एक बार जननी अन्हवाए । करि सिंगार पलनाँ पौढाए ॥  
 निज कुल इष्टदेव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥ १ ॥  
 करि पूजा नैबेद्य चढावा । आपु गई जहँ पाक बनावा ॥  
 बहुरि मातु तहवाँ चलि आई । भोजन करत देख सुत जाई ॥ २ ॥  
 गै जननी सिसु पहिं भयभीता । देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥  
 बहुरि आइ देखा सुत सोई । हृदयँ कंप मन धीर न होई ॥ ३ ॥  
 इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा । मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा ॥  
 देखि राम जननी अकुलानी । प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥ ४ ॥

## दोहरा

देखरावा मातहि निज अदभुत रूप अखंड ।  
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ २०१ ॥

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन । बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥  
काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ । सोठ देखा जो सुना न काऊ ॥ १ ॥  
देखी माया सब बिधि गाढी । अति सभीत जोरें कर ठाढी ॥  
देखा जीव नचावइ जाही । देखी भगति जो छोरइ ताही ॥ २ ॥  
तन पुलकित मुख बचन न आवा । नयन मूदि चरननि सिरु नावा ॥  
बिसमयवंत देखि महतारी । भए बहुरि सिसुरूप खरारी ॥ ३ ॥  
अस्तुति करि न जाइ भय माना । जगत पिता मैं सुत करि जाना ॥  
हरि जननि बहुबिधि समुझाई । यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई ॥ ४ ॥

## दोहरा

बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि ॥  
अब जनि कबहुँ ब्यापै प्रभु मोहि माया तोरि ॥ २०२ ॥

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा । अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥  
कछुक काल बीतें सब भाई । बड़े भए परिजन सुखदाई ॥ १ ॥  
चूडाकरन कीन्ह गुरु जाई । बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥  
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥ २ ॥  
मन क्रम बचन अगोचर जोई । दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई ॥  
भोजन करत बोल जब राजा । नहिं आवत तजि बाल समाजा ॥ ३ ॥  
कौसल्या जब बोलन जाई । ठुमकु ठुमकु प्रभु चलहिं पराई ॥  
निगम नेति सिव अंत न पावा । ताहि धरै जननी हठि धावा ॥ ४ ॥  
धूरस धूरि भरें तनु आए । भूपति बिहसि गोद बैठाए ॥ ५ ॥

## दोहरा



भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ ।  
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥ २०३ ॥

बालचरित अति सरल सुहाए । सारद सेष संभु श्रुति गाए ॥  
जिन कर मन इन्ह सन नहिं राता । ते जन बंचित किए बिधाता ॥ १ ॥  
भए कुमार जबहिं सब भ्राता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥  
गुरगृहँ गए पढन रघुराई । अलप काल बिद्या सब आई ॥ २ ॥  
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी । सो हरि पढ यह कौतुक भारी ॥  
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला । खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥ ३ ॥  
करतल बान धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥  
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई । थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥ ४ ॥

#### दोहरा

कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ।  
प्राणहु ते प्रिय लागत सब कहँ राम कृपाल ॥ २०४ ॥

बंधु सखा संग लेहिं बोलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥  
पावन मृग मारहिं जियँ जानी । दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी ॥ १ ॥  
जे मृग राम बान के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥  
अनुज सखा सँग भोजन करहीं । मातु पिता अग्या अनुसरहीं ॥ २ ॥  
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥  
बेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥ ३ ॥  
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥  
आयसु मागि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरषइ मन राजा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।  
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ॥ २०५ ॥

यह सब चरित कहा मैं गाई । आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥

बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी । बसहि बिपिन सुभ आश्रम जानी ॥ १ ॥  
 जहँ जप जग्य मुनि करही । अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥  
 देखत जग्य निसाचर धावहि । करहि उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥ २ ॥  
 गाधितनय मन चिंता ब्यापी । हरि बिनु मरहि न निसिचर पापी ॥  
 तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा । प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥ ३ ॥  
 एहुँ मिस देखौं पद जाई । करि बिनती आनौ दोउ भाई ॥  
 ग्यान बिराग सकल गुन अयना । सो प्रभु मै देखब भरि नयना ॥ ४ ॥

## दोहरा

बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार ।  
 करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार ॥ २०६ ॥

मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयऊ तै बिप्र समाजा ॥  
 करि दंडवत मुनिहि सनमानी । निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥ १ ॥  
 चरन पखारि कीन्हि अति पूजा । मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥  
 बिबिध भाँति भोजन करवावा । मुनिवर हृदयँ हरष अति पावा ॥ २ ॥  
 पुनि चरननि मेले सुत चारी । राम देखि मुनि देह बिसारी ॥  
 भए मगन देखत मुख सोभा । जनु चकोर पूरन ससि लोभा ॥ ३ ॥  
 तब मन हरषि बचन कह राऊ । मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ ॥  
 केहि कारन आगमन तुम्हारा । कहहु सो करत न लावउँ बारा ॥ ४ ॥  
 असुर समूह सतावहिं मोही । मै जाचन आयउँ नृप तोही ॥  
 अनुज समेत देहु रघुनाथा । निसिचर बध मै होब सनाथा ॥ ५ ॥

## दोहरा

देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान ।  
 धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान ॥ २०७ ॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी । हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी ॥  
 चौथेंपन पायउँ सुत चारी । बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥ १ ॥

मागहु भूमि धेनु धन कोसा । सर्वस देँ आजु सहरोसा ॥  
 देह प्रान तें प्रिय कछु नाही । सोउ मुनि देँ निमिष एक माही ॥ २ ॥  
 सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाई । राम देत नहिं बनइ गोसाई ॥  
 कहँ निसिचर अति घोर कठोरा । कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ॥ ३ ॥  
 सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी । हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी ॥  
 तब बसिष्ट बहु निधि समुझावा । नृप संदेह नास कहँ पावा ॥ ४ ॥  
 अति आदर दोउ तनय बोलाए । हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥  
 मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ । तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥ ५ ॥

## दोहरा

साँपे भूप रिषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस ।  
 जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस ॥ २०८(क) ॥

## सोरठा

पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन ॥  
 कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन ॥ २०८(ख)

अरुन नयन उर बाहु बिसाला । नील जलज तनु स्याम तमाला ॥  
 कटि पट पीत कसें बर भाथा । रुचिर चाप सायक दुहँ हाथा ॥ १ ॥  
 स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । बिस्वामित्र महानिधि पाई ॥  
 प्रभु ब्रह्मन्यदेव मै जाना । मोहि निति पिता तजेहु भगवाना ॥ २ ॥  
 चले जात मुनि दीन्हि दिखाई । सुनि ताइका क्रोध करि धाई ॥  
 एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥ ३ ॥  
 तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही । बिद्यानिधि कहँ बिद्या दीन्ही ॥  
 जाते लाग न छुधा पिपासा । अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ॥ ४ ॥

## दोहरा

आयुष सब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि ।  
 कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥ २०९ ॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥  
 होम करन लागे मुनि झारी । आपु रहे मख कीं रखवारी ॥ १ ॥  
 सुनि मारीच निसाचर क्रोही । लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥  
 बिनु फर बान राम तेहि मारा । सत जोजन गा सागर पारा ॥ २ ॥  
 पावक सर सुबाहु पुनि मारा । अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥  
 मारि असुर द्विज निर्मयकारी । अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥ ३ ॥  
 तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥  
 भगति हेतु बहु कथा पुराना । कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥ ४ ॥  
 तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥  
 धनुषजग्य मुनि रघुकुल नाथा । हरषि चले मुनिबर के साथ ॥ ५ ॥  
 आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥  
 पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥ ६ ॥

### दोहरा

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर ।  
 चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥ २१० ॥

### छंद

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।  
 देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥  
 अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही ।  
 अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही ॥  
 धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।  
 अति निर्मल बानीं अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ॥  
 मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।  
 राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ॥  
 मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।  
 देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना ॥  
 बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना ।

पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥  
 जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।  
 सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥  
 एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।  
 जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥

## दोहरा

अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ।  
 तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥ २११ ॥

## मासपारायण सातवाँ विश्राम

चले राम लछिमन मुनि संगी । गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥  
 गाधिसूनु सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥ १ ॥  
 तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए । बिबिध दान महिदेवन्हि पाए ॥  
 हरषि चले मुनि बृंद सहाया । बेगि बिदेह नगर निअराया ॥ २ ॥  
 पुर रम्यता राम जब देखी । हरषे अनुज समेत बिसेषी ॥  
 बापीं कूप सरित सर नाना । सलिल सुधासम मनि सोपाना ॥ ३ ॥  
 गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा । कूजत कल बहुबरन बिहंगा ॥  
 बरन बरन बिकसे बन जाता । त्रिबिध समीर सदा सुखदाता ॥ ४ ॥

## दोहरा

सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास ।  
 फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥ २१२ ॥

बनइ न बरनत नगर निकाई । जहाँ जाइ मन तहँई लोभाई ॥  
 चारु बजारु बिचित्र अँबारी । मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी ॥ १ ॥  
 धनिक बनिक बर धनद समाना । बैठ सकल बस्तु लै नाना ॥  
 चौहट सुंदर गलीं सुहाई । संतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥ २ ॥  
 मंगलमय मंदिर सब केरै । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरै ॥

पुर नर नारि सुभग सुचि संता । धरमसील ग्यानी गुनवंता ॥ ३ ॥  
 अति अनूप जहँ जनक निवासू । बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥  
 होत चकित चित कोट बिलोकी । सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥ ४ ॥

## दोहरा

धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति ।  
 सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥ २१३ ॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा ॥  
 बनी बिसाल बाजि गज साला । हय गय रथ संकुल सब काला ॥ १ ॥  
 सूर सचिव सेनप बहुतेरे । नृपगृह सरिस सदन सब केरे ॥  
 पुर बाहेर सर सारित समीपा । उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा ॥ २ ॥  
 देखि अनूप एक अँवराई । सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥  
 कौसिक कहेउ मोर मनु माना । इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना ॥ ३ ॥  
 भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता । उतरे तहँ मुनिबृंद समेता ॥  
 बिस्वामित्र महामुनि आए । समाचार मिथिलापति पाए ॥ ४ ॥

## दोहरा

संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति ।  
 चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥ २१४ ॥

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा । दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥  
 बिप्रबृंद सब सादर बंदे । जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥ १ ॥  
 कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा । बिस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥  
 तेहि अवसर आए दोउ भाई । गए रहे देखन फुलवाई ॥ २ ॥  
 स्याम गौर मृदु बयस किसोरा । लोचन सुखद बिस्व चित चोरा ॥  
 उठे सकल जब रघुपति आए । बिस्वामित्र निकट बैठाए ॥ ३ ॥  
 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता । बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥  
 मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर ।  
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥ २१५ ॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक । मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक ॥  
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥ १ ॥  
सहज बिरागरूप मनु मोरा । थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥  
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ । कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥ २ ॥  
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा । बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥  
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका । बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥ ३ ॥  
ए प्रिय सबहि जहाँ लगे प्राणी । मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ॥  
रघुकुल मनि दसरथ के जाए । मम हित लागि नरेस पठाए ॥ ४ ॥

## दोहरा

रामु लखनु दोउ बंधुबर रूप सील बल धाम ।  
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥ २१६ ॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ । कहि न सकउँ निज पुन्य प्राभाऊ ॥  
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता । आनँदहू के आनँद दाता ॥ १ ॥  
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि । कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥  
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥ २ ॥  
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥  
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू । चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ॥ ३ ॥  
सुंदर सदनु सुखद सब काला । तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला ॥  
करि पूजा सब बिधि सेवकाई । गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥ ४ ॥

## दोहरा

रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिश्रामु ।  
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥ २१७ ॥

लखन हृदयँ लालसा बिसेषी । जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥  
 प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥ १ ॥  
 राम अनुज मन की गति जानी । भगत बछलता हियँ हुलसानी ॥  
 परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुर अनुसासन पाई ॥ २ ॥  
 नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥  
 जौं राउर आयसु में पावौं । नगर देखाइ तुरत लै आवौ ॥ ३ ॥  
 सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती । कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥  
 धरम सेतु पालक तुम्ह ताता । प्रेम बिबस सेवक सुखदाता ॥ ४ ॥

दोहरा

जाइ देखी आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ ।  
 करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखाइ ॥ २१८ ॥

मासपारायण, आठवाँ विश्राम  
 नवान्हपारायण, दूसरा विश्राम

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुख दाता ॥  
 बालक बंदि देखि अति सोभा । लगे संग लोचन मनु लोभा ॥ १ ॥  
 पीत बसन परिकर कटि भाथा । चारु चाप सर सोहत हाथा ॥  
 तन अनुहरत सुचंदन खोरी । स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥ २ ॥  
 केहरि कंधर बाहु बिसाला । उर अति रुचिर नागमनि माला ॥  
 सुभग सोन सरसीरुह लोचन । बदन मयंक तापत्रय मोचन ॥ ३ ॥  
 कानन्हि कनक फूल छबि देहीं । चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं ॥  
 चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी । तिलक रेखा सोभा जनु चाँकी ॥ ४ ॥

दोहरा

रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक कुंचित केस ।  
 नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ॥ २१९ ॥



देखन नगरु भूपसुत आए । समाचार पुरबासिन्ह पाए ॥  
 धाए धाम काम सब त्यागी । मनहु रंक निधि लूटन लागी ॥ १ ॥  
 निरखि सहज सुंदर दोउ भाई । होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥  
 जुबतीं भवन झरोखन्हि लागीं । निरखहिं राम रूप अनुरागीं ॥ २ ॥  
 कहहिं परसपर बचन सप्रीती । सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती ॥  
 सुर नर असुर नाग मुनि माहीं । सोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीं ॥ ३ ॥  
 बिष्णु चारि भुज बिधि मुख चारी । बिकट बेष मुख पंच पुरारी ॥  
 अपर देउ अस कोउ न आही । यह छबि सखि पटतरिअ जाही ॥ ४ ॥

## दोहरा

बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख घाम ।  
 अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥ २२० ॥

कहहु सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥  
 कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥ १ ॥  
 ए दोऊ दसरथ के ढोटा । बाल मरालन्हि के कल जोटा ॥  
 मुनि कौसिक मख के रखवारे । जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ॥ २ ॥  
 स्याम गात कल कंज बिलोचन । जो मारीच सुभुज मदु मोचन ॥  
 कौसल्या सुत सो सुख खानी । नामु रामु धनु सायक पानी ॥ ३ ॥  
 गौर किसोर बेषु बर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ॥  
 लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥ ४ ॥

## दोहरा

बिप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिबधू उधारि ।  
 आए देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि ॥ २२१ ॥

देखि राम छबि कोउ एक कहई । जोगु जानकिहि यह बरु अहई ॥  
 जौ सखि इन्हहि देख नरनाहू । पन परिहरि हठि करइ बिबाहू ॥ १ ॥  
 कोउ कह ए भूपति पहिचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ॥

सखि परंतु पनु राउ न तजई । बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई ॥ २ ॥  
 कोउ कह जौं भल अहइ बिधाता । सब कहँ सुनिअ उचित फलदाता ॥  
 तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू । नाहिन आलि इहाँ संदेहू ॥ ३ ॥  
 जौ बिधि बस अस बनै सँजोगू । तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥  
 सखि हमरें आरति अति तातें । कबहुँक ए आवहिं एहि नातें ॥ ४ ॥

## दोहरा

नाहिं त हम कहँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि ।  
 यह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि ॥ २२२ ॥

बोली अपर कहेहु सखि नीका । एहिं बिआह अति हित सबहीं का ॥  
 कोउ कह संकर चाप कठोरा । ए स्यामल मृदुगात किसोरा ॥ १ ॥  
 सबु असमंजस अहइ सयानी । यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी ॥  
 सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ॥२॥  
 परसि जासु पद पंकज धूरी । तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥  
 सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें । यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें ॥ ३ ॥  
 जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी । तेहिं स्यामल बरु रचेउ बिचारी ॥  
 तासु बचन सुनि सब हरषानीं । ऐसेइ होउ कहहिं मुदु बानी ॥ ४ ॥

## दोहरा

हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद ।  
 जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥ २२३ ॥

पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई । जहँ धनुमख हित भूमि बनाई ॥  
 अति बिस्तार चारु गच ढारी । बिमल बेदिका रुचिर सँवारी ॥ १ ॥  
 चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । रचे जहाँ बेठहिं महिपाला ॥  
 तेहि पाछें समीप चहुँ पासा । अपर मंच मंडली बिलासा ॥ २ ॥  
 कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई । बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥  
 तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए । धवल धाम बहुबरन बनाए ॥ ३ ॥

जहँ बैठें देखहिं सब नारी । जथा जोगु निज कुल अनुहारी ॥  
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना । सादर प्रभुहि देखावहिं रचना ॥ ४ ॥

दोहरा

सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात ।  
तन पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भात ॥ २२४ ॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने । प्रीति समेत निकेत बखाने ॥  
निज निज रुचि सब लेंहिं बोलाई । सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥ १ ॥  
राम देखावहिं अनुजहि रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥  
लव निमेष महुँ भुवन निकाया । रचइ जासु अनुसासन माया ॥ २ ॥  
भगति हेतु सोइ दीनदयाला । चितवत चकित धनुष मखसाला ॥  
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥ ३ ॥  
जासु त्रास डर कहँ डर होई । भजन प्रभाउ देखावत सोई ॥  
कहि बातें मृदु मधुर सुहाई । किए बिदा बालक बरिआई ॥ ४ ॥

दोहरा

सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।  
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥ २२५ ॥

निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा । सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा ॥  
कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥ १ ॥  
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई । लगे चरन चापन दोउ भाई ॥  
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी । करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥ २ ॥  
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते । गुर पद कमल पलोत्त प्रीते ॥  
बारबार मुनि अग्या दीन्ही । रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही ॥ ३ ॥  
चापत चरन लखनु उर लाएँ । सभय सप्रेम परम सचु पाएँ ॥  
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता । पौढे धरि उर पद जलजाता ॥ ४ ॥

दोहरा

उठे लखन निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान ॥  
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥ २२६ ॥

सकल सौच करि जाइ नहाए । नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥  
समय जानि गुर आयसु पाई । लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥ १ ॥  
भूप बागु बर देखेउ जाई । जहँ बसंत रितु रही लोभाई ॥  
लागे बिटप मनोहर नाना । बरन बरन बर बेलि बिताना ॥ २ ॥  
नव पल्लव फल सुमान सुहाए । निज संपति सुर रूख लजाए ॥  
चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥ ३ ॥  
मध्य बाग सरु सोह सुहावा । मनि सोपान बिचित्र बनावा ॥  
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा । जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥ ४ ॥

## दोहरा

बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत ।  
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥ २२७ ॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालिगन । लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥  
तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥ १ ॥  
संग सखीं सब सुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी ॥  
सर समीप गिरिजा गृह सोहा । बरनि न जाइ देखि मनु मोहा ॥ २ ॥  
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता । गई मुदित मन गौरि निकेता ॥  
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग बरु मागा ॥ ३ ॥  
एक सखी सिय संगु बिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥  
तेहि दोउ बंधु बिलोके जाई । प्रेम बिबस सीता पहिं आई ॥ ४ ॥

## दोहरा

तासु दसा देखि सखिन्ह पुलक गात जलु नैन ।  
कहु कारनु निज हरष कर पूछहि सब मृदु बैन ॥ २२८ ॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए । बय किसोर सब भाँति सुहाए ॥

स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥ १ ॥  
 सुनि हरषीं सब सखीं सयानी । सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥  
 एक कहइ नृपसुत तेइ आली । सुने जे मुनि सँग आए काली ॥ २ ॥  
 जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । कीन्ह स्वबस नगर नर नारी ॥  
 बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू । अवसि देखिअहिं देखन जोगू ॥ ३ ॥  
 तासु वचन अति सियहि सुहाने । दरस लागि लोचन अकुलाने ॥  
 चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥ ४ ॥

## दोहरा

सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ॥  
 चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ॥ २२९ ॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥  
 मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही ॥ मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही ॥ १ ॥  
 अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥  
 भए बिलोचन चारु अचंचल । मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥ २ ॥  
 देखि सीय सोभा सुखु पावा । हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥  
 जनु बिरंचि सब निज निपुनाई । बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥ ३ ॥  
 सुंदरता कहँ सुंदर करई । छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई ॥  
 सब उपमा कबि रहे जुठारी । केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी ॥ ४ ॥

## दोहरा

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि ।  
 बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥ २३० ॥

तात जनकतनया यह सोई । धनुषजग्य जेहि कारन होई ॥  
 पूजन गौरि सखीं लै आई । करत प्रकासु फिरइ फुलवाई ॥ १ ॥  
 जासु बिलोकि अलोकिक सोभा । सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥  
 सो सबु कारन जान बिधाता । फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥ २ ॥

रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ । मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥  
 मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी । जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥ ३ ॥  
 जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी । नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी ॥  
 मंगन लहहि न जिन्ह कै नाहीं । ते नरबर थोरे जग माहीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

करत बतकहि अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।  
 मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥ २३१ ॥

चितवहि चकित चहूँ दिसि सीता । कहँ गए नृपकिसोर मनु चिंता ॥  
 जहँ बिलोक मृग सावक नैनी । जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥ १ ॥  
 लता ओट तब सखिन्ह लखाए । स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥  
 देखि रूप लोचन ललचाने । हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥ २ ॥  
 थके नयन रघुपति छबि देखें । पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें ॥  
 अधिक सनेहँ देह भै भोरी । सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥ ३ ॥  
 लोचन मग रामहि उर आनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥  
 जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी । कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥४॥

## दोहरा

लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।  
 निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥ २३२ ॥

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा । नील पीत जलजाभ सरीरा ॥  
 मोरपंख सिर सोहत नीके । गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के ॥ १ ॥  
 भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए । श्रवन सुभग भूषन छबि छाए ॥  
 बिकट भृकुटि कच घूघरवारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥ २ ॥  
 चारु चिबुक नासिका कपोला । हास बिलास लेत मनु मोला ॥  
 मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं । जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥ ३ ॥  
 उर मनि माल कंबु कल गीवा । काम कलभ कर भुज बलसीवा ॥

सुमन समेत बाम कर दोना । सावँर कुअँर सखी सुठि लोना ॥ ४ ॥

दोहरा

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान ।  
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥ २३३ ॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ॥  
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥ १ ॥  
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे । सनमुख दोठ रघुसिंघ निहारे ॥  
नख सिख देखि राम कै सोभा । सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ॥२ ॥  
परबस सखिन्ह लखी जब सीता । भयउ गहरु सब कहहि सभीता ॥  
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली । अस कहि मन बिहसी एक आली ॥ ३ ॥  
गूढ गिरा सुनि सिय सकुचानी । भयउ बिलंबु मातु भय मानी ॥  
धरि बडि धीर रामु उर आने । फिरि अपनपउ पितुबस जाने ॥ ४ ॥

दोहरा

देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि ।  
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढइ प्रीति न थोरि ॥ २३४ ॥

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति । चली राखि उर स्यामल मूरति ॥  
प्रभु जब जात जानकी जानी । सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥ १ ॥  
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही । चारु चित भीतीं लिख लीन्ही ॥  
गई भवानी भवन बहोरी । बंदि चरन बोली कर जोरी ॥ २ ॥  
जय जय गिरिबरराज किसोरी । जय महेस मुख चंद चकोरी ॥  
जय गज बदन षडानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥ ३ ॥  
नहिं तव आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना ॥  
भव भव बिभव पराभव कारिनि । बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि ॥४॥

दोहरा

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख ।  
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ॥ २३५ ॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी । बरदायनी पुरारि पिआरी ॥  
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे । सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥ १ ॥  
मोर मनोरथु जानहु नीकें । बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥  
कीन्हेऊँ प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे बैदेहीं ॥ २ ॥  
बिनय प्रेम बस भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ॥  
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ । बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥ ३ ॥  
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥  
नारद बचन सदा सुचि साचा । सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥ ४ ॥

छंद

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।  
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥  
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।  
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।  
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥ २३६ ॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ॥  
राम कहा सबु कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ छुअत छल नाही ॥ १ ॥  
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥  
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥ २ ॥  
करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥  
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई । संध्या करन चले दोउ भाई ॥ ३ ॥  
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥



बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं । सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥ ४ ॥

### दोहरा

जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक ।  
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ॥ २३७ ॥

घटइ बढइ बिरहनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥  
कोक सिकप्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥ १ ॥  
बैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥  
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी । गुरु पहिं चले निसा बड़ि जानी ॥ २ ॥  
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥  
बिगत निसा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥ ३ ॥  
उदउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥  
बोले लखनु जोरि जुग पानी । प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु बानी ॥ ४ ॥

### दोहरा

अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।  
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥ २३८ ॥

नृप सब नखत करहिं उजिआरी । टारि न सकहिं चाप तम भारी ॥  
कमल कोक मधुकर खग नाना । हरषे सकल निसा अवसाना ॥ १ ॥  
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे । होइहहिं दूटें धनुष सुखारे ॥  
उयउ भानु बिनु श्रम तम नासा । दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥ २ ॥  
रबि निज उदय ब्याज रघुराया । प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया ॥  
तव भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी ॥ ३ ॥  
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥  
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए । चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥ ४ ॥  
सतानंदु तब जनक बोलाए । कौंसिक मुनि पहिं तुरत पठाए ॥  
जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई । हरषे बोलि लिए दोउ भाई ॥ ५ ॥

## दोहरा

सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ ।  
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ ॥ २३९ ॥

सीय स्वयंबरु देखिअ जाई । ईसु काहि धौं देइ बड़ाई ॥  
लखन कहा जस भाजनु सोई । नाथ कृपा तव जापर होई ॥ १ ॥  
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी । दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी ॥  
पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुषमख साला ॥ २ ॥  
रंगभूमि आए दोउ भाई । असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई ॥  
चले सकल गृह काज बिसारी । बाल जुबान जरठ नर नारी ॥ ३ ॥  
देखी जनक भीर भै भारी । सुचि सेवक सब लिए हँकारी ॥  
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू । आसन उचित देहू सब काहू ॥ ४ ॥

## दोहरा

कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि ।  
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥ २४० ॥

राजकुअँर तेहि अवसर आए । मनहुँ मनोहरता तन छाए ॥  
गुन सागर नागर बर बीरा । सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥ १ ॥  
राज समाज बिराजत रूरे । उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ॥  
जिन्ह केँ रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥ २ ॥  
देखहिं रूप महा रनधीरा । मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा ॥  
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥ ३ ॥  
रहे असुर छल छोनिप बेषा । तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥  
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई । नरभूषन लोचन सुखदाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप ।  
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥ २४१ ॥

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा । बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥  
 जनक जाति अवलोकहिं कैसैं । सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें ॥ १ ॥  
 सहित बिदेह बिलोकहिं रानी । सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥  
 जोगिन्ह परम तत्वमय भासा । सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा ॥ २ ॥  
 हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता । इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥  
 रामहि चितव भायँ जेहि सीया । सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ॥ ३ ॥  
 उर अनुभवति न कहि सक सोऊ । कवन प्रकार कहै कबि कोऊ ॥  
 एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ । तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ ॥ ४ ॥

## दोहरा

राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर ।  
 सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर ॥ २४२ ॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥  
 सरद चंद निंदक मुख नीके । नीरज नयन भावते जी के ॥ १ ॥  
 चितवत चारु मार मनु हरनी । भावति हृदय जाति नहीं बरनी ॥  
 कल कपोल श्रुति कुंडल लोला । चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥ २ ॥  
 कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा । भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥  
 भाल बिसाल तिलक झलकाहीं । कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं ॥३ ॥  
 पीत चौतर्नी सिरन्हि सुहाई । कुसुम कर्ली बिच बीच बनाई ॥  
 रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ । जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ ॥ ४ ॥

## दोहरा

कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल ।  
 बृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल ॥ २४३ ॥

कटि तूनीर पीत पट बाँधे । कर सर धनुष बाम बर काँधे ॥  
 पीत जग्य उपबीत सुहाए । नख सिख मंजु महाछबि छाए ॥ १ ॥  
 देखि लोग सब भए सुखारे । एकटक लोचन चलत न तारे ॥

हरषे जनकु देखि दोउ भाई । मुनि पद कमल गहे तब जाई ॥ २ ॥  
 करि बिनती निज कथा सुनाई । रंग अवनि सब मुनिहि देखाई ॥  
 जहँ जहँ जाहि कुअँर बर दोऊ । तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ ॥ ३ ॥  
 निज निज रुख रामहि सबु देखा । कोउ न जान कछु मरमु बिसेषा ॥  
 भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ । राजाँ मुदित महासुख लहेऊ ॥ ४ ॥

### दोहरा

सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल ।  
 मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥ २४४ ॥

प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे । जनु राकेस उदय भएँ तारे ॥  
 असि प्रतीति सब के मन माहीं । राम चाप तोरब सक नाहीं ॥ १ ॥  
 बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला । मेलिहि सीय राम उर माला ॥  
 अस बिचारि गवनहु घर भाई । जसु प्रतापु बलु तेजु गवाई ॥ २ ॥  
 बिहसे अपर भूप सुनि बानी । जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥  
 तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा । बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा ॥ ३ ॥  
 एक बार कालउ किन होऊ । सिय हित समर जितब हम सोऊ ॥  
 यह सुनि अवर महिप मुसकाने । धरमसील हरिभगत सयाने ॥ ४ ॥

### सोरठा

सीय बिआहबि राम गरब दूर करि नृपन्ह के ॥  
 जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे ॥ २४५ ॥

व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई । मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ॥  
 सिख हमारि सुनि परम पुनीता । जगदंबा जानहु जियँ सीता ॥ १ ॥  
 जगत पिता रघुपतिहि बिचारी । भरि लोचन छबि लेहु निहारी ॥  
 सुंदर सुखद सकल गुन रासी । ए दोउ बंधु संभु उर बासी ॥ २ ॥  
 सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ॥  
 करहु जाइ जा कहँ जोई भावा । हम तौ आजु जनम फलु पावा ॥ ३ ॥

अस कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप बिलोकन लागे ॥  
देखहिं सुर नभ चढे बिमाना । बरषहिं सुमन करहिं कल गाना ॥ ४ ॥

दोहरा

जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाई ।  
चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाई ॥ २४६ ॥

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी । जगदंबिका रूप गुन खानी ॥  
उपमा सकल मोहि लघु लागीं । प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ॥ १ ॥  
सिय बरनिअ तेइ उपमा देई । कुकबि कहाइ अजसु को लेई ॥  
जौ पटतरिअ तीय सम सीया । जग असि जुबति कहाँ कमनीया ॥ २ ॥  
गिरा मुखर तन अरध भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥  
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही । कहिअ रमासम किमि बैदेही ॥ ३ ॥  
जौ छबि सुधा पयोनिधि होई । परम रूपमय कच्छप सोई ॥  
सोभा रजु मंदरु सिंगारु । मथै पानि पंकज निज मारु ॥ ४ ॥

दोहरा

एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल ।  
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय समतूल ॥ २४७ ॥

चलिं संग लै सखीं सयानी । गावत गीत मनोहर बानी ॥  
सोह नवल तनु सुंदर सारी । जगत जननि अतुलित छबि भारी ॥ १ ॥  
भूषन सकल सुदेस सुहाए । अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए ॥  
रंगभूमि जब सिय पगु धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ॥ २ ॥  
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई । बरषि प्रसून अपछरा गाई ॥  
पानि सरोज सोह जयमाला । अवचट चितए सकल भुआला ॥ ३ ॥  
सीय चकित चित रामहि चाहा । भए मोहबस सब नरनाहा ॥  
मुनि समीप देखे दोठ भाई । लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥ ४ ॥

दोहरा

गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि ॥  
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ॥ २४८ ॥

राम रूपु अरु सिय छबि देखें । नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें ॥  
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं । बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं ॥ १ ॥  
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई । मति हमारि असि देहि सुहाई ॥  
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहु । सीय राम कर करै बिबाहू ॥ २ ॥  
जग भल कहहि भाव सब काहू । हठ कीन्हे अंतहुँ उर दाहू ॥  
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू । बरु साँवरो जानकी जोगू ॥ ३ ॥  
तब बंदीजन जनक बौलाए । बिरिदावली कहत चलि आए ॥  
कह नृप जाइ कहहु पन मोरा । चले भाट हियँ हरषु न थोरा ॥ ४ ॥

### दोहरा

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।  
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ॥ २४९ ॥

नृप भुजबल बिधु सिवधनु राहू । गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥  
रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गवँहिं सिधारे ॥ १ ॥  
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा । राज समाज आजु जोइ तोरा ॥  
त्रिभुवन जय समेत बैदेही ॥ बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ॥ २ ॥  
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । भटमानी अतिसय मन माखे ॥  
परिकर बाँधि उठे अकुलाई । चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ॥ ३ ॥  
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥  
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं । चाप समीप महीप न जाहीं ॥ ४ ॥

### दोहरा

तमकि धरहिं धनु मूढ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।  
मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥ २५० ॥

भूप सहस दस एकहि बारा । लगे उठावन टरइ न टारा ॥

डगड़ न संभु सरासन कैसें । कामी बचन सती मनु जैसें ॥ १ ॥  
 सब नृप भए जोगु उपहासी । जैसें बिनु बिराग संन्यासी ॥  
 कीरति बिजय बीरता भारी । चले चाप कर बरबस हारी ॥ २ ॥  
 श्रीहत भए हारि हियँ राजा । बैठे निज निज जाइ समाजा ॥  
 नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । बोले बचन रोष जनु साने ॥ ३ ॥  
 दीप दीप के भूपति नाना । आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥  
 देव दनुज धरि मनुज सरीरा । बिपुल बीर आए रनधीरा ॥ ४ ॥

## दोहरा

कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय ।  
 पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥ २५१ ॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा । काहुँ न संकर चाप चढावा ॥  
 रहउ चढाउब तोरब भाई । तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई ॥ १ ॥  
 अब जनि कोउ माखै भट मानी । बीर बिहीन मही में जानी ॥  
 तजहु आस निज निज गृह जाहू । लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू ॥ २ ॥  
 सुकृत जाइ जाँ पनु परिहरऊँ । कुअँरि कुआरि रहउ का करऊँ ॥  
 जो जनतेऊँ बिनु भट भुबि भाई । तौ पनु करि होतेऊँ न हँसाई ॥ ३ ॥  
 जनक बचन सुनि सब नर नारी । देखि जानकिहि भए दुखारी ॥  
 माखे लखनु कुटिल भइँ भौहँ । रदपट फरकत नयन रिसौहँ ॥ ४ ॥

## दोहरा

कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान ।  
 नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥ २५२ ॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥  
 कही जनक जसि अनुचित बानी । बिद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥ १ ॥  
 सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू ॥  
 जौ तुम्हारि अनुसासन पावौँ । कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौँ ॥ २ ॥

काचे घट जिमि डारौं फोरी । सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥  
 तव प्रताप महिमा भगवाना । को बापुरो पिनाक पुराना ॥ ३ ॥  
 नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुकु करौं बिलोकिअ सोऊ ॥  
 कमल नाल जिमि चाफ चढावौं । जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥ ४ ॥

## दोहरा

तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।  
 जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ ॥ २५३ ॥

लखन सकोप बचन जे बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥  
 सकल लोक सब भूप डेराने । सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥ १ ॥  
 गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं । मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं ॥  
 सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥ २ ॥  
 बिस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति सनेहमय बानी ॥  
 उठहु राम भंजहु भवचापा । मेटहु तात जनक परितापा ॥ ३ ॥  
 सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा । हरषु बिषादु न कछु उर आवा ॥  
 ठाढे भए उठि सहज सुभाएँ । ठवनि जुबा मृगराजु लजाएँ ॥ ४ ॥

## दोहरा

उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग ।  
 बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥ २५४ ॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । बचन नखत अवली न प्रकासी ॥  
 मानी महिप कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने ॥ १ ॥  
 भए बिसोक कोक मुनि देवा । बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥  
 गुर पद बंदि सहित अनुरागा । राम मुनिन्ह सन आयसु मागा ॥ २ ॥  
 सहजहिं चले सकल जग स्वामी । मत मंजु बर कुंजर गामी ॥  
 चलत राम सब पुर नर नारी । पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥ ३ ॥  
 बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे । जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥



तौ सिवधनु मृनाल की नाई । तोरहुँ राम गनेस गोसाई ॥ ४ ॥

### दोहरा

रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।  
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ ॥ २५५ ॥

सखि सब कौतुक देखनिहारे । जेठ कहावत हित् हमारे ॥  
कोठ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं । ए बालक असि हठ भलि नाहीं ॥ १ ॥  
रावन बान छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूप करि दापा ॥  
सो धनु राजकुअँर कर देहीं । बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥ २ ॥  
भूप सयानप सकल सिरानी । सखि बिधि गति कछु जाति न जानी ॥  
बोली चतुर सखी मृदु बानी । तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥ ३ ॥  
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा । सोषेठ सुजसु सकल संसारा ॥  
रबि मंडल देखत लघु लागा । उदयँ तासु तिभुवन तम भागा ॥ ४ ॥

### दोहरा

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्व ।  
महामत गजराज कहँ बस कर अंकुस खर्ब ॥ २५६ ॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे । सकल भुवन अपने बस कीन्हे ॥  
देबि तजिअ संसठ अस जानी । भंजब धनुष रामु सुनु रानी ॥ १ ॥  
सखी बचन सुनि भै परतीती । मिटा बिषादु बढी अति प्रीती ॥  
तब रामहि बिलोकि बैदेही । सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही ॥ २ ॥  
मनहीं मन मनाव अकुलानी । होहु प्रसन्न महेस भवानी ॥  
करहु सफल आपनि सेवकाई । करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥ ३ ॥  
गननायक बरदायक देवा । आजु लगै कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥  
बार बार बिनती सुनि मोरी । करहु चाप गुरुता अति थोरी ॥ ४ ॥

### दोहरा

देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर ॥  
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥ २५७ ॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा । पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥  
अहह तात दारुनि हठ ठानी । समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥ १ ॥  
सचिव सभय सिख देइ न कोई । बुध समाज बड़ अनुचित होई ॥  
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥ २ ॥  
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा । सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ॥  
सकल सभा कै मति भै भोरी । अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥ ३ ॥  
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥  
अति परिताप सीय मन माही । लव निमेष जुग सब सय जाहीं ॥ ४ ॥

#### दोहरा

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।  
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥ २५८ ॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥  
लोचन जलु रह लोचन कोना । जैसे परम कृपन कर सोना ॥ १ ॥  
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥  
तन मन बचन मोर पनु साचा । रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥ २ ॥  
तौ भगवानु सकल उर बासी । करिहिं मोहि रघुबर कै दासी ॥  
जेहि कै जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कछु संहेहू ॥ ३ ॥  
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । कृपानिधान राम सबु जाना ॥  
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे । चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसे ॥ ४ ॥

#### दोहरा

लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु ।  
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥ २५९ ॥

दिसकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥

रामु चहहिं संकर धनु तोरा । होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥ १ ॥  
 चाप सपीप रामु जब आए । नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥  
 सब कर संसठ अरु अग्यानु । मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥ २ ॥  
 भृगुपति केरि गरब गरुआई । सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई ॥  
 सिय कर सोचु जनक पछितावा । रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥ ३ ॥  
 संभुचाप बड बोहितु पाई । चढे जाइ सब संगु बनाई ॥  
 राम बाहुबल सिंधु अपारु । चहत पारु नहि कोठ कइहारु ॥ ४ ॥

## दोहरा

राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।  
 चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥ २६० ॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कलप सम तेही ॥  
 तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा । मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥ १ ॥  
 का बरषा सब कृषी सुखानें । समय चुकें पुनि का पछितानें ॥  
 अस जियँ जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ॥ २ ॥  
 गुरहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा । अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥  
 दमकेठ दामिनि जिमि जब लयऊ । पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ ॥३॥  
 लेत चढावत खँचत गाढ़ें । काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ॥  
 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥ ४ ॥

## छंद

भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले ।  
 चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ॥  
 सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं ।  
 कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारही ॥

## सोरठा

संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबलु ।  
 बूड सो सकल समाजु चढा जो प्रथमहिं मोह बस ॥ २६१ ॥

प्रभु दोठ चापखंड महि डारे । देखि लोग सब भए सुखारे ॥  
 कोसिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम बारि अवगाहु सुहावन ॥ १ ॥  
 रामरूप राकेसु निहारी । बढत बीचि पुलकावलि भारी ॥  
 बाजे नभ गहगहे निसाना । देवबधू नाचहिं करि गाना ॥ २ ॥  
 ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । प्रभुहि प्रसंसहि देहिं असीसा ॥  
 बरिसहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किंनर गीत रसाला ॥ ३ ॥  
 रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंग धुनि जात न जानी ॥  
 मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । भंजेठ राम संभुधनु भारी ॥ ४ ॥

## दोहरा

बंदी मागध सूतगन बिरुद बदहिं मतिधीर ।  
 करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥ २६२ ॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई । भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥  
 बाजहिं बहु बाजने सुहाए । जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गाए ॥ १ ॥  
 सखिन्ह सहित हरषी अति रानी । सूखत धान परा जनु पानी ॥  
 जनक लहेठ सुखु सोचु बिहाई । पैरत थकें थाह जनु पाई ॥ २ ॥  
 श्रीहत भए भूप धनु टूटे । जैसें दिवस दीप छबि छूटे ॥  
 सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती । जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ॥ ३ ॥  
 रामहि लखनु बिलोकत कैसें । ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ॥  
 सतानंद तब आयसु दीन्हा । सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा ॥ ४ ॥

## दोहरा

संग सखीं सुदंर चतुर गावहिं मंगलचार ।  
 गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥ २६३ ॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे । छबिगन मध्य महाछबि जैसें ॥

कर सरोज जयमाल सुहाई । बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई ॥ १ ॥  
 तन सकोचु मन परम उछाहू । गूढ प्रेमु लखि परइ न काहू ॥  
 जाइ समीप राम छबि देखी । रहि जनु कुँअरि चित्र अवरेशी ॥ २ ॥  
 चतुर सखीं लखि कहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥  
 सुनत जुगल कर माल उठाई । प्रेम बिबस पहिराइ न जाई ॥ ३ ॥  
 सोहत जनु जुग जलज सनाला । ससिहि सभीत देत जयमाला ॥  
 गावहिं छबि अवलोकि सहेली । सियँ जयमाल राम उर मेली ॥ ४ ॥

### सोरठा

रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन ।  
 सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन ॥ २६४ ॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । खल भए मलिन साधु सब राजे ॥  
 सुर किंनर नर नाग मुनीसा । जय जय जय कहि देहिं असीसा ॥ १ ॥  
 नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं । बार बार कुसुमांजलि छूटीं ॥  
 जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं । बंदी बिरदावलि उच्चरहीं ॥ २ ॥  
 महि पाताल नाक जसु ब्यापा । राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥  
 करहिं आरती पुर नर नारी । देहिं निछावरि बित्त बिसारी ॥ ३ ॥  
 सोहति सीय राम कै जौरी । छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥  
 सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता । करति न चरन परस अति भीता ॥ ४ ॥

### दोहरा

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।  
 मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥ २६५ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कपूत मूढ मन माखे ॥  
 उठि उठि पहिरि सनाह अभागे । जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥ १ ॥  
 लेहु छडाइ सीय कह कोऊ । धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ ॥  
 तोरें धनुषु चाइ नहिं सरई । जीवत हमहि कुअँरि को बरई ॥ २ ॥

जौं बिदेहु कछु करे सहाई । जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥  
 साधु भूप बोले सुनि बानी । राजसमाजहि लाज लजानी ॥ ३ ॥  
 बलु प्रतापु बीरता बडाई । नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥  
 सोइ सूरता कि अब कहूँ पाई । असि बुधि तौ बिधि मुहँ मसि लाई ॥४ ॥

## दोहरा

देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा महु कोहु ।  
 लखन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु ॥ २६६ ॥

बैनतेय बलि जिमि चह कागू । जिमि ससु चहै नाग अरि भागू ॥  
 जिमि चह कुसल अकारन कोही । सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥ १ ॥  
 लोभी लोलुप कल कीरति चहई । अकलंकता कि कामी लहई ॥  
 हरि पद बिमुख परम गति चाहा । तस तुम्हार लालचु नरनाहा ॥ २ ॥  
 कोलाहलु सुनि सीय सकानी । सखीं लवाइ गई जहँ रानी ॥  
 रामु सुभायँ चले गुरु पाहीं । सिय सनेहु बरनत मन माहीं ॥ ३ ॥  
 रानिन्ह सहित सोचबस सीया । अब धौं बिधिहि काह करनीया ॥  
 भूप बचन सुनि इत उत तकहीं । लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप ।  
 मनहुँ मत गजगन निरखि सिंघकिसोरहि चोप ॥ २६७ ॥

खरभरु देखि बिकल पुर नारीं । सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं ॥  
 तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा । आयसु भृगुकुल कमल पतंगा ॥ १ ॥  
 देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥  
 गौरि सरीर भूति भल भ्राजा । भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा ॥ २ ॥  
 सीस जटा ससिबदनु सुहावा । रिसबस कछुक अरुन होइ आवा ॥  
 भृकुटी कुटिल नयन रिस राते । सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥ ३ ॥  
 बृषभ कंध उर बाहु बिसाला । चारु जनेउ माल मृगछाला ॥

कटि मुनि बसन तून दुइ बाँधें । धनु सर कर कुठारु कल काँधें ॥ ४ ॥

### दोहरा

सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरुप ।  
धरि मुनितनु जनु बीर रसु आयउ जहँ सब भूप ॥ २६८ ॥

देखत भृगुपति बेषु कराला । उठे सकल भय बिकल भुआला ॥  
पितु समेत कहि कहि निज नामा । लगे करन सब दंड प्रनामा ॥ १ ॥  
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी । सो जानइ जनु आइ खुटानी ॥  
जनक बहोरि आइ सिरु नावा । सीय बोलाइ प्रनामु करावा ॥ २ ॥  
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं । निज समाज लै गई सयानीं ॥  
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई । पद सरोज मेले दोउ भाई ॥ ३ ॥  
रामु लखनु दसरथ के ढोटा । दीन्हि असीस देखि भल जोटा ॥  
रामहि चितइ रहे थकि लोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥ ४ ॥

### दोहरा

बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर ॥  
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर ॥ २६९ ॥

समाचार कहि जनक सुनाए । जेहि कारन महीप सब आए ॥  
सुनत बचन फिरि अनत निहारे । देखे चापखंड महि डारे ॥ १ ॥  
अति रिस बोले बचन कठोरा । कहु जइ जनक धनुष कै तोरा ॥  
बेगि देखाउ मूढ न त आजू । उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू ॥ २ ॥  
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं । कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥  
सुर मुनि नाग नगर नर नारी ॥ सोचहिं सकल त्रास उर भारी ॥ ३ ॥  
मन पछिताति सीय महतारी । बिधि अब सँवरी बात बिगारी ॥  
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता । अरध निमेष कलप सम बीता ॥ ४ ॥

### दोहरा

सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु ।  
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु ॥ २७० ॥

### मासपारायण नवाँ विश्राम

नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केठ एक दास तुम्हारा ॥  
आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥ १ ॥  
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ॥  
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥ २ ॥  
सो बिलगाठ बिहाइ समाजा । न त मारे जैहहिं सब राजा ॥  
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने ॥ ३ ॥  
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई । कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई ॥  
एहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ॥ ४ ॥

### दोहरा

रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँमार ॥  
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥ २७१ ॥

लखन कहा हँसि हमरें जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥  
का छति लाभु जून धनु तौरें । देखा राम नयन के भोरें ॥ १ ॥  
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू । मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ॥  
बोले चितइ परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥ २ ॥  
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही । केवल मुनि जइ जानहि मोही ॥  
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही ॥ ३ ॥  
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥  
सहसबाहु भुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥ ४ ॥

### दोहरा

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर ।  
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥ २७२ ॥



बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महा भटमानी ॥  
 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु । चहत उडावन फूँकि पहारु ॥ १ ॥  
 इहाँ कुम्हड़बतिया कोठ नाही । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥  
 देखि कुठारु सरासन बाना । में कछु कहा सहित अभिमाना ॥ २ ॥  
 भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी । जो कछु कहहु सहँ रिस रोकी ॥  
 सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरें कुल इन्ह पर न सुराई ॥ ३ ॥  
 बधें पापु अपकीरति हारें । मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें ॥  
 कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा । व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥ ४ ॥

## दोहरा

जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर ।  
 सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गभीर ॥ २७३ ॥

कौंसिक सुनहु मंद यहु बालकु । कुटिल कालबस निज कुल घालकु ॥  
 भानु बंस राकेस कलंकू । निपट निरंकुस अबुध असंकू ॥ १ ॥  
 काल कवलु होइहि छन माहीं । कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाही ॥  
 तुम्ह हटकउ जौं चहहु उबारा । कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा ॥ २ ॥  
 लखन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा । तुम्हहि अछत को बरनै पारा ॥  
 अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी । बार अनेक भाँति बहु बरनी ॥ ३ ॥  
 नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥  
 बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा । गारी देत न पावहु सोभा ॥ ४ ॥

## दोहरा

सूर समर करनी करहि कहि न जनावहिं आपु ।  
 बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥ २७४ ॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा । बार बार मोहि लागि बोलावा ॥  
 सुनत लखन के बचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥ १ ॥  
 अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू । कटुबादी बालकु बधजोगू ॥

बाल बिलोकि बहुत में बाँचा । अब यह मरनिहार भा साँचा ॥ २ ॥  
 कौसिक कहा छमिअ अपराधू । बाल दोष गुन गनहिं न साधू ॥  
 खर कुठार में अकरुन कोही । आगें अपराधी गुरुद्रोही ॥ ३ ॥  
 उतर देत छोड़तँ बिनु मारें । केवल कौसिक सील तुम्हारें ॥  
 न त एहि काटि कुठार कठोरें । गुरहि उरिन होतेतँ श्रम थोरें ॥ ४ ॥

## दोहरा

गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ ।  
 अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ २७५ ॥

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहि जान बिदित संसारा ॥  
 माता पितहि उरिन भए नीकें । गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें ॥ १ ॥  
 सो जनु हमरेहि माथे काढा । दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढा ॥  
 अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली । तुरत देतँ में थैली खोली ॥ २ ॥  
 सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ॥  
 भृगुबर परसु देखावहु मोही । बिप्र बिचारि बचतँ नृपद्रोही ॥ ३ ॥  
 मिले न कबहुँ सुभट रन गाढे । द्विज देवता घरहि के बाढे ॥  
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे ॥ ४ ॥

## दोहरा

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु ।  
 बढत देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ॥ २७६ ॥

नाथ करहु बालक पर छोहू । सूध दूधमुख करिअ न कोहू ॥  
 जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना । तौ कि बराबरि करत अयाना ॥ १ ॥  
 जौं लरिका कछु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥  
 करिअ कृपा सिसु सेवक जानी । तुम्ह सम सील धीर मुनि ग्यानी ॥ २ ॥  
 राम बचन सुनि कछुक जुडाने । कहि कछु लखनु बहुरि मुसकाने ॥  
 हँसत देखि नख सिख रिस ब्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥ ३ ॥

गौर सरीर स्याम मन माहीं । कालकूटमुख पयमुख नाहीं ॥  
सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही । नीचु मीचु सम देख न मौहीं ॥ ४ ॥

दोहरा

लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल ।  
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल ॥ २७७ ॥

में तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोपु करिअ अब दाया ॥  
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने । बैठिअ होइहिं पाय पिराने ॥ १ ॥  
जौ अति प्रिय तौ करिअ उपाई । जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई ॥  
बोलत लखनहिं जनकु डेराहीं । मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ॥ २ ॥  
थर थर कापहिं पुर नर नारी । छोट कुमार खोट बड़ भारी ॥  
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी । रिस तन जरइ होइ बल हानी ॥ ३ ॥  
बोले रामहि देइ निहोरा । बचउँ बिचारि बंधु लघु तोरा ॥  
मनु मलीन तनु सुंदर कैसें । बिष रस भरा कनक घटु जैसें ॥ ४ ॥

दोहरा

सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम ।  
गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम ॥ २७८ ॥

अति बिनीत मृदु सीतल बानी । बोले रामु जोरि जुग पानी ॥  
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । बालक बचनु करिअ नहिं काना ॥ १ ॥  
बररै बालक एकु सुभाऊ । इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ ॥  
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी में नाथ तुम्हारा ॥ २ ॥  
कृपा कोपु बधु बँधब गोसाई । मो पर करिअ दास की नाई ॥  
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई । मुनिनायक सोइ करौं उपाई ॥ ३ ॥  
कह मुनि राम जाइ रिस कैसें । अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें ॥  
एहि के कंठ कुठारु न दीन्हा । तौ में काह कोपु करि कीन्हा ॥ ४ ॥

दोहरा

गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर ।  
परसु अछत देखउँ जिअत बैरी भूपकिसोर ॥ २७९ ॥

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती । भा कुठारु कुंठित नृपघाती ॥  
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदयँ कृपा कसि काऊ ॥ १ ॥  
आजु दया दुखु दुसह सहावा । सुनि सौमित्र बिहसि सिरु नावा ॥  
बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ॥ २ ॥  
जौं पै कृपाँ जरिहिं मुनि गाता । क्रोध भएँ तनु राख बिधाता ॥  
देखु जनक हठि बालक एहू । कीन्ह चहत जइ जमपुर गेहू ॥ ३ ॥  
बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥  
बिहसे लखनु कहा मन माहीं । मूदें आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

परसुरामु तब राम प्रति बोले उर अति क्रोधु ।  
संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु ॥ २८० ॥

बंधु कहइ कटु संमत तोरें । तू छल बिनय करसि कर जोरें ॥  
करु परितोषु मोर संग्रामा । नाहिं त छाड़ कहाउब रामा ॥ १ ॥  
छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही । बंधु सहित न त मारउँ तोही ॥  
भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ । मन मुसकाहिं रामु सिर नाएँ ॥ २ ॥  
गुनह लखन कर हम पर रोषू । कतहुँ सुधाइहु ते बइ दोषू ॥  
टेढ जानि सब बंदइ काहू । बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू ॥ ३ ॥  
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा । कर कुठारु आगें यह सीसा ॥  
जेंहिं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी । मोहि जानि आपन अनुगामी ॥ ४ ॥

## दोहरा

प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु बिप्रबर रोसु ।  
बेषु बिलोकें कहेसि कछु बालकहू नहिं दोसु ॥ २८१ ॥

देखि कुठार बान धनु धारी । भैं लरिकहि रिस बीरु बिचारी ॥

नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा । बंस सुभायँ उतरु तेंहि दीन्हा ॥ १ ॥  
 जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नाई । पद रज सिर सिसु धरत गोसाईं ॥  
 छमहु चूक अनजानत केरी । चहिअ बिप्र उर कृपा घनेरी ॥ २ ॥  
 हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा ॥ कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ॥  
 राम मात्र लघु नाम हमारा । परसु सहित बड़ नाम तोहारा ॥ ३ ॥  
 देव एकु गुनु धनुष हमारें । नव गुन परम पुनीत तुम्हारें ॥  
 सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे । छमहु बिप्र अपराध हमारे ॥ ४ ॥

## दोहरा

बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम ।  
 बोले भृगुपति सरुष हसि तहँ बंधु सम बाम ॥ २८२ ॥

निपटहिं द्विज करि जानहि मोही । में जस बिप्र सुनावउँ तोही ॥  
 चाप स्रुवा सर आहुति जानू । कोप मोर अति घोर कृसानु ॥ १ ॥  
 समिधि सेन चतुरंग सुहाई । महा महीप भए पसु आई ॥  
 मै एहि परसु काटि बलि दीन्हे । समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्हे ॥ २ ॥  
 मोर प्रभाउ बिदित नहिं तोरें । बोलसि निदरि बिप्र के भोरें ॥  
 भंजेउ चापु दापु बड़ बाढा । अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढा ॥ ३ ॥  
 राम कहा मुनि कहहु बिचारी । रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥  
 छुअतहिं टूट पिनाक पुराना । में कहि हेतु करौं अभिमाना ॥ ४ ॥

## दोहरा

जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।  
 तौ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहिं माथ ॥ २८३ ॥

देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ॥  
 जौं रन हमहि पचारै कोऊ । लरहिं सुखेन कालु किन होऊ ॥ १ ॥  
 छत्रिय तनु धरि समर सकाना । कुल कलंकु तेहिं पावँर आना ॥  
 कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी । कालहु डरहिं न रन रघुबंसी ॥ २ ॥

बिप्रबंस कै असि प्रभुताई । अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥  
 सुनु मृदु गूढ बचन रघुपति के । उघरे पटल परसुधर मति के ॥ ३ ॥  
 राम रमापति कर धनु लेहू । खेंचहु मिटै मोर संदेहू ॥  
 देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । परसुराम मन बिसमय भयऊ ॥ ४ ॥

## दोहरा

जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात ।  
 जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु अमात ॥ २८४ ॥

जय रघुबंस बनज बन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृसानु ॥  
 जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रम हारी ॥ १ ॥  
 बिनय सील करुना गुन सागर । जयति बचन रचना अति नागर ॥  
 सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जय सरीर छबि कोटि अनंगा ॥ २ ॥  
 करौं काह मुख एक प्रसंसा । जय महेस मन मानस हंसा ॥  
 अनुचित बहुत कहेऊँ अग्याता । छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ॥ ३ ॥  
 कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए बनहि तप हेतू ॥  
 अपभयँ कुटिल महीप डेराने । जहँ तहँ कायर गवँहिं पराने ॥ ४ ॥

## दोहरा

देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं प्रभु पर बरषहिं फूल ।  
 हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल ॥ २८५ ॥

अति गहगहे बाजने बाजे । सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥  
 जूथ जूथ मिलि सुमुख सुनयनीं । करहिं गान कल कोकिलबयनी ॥ १ ॥  
 सुखु बिदेह कर बरनि न जाई । जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥  
 गत त्रास भइ सीय सुखारी । जनु बिधु उदयँ चकोरकुमारी ॥ २ ॥  
 जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा । प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥  
 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई । अब जो उचित सो कहिअ गोसाई ॥३ ॥  
 कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना । रहा बिबाहु चाप आधीना ॥

दूटतहीं धनु भयउ बिबाहू । सुर नर नाग बिदित सब काहु ॥ ४ ॥

### दोहरा

तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु ।  
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर बेद बिदित आचारु ॥ २८६ ॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई । आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥  
मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला । पठए दूत बोलि तेहि काला ॥ १ ॥  
बहुरि महाजन सकल बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिर नाए ॥  
हाट बाट मंदिर सुरबासा । नगरु सँवारहु चारिहुँ पासा ॥ २ ॥  
हरषि चले निज निज गृह आए । पुनि परिचारक बोलि पठाए ॥  
रचहु बिचित्र बितान बनाई । सिर धरि बचन चले सचु पाई ॥ ३ ॥  
पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना । जे बितान बिधि कुसल सुजाना ॥  
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । बिरचे कनक कदलि के खंभा ॥ ४ ॥

### दोहरा

हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल ।  
रचना देखि बिचित्र अति मनु बिरंचि कर भूल ॥ २८७ ॥

बेनि हरित मनिमय सब कीन्हे । सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हे ॥  
कनक कलित अहिबेल बनाई । लखि नहि परइ सपरन सुहाई ॥ १ ॥  
तेहि के रचि पचि बंध बनाए । बिच बिच मुकता दाम सुहाए ॥  
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥ २ ॥  
किए भृंग बहुरंग बिहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ॥  
सुर प्रतिमा खंभन गढी काढी । मंगल द्रब्य लिएँ सब ठाढी ॥ ३ ॥  
चौकें भाँति अनेक पुराई । सिंधुर मनिमय सहज सुहाई ॥ ४ ॥

### दोहरा

सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि ॥  
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि ॥ २८८ ॥

रचे रुचिर बर बंदनिबारे । मनहुँ मनोभवँ फंद सँवारे ॥  
 मंगल कलस अनेक बनाए । ध्वज पताक पट चमर सुहाए ॥ १ ॥  
 दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न बरनि बिचित्र बिताना ॥  
 जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही । सो बरनै असि मति कबि केही ॥ २ ॥  
 दूलहु रामु रूप गुन सागर । सो बितानु तिहुँ लोक उजागर ॥  
 जनक भवन कै सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी ॥ ३ ॥  
 जेहि तेरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिं भुवन दस चारी ॥  
 जो संपदा नीच गृह सोहा । सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥ ४ ॥

## दोहरा

बसइ नगर जेहि लच्छ करि कपट नारि बर बेषु ॥  
 तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेषु ॥ २८९ ॥

पहुँचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥  
 भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥ १ ॥  
 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥  
 बारि बिलोचन बाचत पाँती । पुलक गात आई भरि छाती ॥ २ ॥  
 रामु लखनु उर कर बर चीठी । रहि गए कहत न खाटी मीठी ॥  
 पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची । हरषी सभा बात सुनि साँची ॥ ३ ॥  
 खेलत रहे तहाँ सुधि पाई । आए भरतु सहित हित भाई ॥  
 पूछत अति सनेहँ सकुचाई । तात कहाँ तँ पाती आई ॥ ४ ॥

## दोहरा

कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहिं देस ।  
 सुनि सनेह साने बचन बाची बहुरि नरेस ॥ २९० ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेहु समात न गाता ॥  
 प्रीति पुनीत भरत कै देखी । सकल सभाँ सुखु लहेउ बिसेषी ॥ १ ॥  
 तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥



भैया कहहु कुसल दोउ बारे । तुम्ह नीकें निज नयन निहारे ॥ २ ॥  
 स्यामल गौर धरें धनु भाथा । बय किसोर कौसिक मुनि साथे ॥  
 पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ । प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ ॥ ३ ॥  
 जा दिन तैं मुनि गए लवाई । तब तैं आजु साँचि सुधि पाई ॥  
 कहहु बिदेह कवन बिधि जाने । सुनि प्रिय बचन दूत मुसकाने ॥ ४ ॥

## दोहरा

सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ ।  
 रामु लखनु जिन्ह के तनय बिस्व बिभूषन दोउ ॥ २९१ ॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे ॥  
 जिन्ह के जस प्रताप कें आगे । ससि मलीन रबि सीतल लागे ॥ १ ॥  
 तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे । देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे ॥  
 सीय स्वयंबर भूप अनेका । समिटे सुभट एक तैं एका ॥ २ ॥  
 संभु सरासनु काहुँ न टारा । हारे सकल बीर बरिआरा ॥  
 तीनि लोक महँ जे भटमानी । सभ कै सकति संभु धनु भानी ॥ ३ ॥  
 सकइ उठाइ सरासुर मेरु । सोउ हियँ हारि गयउ करि फेरु ॥  
 जेहि कौतुक सिवसैलु उठावा । सोउ तेहि सभाँ पराभउ पावा ॥ ४ ॥

## दोहरा

तहाँ राम रघुबंस मनि सुनिअ महा महिपाल ।  
 भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल ॥ २९२ ॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आए । बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए ॥  
 देखि राम बलु निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा ॥१॥  
 राजन रामु अतुलबल जैसेँ । तेज निधान लखनु पुनि तैसेँ ॥  
 कंपहि भूप बिलोकत जाकें । जिमि गज हरि किसोर के ताकें ॥ २ ॥  
 देव देखि तव बालक दोऊ । अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥  
 दूत बचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप बीर रस पागी ॥ ३ ॥

सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥  
कहि अनीति ते मूदहिं काना । धरमु बिचारि सबहिं सुख माना ॥ ४ ॥

दोहरा

तब उठि भूप बसिष्ठ कहँ दीन्हि पत्रिका जाइ ।  
कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ ॥ २९३ ॥

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । पुन्य पुरुष कहँ महि सुख छाई ॥  
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥ १ ॥  
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ । धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ ॥  
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी । तसि पुनीत कौसल्या देबी ॥ २ ॥  
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥  
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड काकें । राजन राम सरिस सुत जाकें ॥ ३ ॥  
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी । गुन सागर बर बालक चारी ॥  
तुम्ह कहँ सर्व काल कल्याना । सजहु बरात बजाइ निसाना ॥ ४ ॥

दोहरा

चलहु बेगि सुनि गुर बचन भलेहिं नाथ सिरु नाइ ।  
भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बासु देवाइ ॥ २९४ ॥

राजा सबु रनिवास बोलाई । जनक पत्रिका बाचि सुनाई ॥  
सुनि संदेसु सकल हरषानीं । अपर कथा सब भूप बखानीं ॥ १ ॥  
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । मनहुँ सिखिनि सुनि बारिद बनी ॥  
मुदित असीस देहिं गुरु नारीं । अति आनंद मगन महतारीं ॥ २ ॥  
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदयँ लगाइ जुडावहिं छाती ॥  
राम लखन कै कीरति करनी । बारहिं बार भूपबर बरनी ॥ ३ ॥  
मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तब महिदेव बोलाए ॥  
दिए दान आनंद समेता । चले बिप्रबर आसिष देता ॥ ४ ॥

सोरठा

जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि बिधि ।  
चिरु जीवहुँ सुत चारि चक्रबर्ति दसरत्थ के ॥ २९५ ॥

कहत चले पहिरेँ पट नाना । हरषि हने गहगहे निसाना ॥  
समाचार सब लोगन्ह पाए । लागे घर घर होने बधाए ॥ १ ॥  
भुवन चारि दस भरा उछाहू । जनकसुता रघुबीर बिआहू ॥  
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गलीं सँवारन लागे ॥ २ ॥  
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मंगलमय पावनि ॥  
तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई । मंगल रचना रची बनाई ॥ ३ ॥  
ध्वज पताक पट चामर चारु । छावा परम बिचित्र बजारु ॥  
कनक कलस तोरन मनि जाला । हरद दूब दधि अच्छत माला ॥ ४ ॥

#### दोहरा

मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ ।  
बीथीं सीचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ ॥ २९६ ॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि । सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि ॥  
बिधुबदनीं मृग सावक लोचनि । निज सरूप रति मानु बिमोचनि ॥ १ ॥  
गावहिं मंगल मंजुल बानीं । सुनिकल रव कलकंठि लजानीं ॥  
भूप भवन किमि जाइ बखाना । बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना ॥ २ ॥  
मंगल द्रब्य मनोहर नाना । राजत बाजत बिपुल निसाना ॥  
कतहुँ बिरिद बंदी उच्चरहीं । कतहुँ बेद धुनि भूसुर करहीं ॥ ३ ॥  
गावहिं सुंदरि मंगल गीता । लै लै नामु रामु अरु सीता ॥  
बहुत उछाहु भवनु अति थोरा । मानहुँ उमगि चला चहु ओरा ॥ ४ ॥

#### दोहरा

सोभा दसरथ भवन कइ को कबि बरनै पार ।  
जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार ॥ २९७ ॥

भूप भरत पुनि लिए बोलाई । हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥

चलहु बेगि रघुबीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोठ भाता ॥ १ ॥  
 भरत सकल साहनी बोलाए । आयसु दीन्ह मुदित उठि धाए ॥  
 रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । बरन बरन बर बाजि बिराजे ॥ २ ॥  
 सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अय इव जरत धरत पग धरनी ॥  
 नाना जाति न जाहिं बखाने । निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने ॥ ३ ॥  
 तिन्ह सब छयल भए असवारा । भरत सरिस बय राजकुमारा ॥  
 सब सुंदर सब भूषनधारी । कर सर चाप तून कटि भारी ॥ ४ ॥

## दोहरा

छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नबीन ।  
 जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रबीन ॥ २९८ ॥  
 बाँधे बिरद बीर रन गाढे । निकसि भए पुर बाहेर ठाढे ॥  
 फेरहिं चतुर तुरग गति नाना । हरषहिं सुनि सुनि पवन निसाना ॥ १ ॥  
 रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाए । ध्वज पताक मनि भूषन लाए ॥  
 चवँर चारु किंकिन धुनि करही । भानु जान सोभा अपहरही ॥ २ ॥  
 सावँकरन अगनित हय होते । ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥  
 सुंदर सकल अलंकृत सोहे । जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे ॥ ३ ॥  
 जे जल चलहिं थलहि की नाई । टाप न बूड बेग अधिकाई ॥  
 अस्त्र सस्त्र सबु साजु बनाई । रथी सारथिन्ह लिए बोलाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

चढि चढि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात ।  
 होत सगुन सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात ॥ २९९ ॥  
 कलित करिबरन्हि परीं अँबारीं । कहि न जाहिं जेहि भाँति सँवारीं ॥  
 चले मत्तगज घंट बिराजी । मनहुँ सुभग सावन घन राजी ॥ १ ॥  
 बाहन अपर अनेक बिधाना । सिबिका सुभग सुखासन जाना ॥  
 तिन्ह चढि चले बिप्रबर बृन्दा । जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा ॥ २ ॥

मागध सूत बंदि गुनगायक । चले जान चढ़ि जो जेहि लायक ॥  
 बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती । चले बस्तु भरि अगनित भाँती ॥ ३ ॥  
 कोटिन्ह काँवरि चले कहारा । बिबिध बस्तु को बरनै पारा ॥  
 चले सकल सेवक समुदाई । निज निज साजु समाजु बनाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

सब कें उर निर्भर हरषु पूरित पुलक सरीर ।  
 कबहिं देखिबे नयन भरि रामु लखनू दोठ बीर ॥ ३०० ॥

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा । रथ रव बाजि हिंस चहु ओरा ॥  
 निदरि घनहि घुम्मरहिं निसाना । निज पराइ कछु सुनिअ न काना ॥१ ॥  
 महा भीर भूपति के द्वारें । रज होइ जाइ पषान पवारें ॥  
 चढी अटारिन्ह देखहिं नारीं । लिँएँ आरती मंगल थारी ॥ २ ॥  
 गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनंदु न जाइ बखाना ॥  
 तब सुमंत्र दुइ स्पंदन साजी । जोते रबि हय निंदक बाजी ॥ ३ ॥  
 दोठ रथ रुचिर भूप पहिं आने । नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥  
 राज समाजु एक रथ साजा । दूसर तेज पुंज अति भ्राजा ॥ ४ ॥

## दोहरा

तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढाइ नरेसु ।  
 आपु चढेठ स्पंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु ॥ ३०१ ॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसें । सुर गुर संग पुरंदर जैसें ॥  
 करि कुल रीति बेद बिधि राऊ । देखि सबहि सब भाँति बनाऊ ॥ १ ॥  
 सुमिरि रामु गुर आयसु पाई । चले महीपति संख बजाई ॥  
 हरषे बिबुध बिलोकि बराता । बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥ २ ॥  
 भयउ कोलाहल हय गय गाजे । ब्योम बरात बाजने बाजे ॥  
 सुर नर नारि सुमंगल गाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥ ३ ॥  
 घंट घंटी धुनि बरनि न जाहीं । सरव करहिं पाइक फहराहीं ॥

करहिं बिदूषक कौतुक नाना । हास कुसल कल गान सुजाना ॥ ४ ॥

### दोहरा

तुरग नचावहिं कुँअर बर अकनि मृदंग निसान ॥  
नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान ॥ ३०२ ॥

बनइ न बरनत बनी बराता । होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥  
चारा चाषु बाम दिसि लेई । मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥ १ ॥  
दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरसु सब काहूँ पावा ॥  
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी । सघट सवाल आव बर नारी ॥ २ ॥  
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा । सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा ॥  
मृगमाला फिरि दाहिनि आई । मंगल गन जनु दीन्हि देखाई ॥ ३ ॥  
छेमकरी कह छेम बिसेषी । स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥  
सनमुख आयउ दधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥ ४ ॥

### दोहरा

मंगलमय कल्याणमय अभिमत फल दातार ।  
जनु सब साचे होन हित भए सगुन एक बार ॥ ३०३ ॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकेँ । सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकेँ ॥  
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता । समधी दसरथु जनकु पुनीता ॥ १ ॥  
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे । अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे ॥  
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना । हय गय गाजहिं हने निसाना ॥ २ ॥  
आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन्हि जनक बँधाए सेतू ॥  
बीच बीच बर बास बनाए । सुरपुर सरिस संपदा छाए ॥ ३ ॥  
असन सयन बर बसन सुहाए । पावहिं सब निज निज मन भाए ॥  
नित नूतन सुख लखि अनुकूले । सकल बरातिन्ह मंदिर भूले ॥ ४ ॥

### दोहरा

आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान ।  
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥ ३०४ ॥

### मासपारायण दसवाँ विश्राम

कनक कलस भरि कोपर थारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥  
भरे सुधासम सब पकवाने । नाना भाँति न जाहिं बखाने ॥ १ ॥  
फल अनेक बर बस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥  
भूषन बसन महामनि नाना । खग मृग हय गय बहुबिधि जाना ॥ २ ॥  
मंगल सगुन सुगंध सुहाए । बहुत भाँति महिपाल पठाए ॥  
दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥ ३ ॥  
अगवानन्ह जब दीखि बराता । उर आनंदु पुलक भर गाता ॥  
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन्ह हने निसाना ॥ ४ ॥

### दोहरा

हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल ।  
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ॥ ३०५ ॥

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं । मुदित देव दुंदुभी बजावहिं ॥  
बस्तु सकल राखीं नृप आगें । बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागें ॥ १ ॥  
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा । भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा ॥  
करि पूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहूँ चले लवाई ॥ २ ॥  
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं । देखि धनहु धन महु परिहरहीं ॥  
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा । जहँ सब कहूँ सब भाँति सुपासा ॥ ३ ॥  
जानी सियँ बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥  
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाई । भूप पहुँचई करन पठाई ॥ ४ ॥

### दोहरा

सिधि सब सिय आयसु अकनि गई जहाँ जनवास ।  
लिएँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास ॥ ३०६ ॥

निज निज बास बिलोकि बराती । सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती ॥  
 बिभव भेद कछु कोठ न जाना । सकल जनक कर करहिं बखाना ॥ १ ॥  
 सिय महिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी ॥  
 पितु आगमनु सुनत दोठ भाई । हृदयँ न अति आनंदु अमाई ॥ २ ॥  
 सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं । पितु दरसन लालचु मन माहीं ॥  
 बिस्वामित्र बिनय बडि देखी । उपजा उर संतोषु बिसेषी ॥ ३ ॥  
 हरषि बंधु दोठ हृदयँ लगाए । पुलक अंग अंबक जल छाए ॥  
 चले जहाँ दसरथु जनवासे । मनहुँ सरोबर तकेठ पिआसे ॥ ४ ॥

### दोहरा

भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत ।  
 उठे हरषि सुखसिंधु महुँ चले थाह सी लेत ॥ ३०७ ॥

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । बार बार पद रज धरि सीसा ॥  
 कौंसिक राठ लिये उर लाई । कहि असीस पूछी कुसलाई ॥ १ ॥  
 पुनि दंडवत करत दोठ भाई । देखि नृपति उर सुखु न समाई ॥  
 सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे ॥ २ ॥  
 पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए । प्रेम मुदित मुनिबर उर लाए ॥  
 बिप्र बृंद बंदे दुहुँ भाई । मन भावती असीसैं पाई ॥ ३ ॥  
 भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । लिए उठाइ लाइ उर रामा ॥  
 हरषे लखन देखि दोठ भाता । मिले प्रेम परिपूरित गाता ॥ ४ ॥

### दोहरा

पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत ।  
 मिले जथाबिधि सबहि प्रभु परम कृपाल बिनीत ॥ ३०८ ॥

रामहि देखि बरात जुडानी । प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥  
 नृप समीप सोहहिं सुत चारी । जनु धन धरमादिक तनुधारी ॥ १ ॥  
 सुतन्ह समेत दसरथहि देखी । मुदित नगर नर नारि बिसेषी ॥



सुमन बरिसि सुर हनहिं निसाना । नाकनटीं नाचहिं करि गाना ॥ २ ॥  
 सतानंद अरु बिप्र सचिव गन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥  
 सहित बरात राठ सनमाना । आयसु मागि फिरे अगवाना ॥ ३ ॥  
 प्रथम बरात लगन तें आई । तातें पुर प्रमोदु अधिकाई ॥  
 ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं । बढहुँ दिवस निसि बिधि सन कहहीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोठ राज ।  
 जहँ जहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज ॥ ३०९ ॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही । दसरथ सुकृत रामु धरें देही ॥  
 इन्ह सम काँहु न सिव अवराधे । काहिं न इन्ह समान फल लाधे ॥ १ ॥  
 इन्ह सम कोठ न भयठ जग माहीं । है नहिं कतहुँ होनेठ नाहीं ॥  
 हम सब सकल सुकृत कै रासी । भए जग जनमि जनकपुर बासी ॥ २ ॥  
 जिन्ह जानकी राम छबि देखी । को सुकृती हम सरिस बिसेषी ॥  
 पुनि देखब रघुबीर बिआहू । लेब भली बिधि लोचन लाहू ॥ ३ ॥  
 कहहिं परसपर कोकिलबयनीं । एहि बिआहँ बड़ लाभु सुनयनीं ॥  
 बड़ै भाग बिधि बात बनाई । नयन अतिथि होइहहिं दोठ भाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

बारहिं बार सनेह बस जनक बोलाउब सीय ।  
 लेन आइहहिं बंधु दोठ कोटि काम कमनीय ॥ ३१० ॥

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई । प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥  
 तब तब राम लखनहि निहारी । होइहहिं सब पुर लोग सुखारी ॥ १ ॥  
 सखि जस राम लखनकर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥  
 स्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहिं देखि जे आए ॥ २ ॥  
 कहा एक में आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे ॥  
 भरतु रामही की अनुहारी । सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥ ३ ॥

लखनु सत्रुसूदनु एकरूपा । नख सिख ते सब अंग अनूपा ॥  
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं । उपमा कहूँ त्रिभुवन कोठ नाहीं ॥ ४ ॥

## छंद

उपमा न कोठ कह दास तुलसी कतहुँ कबि कोबिद कहें ।  
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहें ॥  
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं ॥  
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहिं पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

## सोरठा

कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन ।  
सखि सबु करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दोउ ॥ ३११ ॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । आनँद उमगि उमगि उर भरहीं ॥  
जे नृप सीय स्वयंबर आए । देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए ॥ १ ॥  
कहत राम जसु बिसद बिसाला । निज निज भवन गए महिपाला ॥  
गए बीति कुछ दिन एहि भाँती । प्रमुदित पुरजन सकल बराती ॥ २ ॥  
मंगल मूल लगन दिनु आवा । हिम रितु अगहनु मासु सुहावा ॥  
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारु । लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारु ॥ ३ ॥  
पठै दीन्हि नारद सन सोई । गनी जनक के गनकन्ह जोई ॥  
सुनी सकल लोगन्ह यह बाता । कहहिं जोतिषी आहिं बिधाता ॥ ४ ॥

## दोहरा

धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल ।  
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन जानि सगुन अनुकुल ॥ ३१२ ॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अब बिलंब कर कारनु काहा ॥  
सतानंद तब सचिव बोलाए । मंगल सकल साजि सब ल्याए ॥ १ ॥  
संख निसान पनव बहु बाजे । मंगल कलस सगुन सुभ साजे ॥  
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता ॥ २ ॥

लेन चले सादर एहि भाँती । गए जहाँ जनवास बराती ॥  
 कोसलपति कर देखि समाजू । अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू ॥ ३ ॥  
 भयउ समउ अब धारिअ पाऊ । यह सुनि परा निसानहिं घाऊ ॥  
 गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा । चले संग मुनि साधु समाजा ॥ ४ ॥

## दोहरा

भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि ।  
 लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि ॥ ३१३ ॥

सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना । बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥  
 सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा । चढे बिमानन्हि नाना जूथा ॥ १ ॥  
 प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू । चले बिलोकन राम बिआहू ॥  
 देखि जनकपुरु सुर अनुरागे । निज निज लोक सबहिं लघु लागे ॥ २ ॥  
 चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ॥  
 नगर नारि नर रूप निधाना । सुधर सुधरम सुसील सुजाना ॥ ३ ॥  
 तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं । भए नखत जनु बिधु उजिआरीं ॥  
 बिधिहि भयह आचरजु बिसेषी । निज करनी कछु कतहुँ न देखी ॥ ४ ॥

## दोहरा

सिवँ समुझाए देव सब जनि आचरज भुलाहु ।  
 हृदयँ बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु ॥ ३१४ ॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥  
 करतल होहिं पदारथ चारी । तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥ १ ॥  
 एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा । पुनि आगें बर बसह चलावा ॥  
 देवन्ह देखे दसरथु जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥ २ ॥  
 साधु समाज संग महिदेवा । जनु तनु धरें करहिं सुख सेवा ॥  
 सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपबरग सकल तनुधारी ॥ ३ ॥  
 मरकत कनक बरन बर जोरी । देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी ॥

पुनि रामहि बिलोकि हियँ हरषे । नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥ ४ ॥

दोहरा

राम रूपु नख सिख सुभग बारहिं बार निहारि ।  
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥ ३१५ ॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । तडित बिनिंदक बसन सुरंगा ॥  
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए । मंगल सब सब भाँति सुहाए ॥ १ ॥  
सरद बिमल बिधु बदन सुहावन । नयन नवल राजीव लजावन ॥  
सकल अलौकिक सुंदरताई । कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥ २ ॥  
बंधु मनोहर सोहहिं संगी । जात नचावत चपल तुरंगा ॥  
राजकुअँर बर बाजि देखावहिं । बंस प्रसंसक बिरिद सुनावहिं ॥ ३ ॥  
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे । गति बिलोकि खगनायकु लाजे ॥  
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा । बाजि बेषु जनु काम बनावा ॥ ४ ॥

छंद

जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई ।  
आपनै बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई ॥  
जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे ।  
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

दोहरा

प्रभु मनसहिं लयलीन मनु चलत बाजि छबि पाव ।  
भूषित उडगन तडित घनु जनु बर बरहि नचाव ॥ ३१६ ॥

जेहिं बर बाजि रामु असवारा । तेहि सारदउ न बरनै पारा ॥  
संकरु राम रूप अनुरागे । नयन पंचदस अति प्रिय लागे ॥ १ ॥  
हरि हित सहित रामु जब जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥  
निरखि राम छबि बिधि हरषाने । आठइ नयन जानि पछिताने ॥ २ ॥  
सुर सेनप उर बहुत उछाहू । बिधि ते डेवढ लोचन लाहू ॥

रामहि चितव सुरेस सुजाना । गौतम श्रापु परम हित माना ॥ ३ ॥  
 देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं । आजु पुरंदर सम कोठ नाही ॥  
 मुदित देवगन रामहि देखी । नृपसमाज दुहुँ हरषु बिसेषी ॥ ४ ॥

छंद

अति हरषु राजसमाज दुहु दिसि दुंदुभी बाजहिं घनी ।  
 बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥  
 एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।  
 रानि सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं ॥

दोहरा

सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि ।  
 चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि ॥ ३१७ ॥

बिधुबदनीं सब सब मृगलोचनि । सब निज तन छबि रति मदु मोचनि ॥  
 पहिरेँ बरन बरन बर चीरा । सकल बिभूषन सजेँ सरीरा ॥ १ ॥  
 सकल सुमंगल अंग बनाएँ । करहिं गान कलकंठि लजाएँ ॥  
 कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । चालि बिलोकि काम गज लाजहिं ॥ २ ॥  
 बाजहिं बाजने बिबिध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥  
 सची सारदा रमा भवानी । जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥ ३ ॥  
 कपट नारि बर बेष बनाई । मिलाँ सकल रनिवासहिं जाई ॥  
 करहिं गान कल मंगल बानीं । हरष बिबस सब काहुँ न जानी ॥ ४ ॥

छंद

को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्म बर परिछन चली ।  
 कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली ॥  
 आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हियँ हरषित भई ॥  
 अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ॥

दोहरा

जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम बर बेषु ।  
सो न सकहिं कहि कल्प सत सहस सारदा सेषु ॥ ३१८ ॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी । परिछनि करहिं मुदित मन रानी ॥  
बेद बिहित अरु कुल आचारु । कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारु ॥ १ ॥  
पंच सबद धुनि मंगल गाना । पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना ॥  
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा । राम गमनु मंडप तब कीन्हा ॥ २ ॥  
दसरथु सहित समाज बिराजे । बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥  
समयँ समयँ सुर बरषहिं फूला । सांति पढहिं महिसुर अनुकूला ॥ ३ ॥  
नभ अरु नगर कोलाहल होई । आपनि पर कछु सुनइ न कोई ॥  
एहि बिधि रामु मंडपहिं आए । अरघु देइ आसन बैठाए ॥ ४ ॥

## छंद

बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुखु पावहीं ॥  
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥  
ब्रह्मादि सुरबर बिप्र बेष बनाइ कौतुक देखहीं ।  
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं ॥

## दोहरा

नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ ।  
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरषु न हृदयँ समाइ ॥ ३१९ ॥

मिले जनकु दसरथु अति प्रीती । करि बैदिक लौकिक सब रीती ॥  
मिलत महा दोठ राज बिराजे । उपमा खोजि खोजि कबि लाजे ॥ १ ॥  
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी । इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥  
सामध देखि देव अनुरागे । सुमन बरषि जसु गावन लागे ॥ २ ॥  
जगु बिरंचि उपजावा जब तैं । देखे सुने ब्याह बहु तब तैं ॥  
सकल भाँति सम साजु समाजू । सम समधी देखे हम आजू ॥ ३ ॥  
देव गिरा सुनि सुंदर साँची । प्रीति अलौकिक दुहु दिसि माची ॥

देत पाँवड़े अरघु सुहाए । सादर जनकु मंडपहिं ल्याए ॥ ४ ॥

छंद

मंडपु बिलोकि बिचीत्र रचनाँ रुचिरताँ मुनि मन हरे ॥  
निज पानि जनक सुजान सब कहूँ आनि सिंघासन धरे ॥  
कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे बिनय करि आसिष लही ।  
कौंसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही ॥

दोहरा

बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस ।  
दिए दिव्य आसन सबहि सब सन लही असीस ॥ ३२० ॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा । जानि ईस सम भाउ न दूजा ॥  
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई । कहि निज भाग्य बिभव बहुताई ॥ १ ॥  
पूजे भूपति सकल बराती । समधि सम सादर सब भाँती ॥  
आसन उचित दिए सब काहू । कहीं काह मूख एक उछाहू ॥ २ ॥  
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान बिनती बर बानी ॥  
बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥ ३ ॥  
कपट बिप्र बर बेष बनाएँ । कौतुक देखहिं अति सचु पाएँ ॥  
पूजे जनक देव सम जानें । दिए सुआसन बिनु पहिचानें ॥ ४ ॥

छंद

पहिचान को केहि जान सबहिं अपान सुधि भोरी भई ।  
आनंद कंदु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनंद मई ॥  
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए ।  
अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को बिबुध मन प्रमुदित भए ॥

दोहरा

रामचंद्र मुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर ।  
करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर ॥ ३२१ ॥

समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए । सादर सतानंदु सुनि आए ॥  
 बेगि कुअँरि अब आनहु जाई । चले मुदित मुनि आयसु पाई ॥ १ ॥  
 रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ॥  
 बिप्र बधू कुलबृद्ध बोलाई । करि कुल रीति सुमंगल गाई ॥ २ ॥  
 नारि बेष जे सुर बर बामा । सकल सुभायँ सुंदरी स्यामा ॥  
 तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारीं । बिनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं ॥ ३ ॥  
 बार बार सनमानहिं रानी । उमा रमा सारद सम जानी ॥  
 सीय सँवारि समाजु बनाई । मुदित मंडपहिं चलीं लवाई ॥ ४ ॥

छंद

चलि ल्याइ सीतहि सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनीं ।  
 नवसप्त साजें सुंदरी सब मत कुंजर गामिनीं ॥  
 कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं ।  
 मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गती बर बाजहीं ॥

दोहरा

सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय ।  
 छबि ललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय ॥ ३२२ ॥

सिय सुंदरता बरनि न जाई । लघु मति बहुत मनोहरताई ॥  
 आवत दीखि बरातिन्ह सीता ॥ रूप रासि सब भाँति पुनीता ॥ १ ॥  
 सबहि मनहिं मन किए प्रनामा । देखि राम भए पूरनकामा ॥  
 हरषे दसरथ सुतन्ह समेता । कहि न जाइ उर आनँदु जेता ॥ २ ॥  
 सुर प्रनामु करि बरसहिं फूला । मुनि असीस धुनि मंगल मूला ॥  
 गान निसान कोलाहलु भारी । प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ॥ ३ ॥  
 एहि बिधि सीय मंडपहिं आई । प्रमुदित सांति पढहिं मुनिराई ॥  
 तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारु । दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारु ॥ ४ ॥

छंद



आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं ।  
 सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं ॥  
 मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं ।  
 भरे कनक कोपर कलस सो सब लिएहिं परिचारक रहैं ॥ १ ॥

कुल रीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर कियो ।  
 एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासनु दियो ॥  
 सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेम काहु न लखि परै ॥  
 मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसें करै ॥ २ ॥

### दोहरा

होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं ।  
 बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं ॥ ३२३ ॥

जनक पाटमहिषी जग जानी । सीय मातु किमि जाइ बखानी ॥  
 सुजसु सुकृत सुख सुदंरताई । सब समेटि बिधि रची बनाई ॥ १ ॥  
 समठ जानि मुनिबरन्ह बोलाई । सुनत सुआसिनि सादर ल्याई ॥  
 जनक बाम दिसि सोह सुनयना । हिमगिरि संग बनि जनु मयना ॥ २ ॥  
 कनक कलस मनि कोपर रुरे । सुचि सुंगध मंगल जल पूरे ॥  
 निज कर मुदित रायँ अरु रानी । धरे राम के आगें आनी ॥ ३ ॥  
 पढ़हिं बेद मुनि मंगल बानी । गगन सुमन झरि अवसरु जानी ॥  
 बरु बिलोकि दंपति अनुरागे । पाय पुनीत पखारन लागे ॥ ४ ॥

### छंद

लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली ।  
 नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली ॥  
 जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं ।  
 जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं ॥ १ ॥

जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई ।

मकरंदु जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई ॥  
 करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं ।  
 ते पद पखारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय सब कहै ॥ २ ॥

बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं ।  
 भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आँनद भरैं ॥  
 सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो ।  
 करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो ॥ ३ ॥

हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई ।  
 तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई ॥  
 क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेहु मूरति सावँरी ।  
 करि होम बिधिवत गाँठि जोरी होन लागी भावँरी ॥ ४ ॥

### दोहरा

जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान ।  
 सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥ ३२४ ॥

कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं ॥ नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥  
 जाइ न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥ १ ॥  
 राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं । जगमगात मनि खंभन माहीं ।  
 मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा । देखत राम बिआहु अनूपा ॥ २ ॥  
 दरस लालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥  
 भए मगन सब देखनिहारे । जनक समान अपान बिसारे ॥ ३ ॥  
 प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरी । नेगसहित सब रीति निबेरीं ॥  
 राम सीय सिर सेंदुर देहीं । सोभा कहि न जाति बिधि केहीं ॥ ४ ॥  
 अरुन पराग जलजु भरि नीकें । ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें ॥  
 बहुरि बसिष्ठ दीन्ह अनुसासन । बरु दुलहिनि बैठे एक आसन ॥ ५ ॥

बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भए ।  
 तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनै सुकृत सुरतरु फल नए ॥  
 भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा ।  
 केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥ १ ॥

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै ।  
 माँडवी श्रुतिकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि के ॥  
 कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई ।  
 सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई ॥ २ ॥

जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै ।  
 सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै ॥  
 जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी ।  
 सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी ॥ ३ ॥

अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं ।  
 सब मुदित सुंदरता सराहहिँ सुमन सुर गन बरषहीं ॥  
 सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं ।  
 जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिमुन सहित बिराजहीं ॥ ४ ॥

### दोहरा

मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि ।  
 जनु पार महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ॥ ३२५ ॥

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी । सकल कुअँर ब्याहे तेहिँ करनी ॥  
 कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मनि मंडपु पूरी ॥ १ ॥  
 कंबल बसन बिचित्र पटोरे । भाँति भाँति बहु मोल न थोरे ॥  
 गज रथ तुरग दास अरु दासी । धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥ २ ॥  
 बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा । कहि न जाइ जानहिँ जिन्ह देखा ॥  
 लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने ॥ ३ ॥

दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा । उबरा सो जनवासेहिं आवा ॥  
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी । बोले सब बरात सनमानी ॥ ४ ॥

छंद

सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै ।  
प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै ॥  
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ ।  
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिएँ ॥ १ ॥

कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों ।  
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥  
संबंध राजन रावरें हम बड़े अब सब बिधि भए ।  
एहि राज साज समेत सेवक जानिबे बिनु गथ लए ॥ २ ॥

ए दारिका परिचारिका करि पालिबीं करुना नई ।  
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हों ढीट्यो कई ॥  
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी किए ।  
कहि जाति नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए ॥ ३ ॥

बृंदारका गन सुमन बरिसहिं राउ जनवासेहि चले ।  
दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥  
तब सखीं मंगल गान करत मुनीस आयसु पाइ कै ।  
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कोहबर ल्याइ कै ॥ ४ ॥

दोहरा

पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न ।  
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पिआसे नैन ॥ ३२६ ॥

मासपारायण ग्यारहवाँ विश्राम

स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन । सोभा कोटि मनोज लजावन ॥  
 जावक जुत पद कमल सुहाए । मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए ॥ १ ॥  
 पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रबि दामिनि जोती ॥  
 कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥ २ ॥  
 पीत जनेऊ महाछबि देई । कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥  
 सोहत ब्याह साज सब साजे । उर आयत उरभूषन राजे ॥ ३ ॥  
 पिअर उपरना काखासोती । दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती ॥  
 नयन कमल कल कुंडल काना । बदनु सकल सौंदर्ज निधाना ॥ ४ ॥  
 सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलकु रुचिरता निवासा ॥  
 सोहत मौरु मनोहर माथे । मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥ ५ ॥

छंद

गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।  
 पुर नारि सुर सुंदरीं बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीं ॥  
 मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहिं ।  
 सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीं ॥ १ ॥

कोहबरहिं आने कुँअर कुँअरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै ।  
 अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥  
 लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं ।  
 रनिवासु हास बिलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं ॥ २ ॥

निज पानि मनि महुँ देखिअति मूरति सुरूपनिधान की ।  
 चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी ॥  
 कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न जाइ कहि जानहिं अलीं ।  
 बर कुअँरि सुंदर सकल सखीं लवाइ जनवासेहि चलीं ॥ ३ ॥

तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा ।  
 चिरु जिअहुँ जोरीं चारु चारयो मुदित मन सबहीं कहा ॥

जोगीन्द्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।  
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ॥ ४ ॥

## दोहरा

सहित बधूटिन्ह कुअँर सब तब आए पितु पास ।  
सोभा मंगल मोद भरि उमगेठ जनु जनवास ॥ ३२७ ॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती । पठए जनक बोलाइ बराती ॥  
परत पाँवडे बसन अनूपा । सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा ॥ १ ॥  
सादर सबके पाय पखारे । जथाजोगु पीढन्ह बैठारे ॥  
धोए जनक अवधपति चरना । सीलु सनेहु जाइ नहिं बरना ॥ २ ॥  
बहुरि राम पद पंकज धोए । जे हर हृदय कमल महुँ गोए ॥  
तीनिउ भाई राम सम जानी । धोए चरन जनक निज पानी ॥ ३ ॥  
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥  
सादर लगे परन पनवारे । कनक कील मनि पान सँवारे ॥ ४ ॥

## दोहरा

सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत ।  
छन महुँ सब कें परुसि गे चतुर सुआर बिनीत ॥ ३२८ ॥

पंच कवल करि जेवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥  
भाँति अनेक परे पकवाने । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने ॥ १ ॥  
परुसन लगे सुआर सुजाना । बिंजन बिबिध नाम को जाना ॥  
चारि भाँति भोजन बिधि गाई । एक एक बिधि बरनि न जाई ॥ २ ॥  
छरस रुचिर बिंजन बहु जाती । एक एक रस अगनित भाँती ॥  
जेवँत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥ ३ ॥  
समय सुहावनि गारि बिराजा । हँसत राठ सुनि सहित समाजा ॥  
एहि बिधि सबहीं भौजनु कीन्हा । आदर सहित आचमनु दीन्हा ॥ ४ ॥

## दोहरा

देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज ।  
जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥ ३२९ ॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं ॥  
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । जाचक गुन गन गावन लागे ॥ १ ॥  
देखि कुअँर बर बधुन्ह समेता । किमि कहि जात मोदु मन जेता ॥  
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं ॥ २ ॥  
करि प्रनाम पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी ॥  
तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा । भयउँ आजु मैं पूरनकाजा ॥ ३ ॥  
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईँ । देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥  
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठए मुनि बृंद बोलाई ॥ ४ ॥

## दोहरा

बामदेउ अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि ।  
आए मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ॥ ३३० ॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे । पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे ॥  
चारि लच्छ बर धेनु मगाई । कामसुरभि सम सील सुहाई ॥ १ ॥  
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं । मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं ॥  
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू । लहेउँ आजु जग जीवन लाहू ॥ २ ॥  
पाइ असीस महीसु अनंदा । लिए बोलि पुनि जाचक बृंदा ॥  
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन । दिए बूझि रुचि रबिकुलनंदन ॥ ३ ॥  
चले पढत गावत गुन गाथा । जय जय जय दिनकर कुल नाथा ॥  
एहि बिधि राम बिआह उछाहू । सकइ न बरनि सहस मुख जाहू ॥ ४ ॥

## दोहरा

बार बार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ ।  
यह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ॥ ३३१ ॥

जनक सनेहु सीलु करतूती । नृपु सब भाँति सराह बिभूती ॥

दिन उठि बिदा अवधपति मागा । राखहिं जनकु सहित अनुरागा ॥ १ ॥  
 नित नूतन आदरु अधिकाई । दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ॥  
 नित नव नगर अनंद उछाहू । दसरथ गवनु सोहाइ न काहू ॥ २ ॥  
 बहुत दिवस बीते एहि भाँती । जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥  
 कौंसिक सतानंद तब जाई । कहा बिदेह नृपहि समुझाई ॥ ३ ॥  
 अब दसरथ कहँ आयसु देहू । जद्यपि छाडि न सकहु सनेहू ॥  
 भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाए । कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए ॥४ ॥

## दोहरा

अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाठ ।  
 भए प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद राठ ॥ ३३२ ॥

पुरबासी सुनि चलिहि बराता । बूझत बिकल परस्पर बाता ॥  
 सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने । मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने ॥ १ ॥  
 जहँ जहँ आवत बसे बराती । तहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती ॥  
 बिबिध भाँति मेवा पकवाना । भोजन साजु न जाइ बखाना ॥ २ ॥  
 भरि भरि बसहँ अपार कहारा । पठई जनक अनेक सुसारा ॥  
 तुरग लाख रथ सहस पचीसा । सकल सँवारे नख अरु सीसा ॥ ३ ॥  
 मत्त सहस दस सिंधुर साजे । जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे ॥  
 कनक बसन मनि भरि भरि जाना । महिषीं धेनु बस्तु बिधि नाना ॥४ ॥

## दोहरा

दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह बिदेहँ बहोरि ।  
 जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि ॥ ३३३ ॥

सबु समाजु एहि भाँति बनाई । जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥  
 चलिहि बरात सुनत सब रानीं । बिकल मीनगन जनु लघु पानीं ॥ १ ॥  
 पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं । देइ असीस सिखावनु देहीं ॥  
 होएहु संतत पियहि पिआरी । चिरु अहिबात असीस हमारी ॥ २ ॥



सासु ससुर गुर सेवा करेहू । पति रूख लखि आयसु अनुसरेहू ॥  
 अति सनेह बस सखीं सयानी । नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ॥ ३ ॥  
 सादर सकल कुअँरि समुझाई । रानिन्ह बार बार उर लाई ॥  
 बहुरि बहुरि भेटहिं महतारीं । कहहिं बिरंचि रचीं कत नारीं ॥ ४ ॥

## दोहरा

तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानु कुल केतु ।  
 चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥ ३३४ ॥

चारिअ भाइ सुभायँ सुहाए । नगर नारि नर देखन धाए ॥  
 कोउ कह चलन चहत हहिं आजू । कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू ॥ १ ॥  
 लेहु नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥  
 को जानै केहि सुकृत सयानी । नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी ॥ २ ॥  
 मरनसीलु जिमि पाव पिऊषा । सुरतरु लहै जनम कर भूखा ॥  
 पाव नारकी हरिपदु जैसैं । इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसे ॥ ३ ॥  
 निरखि राम सोभा उर धरहू । निज मन फनि मूरति मनि करहू ॥  
 एहि बिधि सबहि नयन फलु देता । गए कुअँर सब राज निकेता ॥ ४ ॥

## दोहरा

रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु ।  
 करहि निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ॥ ३३५ ॥

देखि राम छबि अति अनुरागीं । प्रेमबिबस पुनि पुनि पद लागीं ॥  
 रही न लाज प्रीति उर छाई । सहज सनेहु बरनि किमि जाई ॥ १ ॥  
 भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए । छरस असन अति हेतु जेवाँए ॥  
 बोले रामु सुअवसरु जानी । सील सनेह सकुचमय बानी ॥ २ ॥  
 राउ अवधपुर चहत सिधाए । बिदा होन हम इहाँ पठाए ॥  
 मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करब नित नेहू ॥ ३ ॥  
 सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू । बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू ॥

हृदयँ लगाइ कुअँरि सब लीन्ही । पतिन्ह सौँपि बिनती अति कीन्ही ॥४ ॥

## छंद

करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।  
बलि जाँउ तात सुजान तुम्ह कहँ बिदित गति सब की अहै ॥  
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी ।  
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी ॥

## सोरठा

तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय ।  
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन ॥ ३३६ ॥

अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥  
सुनि सनेहसानी बर बानी। बहुबिधि राम सासु सनमानी ॥ १ ॥  
राम बिदा मागत कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी ॥  
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई। भाइन्ह सहित चले रघुराई ॥ २ ॥  
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भई सनेह सिथिल सब रानी ॥  
पुनि धीरजु धरि कुअँरि हँकारी। बार बार भेटहिँ महतारीं ॥ ३ ॥  
पहुँचावहिँ फिरि मिलहिँ बहोरी। बढी परस्पर प्रीति न थोरी ॥  
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई। बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥ ४ ॥

## दोहा

प्रेमबिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।  
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुनाँ बिरहँ निवासु ॥ ३३७ ॥

सुक सारिका जानकी ज्याए। कनक पिंजरन्हि राखि पढाए ॥  
ब्याकुल कहहिँ कहाँ बैदेही। सुनि धीरजु परिहरइ न केही ॥ १ ॥  
भए बिकल खग मृग एहि भाँति। मनुज दसा कैसेँ कहि जाती ॥  
बंधु समेत जनकु तब आए। प्रेम उमगि लोचन जल छाए ॥ २ ॥  
सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी ॥

लीन्हि राँय उर लाइ जानकी। मिटी महामरजाद ग्यान की ॥ ३ ॥  
 समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचारु न अवसर जाने ॥  
 बारहिं बार सुता उर लाई। सजि सुंदर पालकीं मगाई ॥ ४ ॥

दोहा

प्रेमबिबस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस।  
 कुँअरि चढाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥ ३३८ ॥

बहुबिधि भूप सुता समुझाई। नारिधरमु कुलरीति सिखाई ॥  
 दासीं दास दिए बहुतेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥ १ ॥  
 सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी ॥  
 भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुँचावन राजा ॥ २ ॥  
 समय बिलोकि बाजने बाजे। रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे ॥  
 दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरन कीन्हे ॥ ३ ॥  
 चरन सरोज धूरि धरि सीसा। मुदित महीपति पाइ असीसा ॥  
 सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगलमूल सगुन भए नाना ॥ ४ ॥

दोहा

सुर प्रसून बरषहि हरषि करहिं अपछरा गान।  
 चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान ॥ ३३९ ॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे। सादर सकल मागने टेरे ॥  
 भूषन बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढे सब कीन्हे ॥ १ ॥  
 बार बार बिरिदावलि भाषी। फिरे सकल रामहि उर राखी ॥  
 बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनकु प्रेमबस फिरै न चहहीं ॥ २ ॥  
 पुनि कह भूपति बचन सुहाए। फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए ॥  
 राउ बहोरि उत्तरि भए ठाढे। प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढे ॥ ३ ॥  
 तब बिदेह बोले कर जोरी। बचन सनेह सुधाँ जनु बोरी ॥  
 करौ कवन बिधि बिनय बनाई। महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई ॥ ४ ॥

## दोहा

कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति।  
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदयँ समाति ॥ ३४० ॥

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा। आसिरबादु सबहि सन पावा ॥  
सादर पुनि भैंटे जामाता। रूप सील गुन निधि सब भाता ॥ १ ॥  
जोरि पंकरुह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेम जनु जाए ॥  
राम करौ केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा ॥ २ ॥  
करहिं जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता महु त्यागी ॥  
ब्यापकु ब्रह्मु अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी ॥ ३ ॥  
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥  
महिमा निगमु नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई ॥ ४ ॥

## दोहा

नयन बिषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख मूल।  
सबइ लाभु जग जीव कहँ भएँ ईसु अनुकुल ॥ ३४१ ॥

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बडाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥  
होहिं सहस दस सारद सेषा। करहिं कलप कोटिक भरि लेखा ॥ १ ॥  
मोर भाग्य राउर गुन गाथा। कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥  
मै कछु कहँ एक बल मोरें। तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥ २ ॥  
बार बार मागँ कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें ॥  
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरनकाम रामु परितोषे ॥ ३ ॥  
करि बर बिनय ससुर सनमाने। पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥  
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेमु पुनि आसिष दीन्ही ॥ ४ ॥

## दोहा

मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस।  
भए परस्पर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस ॥ ३४२ ॥

बार बार करि बिनय बड़ाई। रघुपति चले संग सब भाई ॥  
 जनक गहे कौंसिक पद जाई। चरन रेनु सिर नयनन्ह लाई ॥ १ ॥  
 सुनु मुनीस बर दरसन तोरें। अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें ॥  
 जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥ २ ॥  
 सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी। सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥  
 कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई। फिरे महीसु आसिषा पाई ॥ ३ ॥  
 चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥  
 रामहि निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी ॥ ४ ॥

दोहा

बीच बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुख देत।  
 अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत ॥ ३४३ ॥

हने निसान पनव बर बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे ॥  
 झाँझि बिरव डिंडमीं सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ॥ १ ॥  
 पुर जन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥  
 निज निज सुंदर सदन सँवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥ २ ॥  
 गलीं सकल अरगजाँ सिंचाई। जहँ तहँ चौकें चारु पुराई ॥  
 बना बजारु न जाइ बखाना। तोरन केतु पताक बिताना ॥ ३ ॥  
 सफल पूगफल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदंब तमाला ॥  
 लगे सुभग तरु परसत धरनी। मनिमय आलबाल कल करनी ॥ ४ ॥

दोहा

बिबिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि।  
 सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥ ३४४ ॥

भूप भवन तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मनु मोहा ॥  
 मंगल सगुन मनोहरताई। रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥ १ ॥  
 जनु उछाह सब सहज सुहाए। तनु धरि धरि दसरथ दसरथ गृहँ छाए ॥  
 देखन हेतु राम बैदेही। कहहु लालसा होहि न केही ॥ २ ॥

जुथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि। निज छबि निदरहिं मदन बिलासनि ॥  
 सकल सुमंगल सजें आरती। गावहिं जनु बहु बेष भारती ॥ ३ ॥  
 भूपति भवन कोलाहलु होई। जाइ न बरनि समठ सुखु सोई ॥  
 कौसल्यादि राम महतारीं। प्रेम बिबस तन दसा बिसारीं ॥ ४ ॥

दोहा

दिए दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेस पुरारी।  
 प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥ ३४५ ॥

मोद प्रमोद बिबस सब माता। चलहिं न चरन सिथिल भए गाता ॥  
 राम दरस हित अति अनुरागीं। परिछनि साजु सजन सब लागीं ॥ १ ॥  
 बिबिध बिधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्राँ साजे ॥  
 हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मंगल मूला ॥ २ ॥  
 अच्छत अंकुर लोचन लाजा। मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा ॥  
 छुहे पुरट घट सहज सुहाए। मदन सकुन जनु नीड़ बनाए ॥ ३ ॥  
 सगुन सुगंध न जाहिं बखानी। मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥  
 रचीं आरतीं बहुत बिधाना। मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥ ४ ॥

दोहा

कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिएँ मात।  
 चलीं मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात ॥ ३४६ ॥

धूप धूम नभु मेचक भयऊ। सावन घन घमंडु जनु ठयऊ ॥  
 सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं ॥ १ ॥  
 मंजुल मनिमय बंदनिवारे। मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे ॥  
 प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि ॥ २ ॥  
 दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा। जाचक चातक दादुर मोरा ॥  
 सुर सुगन्ध सुचि बरषहिं बारी। सुखी सकल ससि पुर नर नारी ॥ ३ ॥  
 समठ जानी गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा ॥  
 सुमिरि संभु गिरजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा ॥ ४ ॥

दोहा

होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुंदुर्भी बजाइ।  
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ ३४७ ॥

मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिं जसु तिहु लोक उजागर ॥  
जय धुनि बिमल बेद बर बानी। दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी ॥ १ ॥  
बिपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥  
बने बराती बरनि न जाहीं। महा मुदित मन सुख न समाहीं ॥ २ ॥  
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भए सुखारे ॥  
करहिं निछावरि मनिगन चीरा। बारि बिलोचन पुलक सरीरा ॥ ३ ॥  
आरति करहिं मुदित पुर नारी। हरषहिं निरखि कुँअर बर चारी ॥  
सिबिका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥ ४ ॥

दोहा

एहि बिधि सबही देत सुखु आए राजदुआर।  
मुदित मातु परुछनि करहिं बधुन्ह समेत कुमार ॥ ३४८ ॥

करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा ॥  
भूषन मनि पट नाना जाती ॥ करही निछावरि अगनित भाँती ॥ १ ॥  
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी ॥  
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी ॥ मुदित सफल जग जीवन लेखी ॥ २ ॥  
सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही। गान करहिं निज सुकृत सराही ॥  
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥ ३ ॥  
देखि मनोहर चारिउ जोरीं। सारद उपमा सकल ढँढोरीं ॥  
देत न बनहिं निपट लघु लागी। एकटक रहीं रूप अनुरागीं ॥ ४ ॥

दोहा

निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत।  
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥ ३४९ ॥

चारि सिंघासन सहज सुहाए। जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥  
 तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे। सादर पाय पुनित पखारे ॥ १ ॥  
 धूप दीप नैबेद बेद बिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि ॥  
 बारहिं बार आरती करहीं। व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥ २ ॥  
 बस्तु अनेक निछावर होहीं। भरिं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥  
 पावा परम तत्व जनु जोगीं। अमृत लहेउ जनु संतत रोगीं ॥ ३ ॥  
 जनम रंक जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभु सुहावा ॥  
 मूक बदन जनु सारद छाई। मानहुँ समर सूर जय पाई ॥ ४ ॥

### दोहा

एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु ॥  
 भाइन्ह सहित बिआहि घर आए रघुकुलचंदु ॥ ३५०(क) ॥

लोक रीत जननी करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं।  
 मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ रामु मनहिं मुसकाहिं ॥ ३५०(ख) ॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी। पूर्जी सकल बासना जी की ॥  
 सबहिं बंदि मागहिं बरदाना। भाइन्ह सहित राम कल्याना ॥ १ ॥  
 अंतरहित सुर आसिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेंहीं ॥  
 भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥ २ ॥  
 आयसु पाइ राखि उर रामहि। मुदित गए सब निज निज धामहि ॥  
 पुर नर नारि सकल पहिराए। घर घर बाजन लगे बधाए ॥ ३ ॥  
 जाचक जन जाचहि जोड़ जोड़। प्रमुदित राउ देहिं सोड़ सोड़ ॥  
 सेवक सकल बजनिआ नाना। पूरन किए दान सनमाना ॥ ४ ॥

### दोहा

देंहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ।  
 तब गुर भूसुर सहित गृहँ गवनु कीन्ह नरनाथ ॥ ३५१ ॥



जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्ही। लोक बेद बिधि सादर कीन्ही ॥  
 भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥ १ ॥  
 पाय पखारि सकल अन्हवाए। पूजि भली बिधि भूप जेवाँए ॥  
 आदर दान प्रेम परिपोषे। देत असीस चले मन तोषे ॥ २ ॥  
 बहु बिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा। नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥  
 कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी। रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी ॥ ३ ॥  
 भीतर भवन दीन्ह बर बासु। मन जोगवत रह नृप रनिवासु ॥  
 पूजे गुर पद कमल बहोरी। कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी ॥ ४ ॥

दोहा

बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु।  
 पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीसु ॥ ३५२ ॥

बिनय कीन्हि उर अति अनुरागें। सुत संपदा राखि सब आगें ॥  
 नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा। आसिरबादु बहुत बिधि दीन्हा ॥ १ ॥  
 उर धरि रामहि सीय समेता। हरषि कीन्ह गुर गवनु निकेता ॥  
 बिप्रबधू सब भूप बोलाई। चैल चारु भूषन पहिराई ॥ २ ॥  
 बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं। रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं ॥  
 नेगी नेग जोग सब लेहीं। रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥ ३ ॥  
 प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भाँति सनमाने ॥  
 देव देखि रघुबीर बिबाहू। बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥ ४ ॥

दोहा

चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ।  
 कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयँ समाइ ॥ ३५३ ॥

सब बिधि सबहि समदि नरनाहू। रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू ॥  
 जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे। सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥ १ ॥  
 लिए गोद करि मोद समेता। को कहि सकइ भयउ सुखु जेता ॥  
 बधू सप्रेम गोद बैठारीं। बार बार हियँ हरषि दुलारीं ॥ २ ॥

देखि समाजु मुदित रनिवासू। सब कें उर अनंद कियो बासू ॥  
 कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाहू। सुनि हरषु होत सब काहू ॥ ३ ॥  
 जनक राज गुन सीलु बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥  
 बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी। रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥ ४ ॥

दोहा

सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुर ग्याति।  
 भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पंच गइ राति ॥ ३५४ ॥

मंगलगान करहिं बर भामिनि। भै सुखमूल मनोहर जामिनि ॥  
 अँचइ पान सब काहूँ पाए। स्रग सुगंध भूषित छबि छाए ॥ १ ॥  
 रामहि देखि रजायसु पाई। निज निज भवन चले सिर नाई ॥  
 प्रेम प्रमोद बिनोदु बढाई। समउ समाजु मनोहरताई ॥ २ ॥  
 कहि न सकहि सत सारद सेसू। बेद बिरंचि महेस गनेसू ॥  
 सो मै कहौं कवन बिधि बरनी। भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी ॥ ३ ॥  
 नृप सब भाँति सबहि सनमानी। कहि मृदु बचन बोलाई रानी ॥  
 बधू लरिकनीं पर घर आईं। राखेहु नयन पलक की नाई ॥ ४ ॥

दोहा

लरिका श्रमित उनीद बस सयन करावहु जाइ।  
 अस कहि गे बिश्रामगृहँ राम चरन चितु लाइ ॥ ३५५ ॥

भूप बचन सुनि सहज सुहाए। जरित कनक मनि पलँग डसाए ॥  
 सुभग सुरभि पय फेन समाना। कोमल कलित सुपेतीं नाना ॥ १ ॥  
 उपबरहन बर बरनि न जाहीं। स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥  
 रतनदीप सुठि चारु चँदोवा। कहत न बनइ जान जेहिं जोवा ॥ २ ॥  
 सेज रुचिर रचि रामु उठाए। प्रेम समेत पलँग पौढाए ॥  
 अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही। निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥३॥  
 देखि स्याम मृदु मंजुल गाता। कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥  
 मारग जात भयावनि भारी। केहि बिधि तात ताइका मारी ॥ ४ ॥

## दोहा

घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिं नहिं काहु ॥  
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ॥ ३५६ ॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी। ईस अनेक करवरें टारी ॥  
मख रखवारी करि दुहुँ भाई। गुरु प्रसाद सब बिद्या पाई ॥ १ ॥  
मुनितय तरी लगत पग धूरी। कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥  
कमठ पीठि पबि कूट कठोरा। नृप समाज महुँ सिव धनु तोरा ॥ २ ॥  
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई। आए भवन ब्याहि सब भाई ॥  
सकल अमानुष करम तुम्हारे। केवल कौंसिक कृपाँ सुधारे ॥ ३ ॥  
आजु सुफल जग जनमु हमारा। देखि तात बिधुबदन तुम्हारा ॥  
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखें। ते बिरंचि जनि पारहिं लेखें ॥ ४ ॥

## दोहा

राम प्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बर बैन।  
सुमिरि संभु गुर बिप्र पद किए नीदबस नैन ॥ ३५७ ॥

नीदउँ बदन सोह सुठि लोना। मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥  
घर घर करहिं जागरन नारीं। देहिं परसपर मंगल गारीं ॥ १ ॥  
पुरी बिराजति राजति रजनी। रानीं कहहिं बिलोकहु सजनी ॥  
सुंदर बधुन्ह सासु लै सोई। फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥ २ ॥  
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुनचूड बर बोलन लागे ॥  
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए। पुरजन द्वार जोहारन आए ॥ ३ ॥  
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता। पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥  
जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे ॥ ४ ॥

## दोहा

कीन्ह सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ।  
प्रातक्रिया करि तात पहिं आए चारिउ भाइ ॥ ३५८ ॥

## नवान्हपारायण, तीसरा विश्राम

भूप बिलोकि लिए उर लाई। बैठे हरषि रजायसु पाई ॥  
 देखि रामु सब सभा जुडानी। लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥ १ ॥  
 पुनि बसिष्ट मुनि कौसिक आए। सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए ॥  
 सुतन्ह समेत पूजि पद लागे। निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥ २ ॥  
 कहहिं बसिष्ट धरम इतिहासा। सुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥  
 मुनि मन अगम गाधिसुत करनी। मुदित बसिष्ट बिपुल बिधि बरनी ॥३ ॥  
 बोले बामदेउ सब साँची। कीरति कलित लोक तिहुँ माची ॥  
 सुनि आनंदु भयउ सब काहू। राम लखन उर अधिक उछाहू ॥ ४ ॥

## दोहा

मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस एहि भाँति।  
 उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥ ३५९ ॥

सुदिन सोधि कल कंकन छौरे। मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥  
 नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं। अवध जन्म जाचहिं बिधि पाहीं ॥ १ ॥  
 बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं। राम सप्रेम बिनय बस रहहीं ॥  
 दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महामुनिराऊ ॥ २ ॥  
 मागत बिदा राउ अनुरागे। सुतन्ह समेत ठाढ भे आगे ॥  
 नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥ ३ ॥  
 करब सदा लरिकनः पर छोहू। दरसन देत रहब मुनि मोहू ॥  
 अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी ॥ ४ ॥  
 दीन्ह असीस बिप्र बहु भाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥  
 रामु सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥ ५ ॥

## दोहा

राम रूपु भूपति भगति ब्याहु उछाहु अनंदु।  
 जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंदु ॥ ३६० ॥

बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥  
 सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन राऊ। बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥ १ ॥  
 बहुरे लोग रजायसु भयऊ। सुतन्ह समेत नृपति गृहँ गयऊ ॥  
 जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा। सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥ २ ॥  
 आए ब्याहि रामु घर जब तें। बसइ अनंद अवध सब तब तें ॥  
 प्रभु बिबाहँ जस भयउ उछाहू। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ॥ ३ ॥  
 कबिकुल जीवनु पावन जानी ॥ राम सीय जसु मंगल खानी ॥  
 तेहि ते में कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी ॥ ४ ॥

छंद

निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो।  
 रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कबि कौनें लह्यो ॥  
 उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।  
 बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुखु पावहीं ॥

सोरठा

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।  
 तिन्ह कहँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥ ३६१ ॥

मासपारायण, बारहवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने  
 प्रथमः सोपानः समाप्तः। (बालकाण्ड समाप्त)